Bi - Monthly - Chetna July - August 2021 Year 24, Volume **91**

चेतना हिन्दी सामाजिक मसीही पत्रिका

सन 1999 से

'और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं;
क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम
नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें.'
- प्रेरितों के काम 4:12

संस्थापक - शरोवन

हिन्दी पत्रिका चेतना, चर्च कंपाउंड शिकोहाबाद, उत्तर-प्रदेश, भारत

सरस - सरल - सजग

VERY IMPORTANT MESSAGE

This is a general notice to everyone and the readers of 'Chetna' Hindi/English Christian Magazine that all the themes of the stories, novels, songs and cartoons of 'Chetna' Hindi/English Christian magazine are strictly fictional. If any story or theme resembles any person, living or deceased, or any events in any person's life, it is all coincidental. The publisher, editor, assistant editor, artist, printer, and authors will not be held responsible if this occurs. 'Chetna' is an English/Hindi Christian Magazine which is distributed to the believers and seekers of Jesus Christ. There is no subscription necessary.Membership fee is free on line only. However, all its expenses regarding printing, editing etc. come from donations. If you think that 'Chetna' is able to *give you a true direction and a real picture of Christianity, publisher: Church compound Shikohabad, U.P. India For Indian subscribers to send your membership, please conta*ct our distribution center at the fax number and address given below. No subscription needed for authors/writers and readers. Chetna Hindi Partrika is an nonprofit domestic corporation for spreading the Gospel of our Lord Jesus Christ.

ANY IMAGE, PHOTOGRAPH AND CONTENT OF THIS MAGAZINE IS SUBJECT YO COPYRIGHT

-Editor in Chief

© chetnamagazine.com

Registration NO. TX 5-763-790, Library of Congress
Copyright Office, Washington, USA

No article, story, photo, or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission of publisher.

चेतना हिन्दी मसीही पत्र प्रकाशन के किसी भी क्षेत्र में किसी भी धर्म की आलोचनाएँ प्रकाशित नहीं की जाती हैं। इसके अतिरिक्त शराब, तम्बाकू, धूम्रपान, जुआघर, भ्रामक भविष्यवाणियों तथा नाचघरों के विज्ञापन भी प्रकाशित नहीं किये जाते हैं। सभी तरह के वाद-विवाद के न्यायालय का क्षेत्र भारत के राज्य उत्तर-प्रदेश का शहर शिकोहाबाद ही होगा। रचनाओं के स्वीकृति/अस्वीकृति के निर्णय में संपादक का निर्णय ही सर्वमान्य होगा। तौभी लेखकों की रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।

SUBSCRIPTION - FREE
ON LINE ONLY.
website- www.chetnamagazine.com

आइये हम प्रार्थना करें

हे, सर्वशक्तिमान, दया के सागर, करुणामय परमेश्वर हम बड़ी ही नम्रता व दीनता के साथ आप के सिंहासन के नजदीक आते हैं. आपको धन्यवाद देते हैं कि आपका अनुग्रह व दया अब तक हम सभी पर बनी हुई है. कोरोना महामारी के समय में आपने हम सभी को सुरक्षित रखा है इसके लिए हम आपका धन्यवाद देते हैं. साथ ही आपके द्वारा दी गई सभी आशीषों के लिए हम धन्यवादित हैं. आपने फिर एक बार होने दिया कि हम 'चेतना' हिन्दी मसीही सामाजिक पत्रिका का यह अंक निकाल पा रहे हैं. जहां-जहां तक यह पत्रिका लोगों तक पहुंचती है, प्रभु आपसे प्रार्थना करते हैं कि, वर्तमान के समाज में पढ़ने की जागरुकता फैल सके. जो भी जन इस पत्रिका को पढ़ते हैं, वे आपके प्रेम को भली-भांति समझ सकें कि, आपने लोगों की ख़ातिर कलवरी क्रूस पर अपनी जान दी और यह जानकर इस संसार में रहते हुए एक दूसरे को प्रेम कर सकें, ताकि इस समाज में आपसी प्रेम व भाईचारा बढ़ सके. प्रभु, हम उन लोगों के लिए प्रार्थना करते हैं जिनकी नौकरियां इस कोरोना महामारी के कारण चली गईं, जिनके कारोबार रुक गये, जिनके घरों में खाने के लिए भोजन नहीं है. प्रभु ऐसे लोगों की सहायता करें. प्रभु हम उन जवानों के लिए भी प्रार्थना करते हैं, जो रोजगार पाने के लिए दिन-रात मेहनत कर रहे हैं. उनको रोजगार मिल सके. जिनके पास रहने के लिए घर नहीं हैं, उन्हें रहने का स्थान मिल सके. जो बीमार हैं, अस्पतालों में हैं, उन्हें चंगाई मिल सके. बुजुर्गों के लिए प्रार्थना करते हैं कि उन्हें बल मिले. प्रभु, हम भारत वर्ष व अन्य देशों के आपसी संबंधों के लिए प्रार्थना करते हैं कि, यह देश और अन्य देश एक-दूसरे के साथ मिलकर कार्य कर सकें, ताकि वह आपसी संबंध मजबूत हो सकें, जो कि आम जनता के हित में हों.

प्रभु, हम विश्वास करते हैं कि, आपने हमारी प्रार्थना को सुना है. यह विनती और प्रार्थना आपके एकलौते बेटे प्रभु यीशु मसीह के नाम से मांगते हैं, आमीन.

चेतना ™
संस्थापक - शरोवन
Chetna
हिन्दी पत्रिका चेतना, चर्च कंपाउंड शिकोहाबाद, उत्तर-प्रदेश, भारत

कहानी विधा

कब्रिस्थान 13
मृत्यु की वादी- गवाही 29
युक्लिपटुस 39
सफेदपोश लोग 71
शालीमार 77
मेरी अर्थी तेरे फूल 95

लेख

यीशु नासरी 24
एलीशा 64
नबी एलिय्याह 88

कविताएँ

उस पार 11, ये घर 23
एक सवेरा 27
दिलों का टूटना 28, तराजू 28
दोहे 52, 65, 75, 103
मां से ही 61, हंसी 65, ऊख 70, ये दिल 76
आसमां से 76, जोंक 85

स्तंभ

आइये हम प्रार्थना करें 3, चेतन्यधारा 6
मार्गदर्शन 12 बाइबल की स्त्रियाँ 62, बाल-ज्ञान 86
बाइबल की जानकारियाँ 53, कहानी विधा 93
बाइबल, इसमें क्या है 21 तब और अब 66
भक्ति-भाव 89

इस अंक के छाया चित्र: मनु, अक्कू, शालिनी मसीह, स्नेहा खलखो, एंजीलीटा विक्टर, ए. जेकब, जसवंती, करुणा, विधि पॉल.

मुख्य पृष्ठ -अंजीर का पेड़: चेतना फोटोग्राफर.

भावभीनी श्रद्धांजलि

स्वर्गीय मेनन मिंज

चेतना हिन्दी पत्रिका की उत्कृष्ट लेखिका कुमारी शालिनी मिंज के पिता 27 अप्रैल, 2021 को परमेश्वर की बाहों में सो गये हैं. उनका जन्म 5 सितम्बर 1960 में हुआ. 22 वर्ष की उम्र से उन्होंने अपनी बैंकिंग सेवा की शुरुआत की. 1985 में वैवाहिक जीवन में प्रवेश करके अपने परिवार की हर ज़िम्मेदारी पूरी करते रहे. वे शुरू से ही शांत एवं गंभीर स्वभाव के थे. उन्होंने जीवनभर व्यर्थ की बातों, व्यर्थ के कामों और झूठ से अपनी दूरी बनाए रखी. जीवनभर उन्होंने अपने हर काम और हर परिस्थिति में पिता परमेश्वर को ऊपर रखा. वे हमेशा परमेश्वर के प्रेम में बने रहे साथ ही उनके प्रेम से भरे रहे. अपने परिवार, रिश्तेदार एवं कार्यस्थल में अन्यजातियों के बीच भी अपने स्वभाव एवं कार्यों के द्वारा वे हमेशा पिता परमेश्वर को महिमा दिलाते रहे. वे हमेशा यही सिखाते रहे कि हम दूसरों पर दोषारोपण करनेवाले नहीं पर क्षमा करनेवाले बनें, दूसरों को जाँचने के बदले हम स्वयं को जाँचें एवं आपस के प्रेम और परमेश्वर के प्रेम में बने रहें, हम वचन पर चलकर अपने स्वर्गीय पिता को महिमा दिलानेवाले बनें. 30 सितम्बर 2020 को वे अपनी 38 वर्ष की बैंकिंग सेवा से सेवानिवृत्त हुए. पिता परमेश्वर के अनुग्रह से वे एक सच्चा मसीही जीवन जीते रहे। परिवार के प्रति उन्होंने सभी शारीरिक एवं आत्मिक ज़िम्मेदारी को पूरी की साथ ही अपनी दौड़ को पूरी करके 27 अप्रैल 2021 को प्रभु यीशु मसीह में सो गए. प्रभु यीशु ने कहा, 'इसलिए कि मैं जीवित हूँ, तुम भी जीवित रहोगे.' हम विश्वास करते हैं कि वे प्रभु यीशु मसीह में जीवित हैं एवं अनंत जीवन में प्रवेश कर चुके हैं. निश्चय ही हम उनसे फिर मिलेंगे और प्रभु के घर में हमेशा साथ रहेंगे. सम्पूर्ण चेतना परिवार शोकित परिवार के प्रति अपनी हार्दिक संवेदनाएं अर्पित करता है.

शोकित मिंज परिवार- शालिनी, श्रीमती मेनका, सोनाली

चेतन्यधारा

सम्पादकीय

झूठ का बोलवाला

ऐसा लगने लगा है कि, जब से यू-ट्यूब का जमाना आया है तब से कम-से-कम भारत में न्यूज चेनलों ने तो जैसे बे-धड़क झूठ बोलने की कसमें खा रखी है. कोई भी ज़रा सी नई घटना हो, पहले गोदी मीडीया और अब सोशल मीडीया में यह बीमारी ज़ोर पकड़कर मजबूत हो गई है कि, अपने व्यूज बढ़ाने के लिए, सब्स्क्रिप्शन लेने के लिए, लाल घंटी का बटन जरुर दबा दें. इससे कोई मतलब नहीं है कि, जनता अब झूठी न्यूज के नाम पर; 'चायना ने गलवान घाटी में घुटने टेक दिए', 'अमरीका के लम्बी मार के रोकेटो से चीन घबरा गया,' 'भारत के रौफेल्स ने फिलिस्तीन पर दागे बम्ब,' 'फिलिस्तीन ने इस्राएल को ध्वस्त कर दिया,' 'रज़ा ग्राफी,' और 'योगी ने दिया इस्तीफा,' 'राजनाथ सिंह बने नये उत्तर-प्रदेश के मुख्य मंत्री,' इस प्रकार के शीर्षकों से आज का सोशल मीडीया भरा रहता है. इतना ही नहीं, इन खबरों में शीर्षक कुछ कहते हैं और खबरों के नाम पर वही घिसी-पिटी बातें जिन्हें आप कई-कई बार सुन चुके होते हैं. सोशल मीडीया के चेनलों द्वारा उपरोक्त भ्रम में डालने वाली ऐसी खबरों का मात्र उद्देश्य यही रहता है कि, किसी भी प्रकार आप उनकी खबरों को क्लिक करें और उनके व्यूज़ बढ़ाएं ताकि ये चेनल यूट्यूब से पैसा ले सकें. आजकल सोशल मीडीया के इन चेनलों में एक बात और देखने को मिल रही है, इन्हें अपने देश में क्या-कुछ हो रहा होता है, इस बात की ज़राभी चिंता नहीं होती है, लेकिन ये आपको जरुर बतायेंगे कि, अमरीका में गरीब कितने है, लोग भीख कैसे मांगते हैं, पाकिस्तान में कोरोना के कितने मरीज़ मर गये, म्यामार में सेना ने कितने परिवारों को घर से बेदखल कर दिया . . .आदि. कहने का आशय है कि, इन चेनलों को अपने सब्स्क्राइब्स बढ़ाने है, इससे कोई मतलब नहीं है कि, इसके लिए चाहे झूठ बोलना पड़े, और चाहे हजार बार बोलना पड़े. अगर आपको इस प्रकार की झूठी और भ्रमित करनेवाली खबरों से बचना है तो बेहतर होगा कि, ऐसे चेनलों को खोलें ही नहीं.

कितने प्रेरित, कितने प्रोफेट?

जब से यीशु मसीह का स्वर्गारोहण हुआ है तब से, हम और आप एक बात सेवा के नाम पे सुनाये जानेवाले सरमनों, प्रवचनों, सुसमाचार के प्रचारों में और

सोशल मीडीया पर स्वयंमभू जैसे प्रेरितों, प्रोफेट्स और अन्य-अन्य भाषाओं के नाम पर ना जाने क्या बोलनेवालों के द्वारा अवश्य ही और आज तक सुनते आये है कि, 'यीशु मसीह का आगमन बहुत जल्दी है.' ; कोई मतलब नहीं है कि, बोलने वालों को ऐसा कितनी बार बोलना है, बार-बार बोलना है? इन्हें मतलब नहीं है कि, कभी भी इस बात को स्पष्ट करें कि, मती की इंजील और उसके अध्याय 24 और उसके 14 वें पद में क्या लिखा है?

'14और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार* किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा.'

मत्ती रचित सुसमाचार के उपरोक्त पद में स्पष्ट लिखा है कि, जब तक सुसमाचार का प्रचार सारे जगत में नहीं हो जाएगा; अर्थात, जब तक हरेक जब यीशु मसीह के सुसमाचार के बारे में नहीं जान जाएगा, तब तक अंत नहीं होगा. जब तक यह सुसमाचार हरेक मनुष्य तक नहीं पहुंच जाएगा, और यह गवाही न हो, तब तक इस दुनिया का अंत नहीं होगा. लेकिन हां, हमें यीशु मसीह के द्वतीय आगमन के लिए इसलिए तैयार रहना है ताकि हमारी कोई भी हानि न हो. यही उपरोक्त पद का भी आशय है कि, परमेश्वर सबको यीशु मसीह के नाम से बचाने के लिए उनका सुसमाचार एक गवाही के रूप में पहले देगा, और जब ऐसा हो जाएगा, तब ही संसार का अंत होगा.

उपरोक्त प्रचारकों, प्रोफेट्स और मसीह के नाम पर अपना प्रवचन देने और दुनिया के अंत की बात पर यह कहना कि, जाति पर जाति, राज्य पर राज्य चढ़ाई करेंगे, महामारियां होंगी, मूर्ति-पूजक होंगे, आदि,; तो क्या यह सारी बातें, घटनाएँ क्या यीशु मसीह के समय पर नहीं होती थीं? आज जो कोरोना महामारी की बात होती है, क्या ऐसीही महामारी आज से सौ साल पहले जब आज के सामान्य फ्ल्यू की महामारी आई थी, ऐसे ही हालात तब नहीं थे क्या? सही बात तो है कि हम सबको राज्य के सुसमाचार का प्रचार का सही अर्थ और उन पीड़ाओं, बीमारियों के बारे का सही अर्थ जानने की आवश्यकता है. यीशु मसीह ने संसार के अंत के बारे में जिन पीड़ाओं और महामारियों और कष्टों का वर्णन किया है, उसकी तो कल्पना ही मनुष्य नहीं कर सकता है. मेरे ख्याल से वह पीड़ाएं और महामारियां बिलकुल आज संसार की बीमारियों से बिलकुल ही भिन्न होंगी. ऐसी भिन्न कि, मनुष्य उनका इलाज ढूंढ ही नहीं पायेगा, पीड़ाएं और कष्ट झेल ही नहीं पायेगा. बाइबल में परमेश्वर ने जब भी आपदाएं भेजीं, उनका मुख्य कारण, मनुष्यों का परमेश्वर की तरफ से मुख फेर लेना ही था. आज भी

आप चाहे भारत हो अथवा कोई भी मुल्क, ऐसी कौन से जगह नहीं हैं, जहां पर मसीही विरोधी तत्व सक्रीय नहीं हो रहे हैं?

सुसमाचार हमारे लिए एक बहुत बड़ी प्रसन्नता की बात तो है ही, साथ ही एक व्यवस्था भी है. पुराने नियम में व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर ने मूसा के जरिये अपनी कौम को उनके मार्गदर्शन के लिए क़ानून और नियम दिए. पुराने नियम में उत्पत्ति की किताब से लेकर व्यव्स्थाविवरण तक 613 आज्ञाएँ परमेश्वर ने इस्राएलियों को दीं थीं. (But there are more: From Genesis through Deuteronomy, there are a total of 613 commandments, as counted by medieval sages. **Many** of the 613 are obsolete.Oct 31, 2015)

इस्राएलियों के लिए, ये नियम उनके वर्तमान और भावी जीवन के लिए अच्छी सूचनाएं थीं. इसका सीधा सा मतलब है कि परमेश्वर का सुसमाचार उनको सही राह पर चलने के लिए पहुंचाया गया था. इसका दूसरा मतलब था कि, परमेश्वर ने स्वयं ही उनका नेतृत्व किया था. उनसे उसने यह भी कहा था कि, 'जो मुझसे प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन पर मैं करुणा किया करता हूँ' (व्यवस्थाविवरण 5:10). इसलिए, जब तक कि इस्राएलियों ने यहोवा को सम्मान दिया, उसके कानूनों का पालन किया और वे उसके सुसमाचार से अलग नहीं हुए, वे सदा ही परमेश्वर के द्वारा धनी होते रहे थे. मगर जब वे व्यवस्था से अलग हुए, उसके सुसमाचार को उन्होंने त्यागा, परमेश्वर के सम्मान के स्थान पर उन्होंने जब अन्य देवी-देवताओं को पसंद किया, उनके आगे धूप जलाई, उपासना की, उसके कानूनों को त्याग दिया; उनके पाप-चढ़ावे भी थे, इस्राएलियों इतने अधिक पाप किए थे कि उन्होंने यहोवा की बलि वेदी पर लंगड़ा और कलुषित चढ़ावे भी चढ़ाए. परिणामस्वरूप, तत्पश्चात, भ्रष्ट मनुष्य की जरूरतों और परमेश्वर की प्रबंधन योजना के अनुसार, प्रभु यीशु, मनुष्य के पुत्र को मानव रूप में धरती पर आना पड़ा और उन्होंने अनुग्रह के युग के कार्य में शुरुआत की, जो आज हम सबके लिए प्रभु यीशु का सुसमाचार कहलाता है.

यह बात भी सोचनीय है कि, मसीही लोग यहूदियों और इस्राएलियों का सम्मान करते हैं और उन्हें बाकायदा इज्ज़त देते हैं क्योंकि, इसका मुख्य कारण है कि, हमारे यीशु मसीह, उनकी मां मरियम, सांसारिक पिता यूसुफ़ और उनके चेले, सभी यहूदियों में से आये हैं. लेकिन, क्या कभी गौर किया है कि, यदि आप किसी यहूदी को 'शलोम' बोलें (जैसा कि, यहूदी आपस में एक दूसरे से मिलते हुए कहते हैं- 'शलोम' का अर्थ होता है कि, ' तुम्हें शान्ति मिले.') और

यदि आप यहूदी या इस्राएली नहीं हैं तो वह यहूदी जन आपको उत्तर भी नहीं देगा, क्योंकि, यहूदियों का विश्वास है कि, केवल एक यहूदी ही यहूदी को शान्ति दे सकता है. लेकिन जब यीशु मसीह (शान्ति का राजकुमार) की बात आती है, तो वे अपना मुंह क्यों बिचका लेते हैं? हमारे भारत में लोग अपनी कलीसियाओं और चर्चों का नाम बड़े ही शान से रखते हैं,- 'शलोम चर्च.' आपस में भी कभी-कभी बोल लेते हैं,- 'शलोम'.

कोरोना और उसकी दूसरी लहर

भारत में ख़ास तौर पर कोरोना की दूसरी लहर के संक्रमण ने मानव जाति को एक चुनौती क्या दी कि, इसने हरेक शहर, हरेक राज्य, हरेक गली-कूंचों में तवाही मचाकर रख दी है. इसका जानलेवा आक्रमण इतना सटीक और जानलेवा है कि, भारत सरकार और राज्य सरकारों तक को इसका नियंत्रित करना एक भीषण चुनौती बन गया है. मृतकों की संख्या में लगातार होती बढ़ोतरी ने शासन से लेकर प्रशासन तक की रातों की नींद हराम कर रखी है. अस्पतालों में मरीजों की बढ़ती जनसंख्या ने बिस्तर, वेंटीलेटर, कोरोना की वैक्सीन, इलाज के इंजेक्शन और ऑक्सीजन सहित तमाम अन्य जीवन-रक्षण उपकरणों की मारा-मारी बनी हुई.

एक तरफ श्मशानों में चिताओं के लिए स्थान नहीं हैं, स्थान हैं भी तो उनका दाह-संस्कार करने को, जलाने के लिए लकड़ियां और अन्य सामग्री नहीं है. लोग अपने प्रियजनों को गंगा में बहा रहे हैं. कोई दाह-संस्कार कोरोना के संक्रमण के भय से नहीं कर पा रहा है तो मुस्लिम भाई खुद उनका अंतिम संस्कार उन्हीं की रीति-रिवाज़ से कर रहे हैं. हांलाकि, सरकार के आंकड़े स्थिति पर काबू करते बता रहे है, मगर श्मशानों में और कब्रिस्थानों में आये शवों के आंकड़े सरकार के आंकड़ों को झूठा साबित कर देते हैं. सरकार ने कहने को कोरोना के टीकाकरण का अभियान तो जारी कर दिया है, मगर जमीनी स्तर पर इसकी जो तस्वीर है, उसमें जरुर संदेह है. उसमें भी लोगों के मन में जो धरना बसी हुई है, वह कोरोना के नकली इंजेक्शनों, इनके बुरे साइड इफेक्ट्स और दामों के प्रति है. इस भय से भी लोग टीका नहीं लगवा पा रहे हैं. एक तरफ सरकार कहती है कि, उसने टीकाकरण का अभियान तो जारी कर दिया है मगर इन टीकों का पैसा राज्य सरकारें ही देंगी. इसी कारण टीकाकरण के संदेश में जहां प्रधान मंत्री की तस्वीर लगी होती थी, वहीं पर राज्यों ने अपने मुख्य मंत्रियों की फोटो लगा ली है.

सरकार का कहना है कि, वह कोरोना से लड़ने के लिए उसकी आवश्यक आपूर्ति में जुट चुकी है, मगर फिर भी इसकी कोई राहत नज़र नहीं आ रही है. सरकार ने लॉक-डाउन, लगाया, कर्फ्यू लगाया. पिछले साल स्कूल और कॉलेज बंद किये थे, इस वर्ष भी बंद किये हुए हैं. आवश्यक सेवाओं को छोड़कर सभी व्यापारिक और व्यवसायिक तन्त्र बंद हैं. लोगों के पास ना काम है और ना ही रोज़गार. युवा घर पर बैठे है, सारे देश में जैसे अफरा-तफरी का माहोल है. आम नागरिक नहीं समझ पा रहा है कि, वह कोरोना से बचे या फिर परिवार के लिए दो वक्त की रोटी का इंतजाम करे?

इस खतरनाक महामारी के इस विषम दौर में, लोगों ने अपनों को खोया, नादान, दूध पीते और भोले शिशु अपनी माओं से बिछुड़ गये, किसी परिवार में एक ही कमाने वाला था, उसे खो दिया, किसी ने अपना बेटा, भाई और पिता को खो दिया, किसी ने अपनी बहन, माता और दोस्त को खो दिया है. ऐसा नहीं है कि, संकट के इस समय में किसी ने साथ नहीं दिया है. कष्टों और दुःख-दर्द से परेशान लोगों को मदद देने के लिए बहुत सारे हाथ सामने आये और उन्होंने सम्भाला भी, मगर जब प्राकृतिक आपदा पर जब कोई वश इंसान का न चले तो सब कुछ परमेश्वर पर ही छोड़ देना चाहिए. ईसाइयों ने अपने चर्च दुआओं के लिए खोल दिए तो दूसरी तरफ मन्दिर, मस्जिद गुरुद्वारे भी इस धार्मिक कार्य में पीछे नहीं रहे है. ईश्वर के सामने अपनी परेशानियां रखने के लिए सच्चा, दुखी और पश्चातापी मन होना चाहिए. हमारा ईश्वर, हमारा खुदा, हमारा परमेश्वर और ऊपरवाला एक न्यायी और मानव जाति से बे-हद प्यार करनेवाला परमेश्वर है. उसके पास सच्चे मन और पश्चातापी दिल से आओगे तो वह जरुर सुनेगा.

परमेश्वर से प्रार्थना करने के लिए, उससे अपनी परेशानियां कहने के लिए, आपको कहीं भी विशेष स्थान में जाने की आवश्यकता नहीं है. आप जहां भी हैं, कहीं भी किसी भी देश में ही क्यों न हों, चाहे आप किसी भी परिस्थिति में हों, उसी जगह पर, अपने सच्चे दिल से कोरोना जैसी महामारी के प्रकोप में जकड़े हुए मरीजों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं. प्रार्थना करने में, ईश्वर का नाम लेने में कोई भी बुराई नहीं है. आप दो मिनट के लिए दिवंगतों की आत्मा की शान्ति के लिए, उनके परिवारों को यह दुःख सहने के लिए शक्ति और सारे परिवार की शान्ति के लिए, प्रार्थना कर सकते हैं. मसीहियों का तो विश्वास ही प्रार्थना है. प्रार्थना में बहुत शक्ति होती है.

आप चाहे किसी भी जाति, समूह, देश, धार्मिक विश्वास, किसी भी सम्प्रदाय और मत के ही क्यों न हों, आपके ईश्वर की अगर आपमें आस्था है तो कोरोना से ग्रस्त अपने-पराये, परिचित-अपरिचित, दोस्त-शत्रु; सबके लिए प्रार्थना जरुर करें. आपको यह जानकार आश्चर्य होगा कि, सर्व-धर्म प्रार्थना के लिए शहरों के प्रशासनिक अधिकारी, जन-प्रतिनिधि, देश के समझदार नागरिक; सभी कोरोनो को भगाने के लिए प्रार्थना करने की अपील कर रहे हैं.

उस पार

सहज विहंगम मादकता है
जाना है उस पार,
मोह में फंसे जीवन से
लड़ कर करना है पार.
द्वंद करो उस पार चलो,
मेहनत का श्रृंगार करो
स्वछन्द विधा है, श्रम करो,
आगे बढ़ उस पार चलो.

पृथक राज्य है उनकी
इस धरती अम्बर में,
है पालन का अधिकार उसे
आओ चलें वहीं उसके आंगन में.
मानवता ही है सर्वोच हथियार,
सीखो वचनों से यही है प्राणाधार
पीड़ित मानव मन का बन श्रृंगार.

स्व का कर अब तिरस्कार
चंचल मन को मोहित न कर,
सुगम अपार चलो उस पार,
वहाँ सब कुछ है प्रिये आभार
आओ मिथक तोड़ने चलें उस पार.

- डा. शैलेंद्र जोसेफ

मार्ग दर्शन

संकलित / आशा शरोवन

सभोपदेशक - अध्याय 1

यरूशलेम के राजा, दाऊद के पुत्र और उपदेशक के वचन।
2 उपदेशक का यह वचन है, कि व्यर्थ ही व्यर्थ, व्यर्थ ही व्यर्थ! सब कुछ व्यर्थ है।
3 उस सब परिश्रम से जिसे मनुष्य धरती पर करता है, उसको क्या लाभ प्राप्त होता है? 4 एक पीढ़ी जाती है, और दूसरी पीढ़ी आती है, परन्तु पृथ्वी सर्वदा बनी रहती है। 5 सूर्य उदय हो कर अस्त भी होता है, और अपने उदय की दिशा को वेग से चला जाता है। 6 वायु दक्खिन की ओर बहती है, और उत्तर की ओर घूमती जाती है; वह घूमती और बहती रहती है, और अपने चक्करों में लौट आती है। 7 सब नदियां समुद्र में जा मिलती हैं, तौभी समुद्र भर नहीं जाता; जिस स्थान से नदियां निकलती हैं; उधर ही को वे फिर जाती हैं। 8 सब बातें परिश्रम से भरी हैं; मनुष्य इसका वर्णन नहीं कर सकता; न तो आंखें देखने से तृप्त होती हैं, और न कान सुनने से भरते हैं। 9 जो कुछ हुआ था, वही फिर होगा, और जो कुछ बन चुका है वही फिर बनाया जाएगा; और सूर्य के नीचे कोई बात नई नहीं है।
10 क्या ऐसी कोई बात है जिसके विषय में लोग कह सकें कि देख यह नई है? यह तो प्राचीन युगों में वर्तमान थी। 11 प्राचीन बातों का कुछ स्मरण नहीं रहा, और होने वाली बातों का भी स्मरण उनके बाद होने वालों को न रहेगा॥
12 मैं उपदेशक यरूशलेम में इस्राएल का राजा था। 13 और मैं ने अपना मन लगाया कि जो कुछ सूर्य के नीचे किया जाता है, उसका भेद बुद्धि से सोच सोचकर मालूम करूं; यह बड़े दु:ख का काम है जो परमेश्वर ने मनुष्यों के लिये ठहराया है कि वे उस में लगें। 14 मैं ने उन सब कामों को देखा जो सूर्य के नीचे किए जाते हैं; देखो वे सब व्यर्थ और मानो वायु को पकड़ना है।
15 जो टेढ़ा है, वह सीधा नहीं हो सकता, और जितनी वस्तुओं में घटी है, वे गिनी नहीं जातीं॥ 16 मैं ने मन में कहा, देख, जितने यरूशलेम में मुझ से पहिले थे, उन सभों से मैं ने बहुत अधिक बुद्धि प्राप्त की है; और मुझ को बहुत बुद्धि और ज्ञान मिल गया है। 17 और मैं ने अपना मन लगाया कि बुद्धि का भेद लूं और बावलेपन और मूर्खता को भी जान लूं। मुझे जान पड़ा कि यह भी वायु को पकड़ना है॥ 18 क्योंकि बहुत बुद्धि के साथ बहुत खेद भी होता है, और जो अपना ज्ञान बढ़ाता है वह अपना दु:ख भी बढ़ाता है॥

पुरस्कृत कहानी
10,000

कब्रिस्थान

कहानी - रेव्ह. डॉ. जुलियस अशोक शॉ

जाने क्यों लोग पानी के बुलबुले जैसी ज़िन्दगी को अपनी हमेशा की कभी भी न समाप्त होनेवाली धरोहर समझने लगते हैं. हकीकत की कठोर चट्टान पर आकर जब सपने अचानक से अपना सिर फोड़ते हैं, तब इंसान की समझ में आता है कि, इंसान के हिस्से में जो वस्तु आती है, वह है केवल छः फीट लम्बी वह काली अंधेरी, मृत्यु-नगरी की वह जगह, जहां पर उसकी आत्मा भी रहना पसंद नहीं करती है.

डायरी लिखना, मेरी पत्नि, सुमिता का शौक था. वह कुछ-न-कुछ रोज़ लिखा करती. मैं, पढ़ना चाहता, तो कहती, 'अशि, किसी की डायरी पढ़ना अच्छी बात नहीं होती.'

एक दावेदार की तरह मैं कहता, 'कैसी बात करती हो? मैं, तुम्हारा पति हूँ. कोई दूसरा नहीं. मेरा तुम पर हक है?'

'देखो, हक-बक की बातें मत किया करो. कम-से-कम मुझ से तो नहीं. पति हो तो क्या हुआ? मुझे भी तो हक है, तुम्हें मना करने का.'

मैं चुप हो गया. नि:शब्द. बात तो ठीक थी. पत्नी का भी पति पर हक होता है. बहुत कुछ कहने का हक. झुर्रियों से भरी सुखी ठठरी-सी अपनी सोच की. वैसे भी दाम्पत्य जीवन का सच्चा सुख पति-पत्नी के अटूट विश्वास में पनपता है, फलता और बढ़ता है, न कि तर्क-वितर्क और एक-दूसरे पर दावा

ठोंकने से. वैसे तो विवाह के साथ पति-पत्नी के बीच ढेर सारी उम्मीदें खुमार बनकर तब तक जीवित रहती हैं, जब तक पति-पत्नी एक-दूसरे की भावनाओं का लिहाज़ करने से थकते नहीं.

वह चुप हो गई. कुछ पल के लिए खामोशी की चादर ओढ़कर हम एक-दूसरे को देखते रहे. कमरे में सन्नाटा छा गया. पर यह सन्नाटा एक ही पल में छंट गया था, जब मैंने सुमिता से कहा, 'सुमी, तुम्हें भी मुझ पर हक है. बराबर का हक. तत्क्षण मैंने देखा कि उसके चेहरे पर एक साथ ढेर सारी खुशियाँ धुंआधार बारिश की तरह बरस गई थीं. खुशियों से तर-बतर होना उसका लाजिमी और अपरिवर्तनीय था. मैं, बस, सुमिता को आत्ममुग्ध होकर देखता रहा. शायद ऐसा ही हक, बराबर का हक और खुशी हर पत्नी चाहती है अपने पति से.

आज सुमिता के न रहने पर तिपाई पर रखी लालटेन-सा अकेलेपन का सन्नाटा पूरे घर के चप्पे-चप्पे में अनवरत रूप से जल रहा था. अस्वाभाविक रूप से कैंसर ने सुमिता को दबोच लिया था और ज़िन्दगी की अठखेलियाँ और खुशनुमा पल धीरे-धीरे हम से कटने लगे. मन के भीतर एकाकीपन के तीखे प्रहार की बौछार से हम दोनों भीगने लगे. सुमिता की ज़िन्दगी की सीढ़ियाँ हर रोज़ घटने लगीं. इस घटने का एहसास रौद्र रूप धारण कर हमारे समक्ष उस दिन खड़ा हो गया, जब एक दिन डॉक्टर अमृता ने मुझसे कहा, 'इन्हें कैंसर है. पूरे शरीर में फैल चुका है. छः-सात महीने से अधिक इनका जीवित रहना मुश्किल है.'

'डॉक्टर, आप झूठ कहती हैं. ऐसा कैसे हो सकता है? न कोई लक्षण, न कोई संकेत.'

'मैं आपकी मनोस्थिति को समझ सकती हूँ. पर मैं क्यों गलत कहूंगी? मैं गलत हो सकती हूँ. पर इनकी ये मेडीकल रिपोर्ट्स नहीं.'

हम दोनों चुप थे. हकीकत के कटु अनुभव ने हमें परास्त कर दिया था. कुछ पल के लिए ज़िन्दगी मुझे, ज़िन्दगी नहीं, मृत्यु का खिलौना लगने लगी, एक ऐसा खिलौना, जिससे मृत्यु हमेशा खेला करती है.

हमारे सन्नाटे में अलौकिक विश्वास का दिव्य प्रकाश प्रज्वलित करते हुए डॉक्टर अमृता ने कहा, 'आप तो पादरी हैं, ईश्वर पर विश्वास करनेवाले व्यक्ति. प्रार्थना करें, छः-सात महीने के बचे-खुचे जीवन में इन्हें कष्ट सहने की ईश्वरीय ताकत मिले.'

हम दोनों डॉक्टर अमृता की क्लीनिक से बाहर आ गये. पहली बार हमें एक-दूसरे से बिछुड़ने का एहसास हुआ था. हम आनेवाले अलगाव को चाहते हुए नज़रंदाज़ नहीं कर सकते थे. यह एक सच था, जिस पर झूठ और अविश्वास की लीपा-पोती नहीं की जा सकती थी. यह वक्त हम दोनों के लिए हमारे जीवन का एक ऐसा वक्त था, जब जीवन को विश्वास के तमाम रंगों से भर देना हमारे लिए जरूरी था. हम दोनों के लिए यही सच था, जीवन का अटूट सच ताकि कॉल और परिवेश की प्रतिछाया हमें हमेशा के लिए दबोच न सके.

सुमिता के कैंसर से पीड़ित होने की खबर बीस-पच्चीस दिन तक लोगों के बीच चर्चा का विषय रहा. जितने मुंह, उतनी ही बातें. उतनी सलाह और परामर्श. कोई कुछ कहता और कोई कुछ. दवाइयां शुरू हुई, शायद एक तसल्ली की शुरुआत? पर डॉक्टर अमृता की ईश्वर से प्रार्थना करने की बात हमें आंतरिक मजबूती देती रही. हम पूरी रीति से जान चुके थे कि ऐसे परिलक्षित काल और परिस्थिति में खुद को ईश्वर के हाथ में समर्पित कर देना ही अमृत है. एक अचूक उपचार.

अपनी मृत्यु से एक महीना पहले सुमिता ने डायरी लिखना बंद कर दिया. हर दिन वह बैठती. मसीही गीत-संग्रह से वह गाती- 'रह मेरे साथ, दिन दहला जाता है; यीशु राह में साथ ले चलता, इससे बढ़कर क्या चाहूँ; यीशु नाथ के प्रेम अपार का, करूंगा मैं स्तुतिगान; तू मेरे दिल का है अज़ीज़, या मसीह, या मसीह, या मसीह; भजता क्यों नहीं रे मन मूरख, यीशु नाम, सच्चा नाम; भेष बदला क्या हुआ, दिल का बदलना चाहिए; करो मोरी, सहाय मसीहा जी, तुम बिन कुछ न सहाय; तुम तो मसीहा मेरी आँखों के तारे, भूलो न मेरी खबरिया जैसे गीत और भजन से नित दिन हमारा घर गूँज उठता. रोज़ बाइबल पढ़ती. दुआ-बन्दगी करती. शायद वह चाहती रही कि हमारे अलगाव का सन्नाटा और पीड़ा दुआ-बन्दगी और इन गीतों से करबट बदल दे. कैंसर को दरकिनार करके पत्थर पर अंगुली से लकीर खींच दे. पर ऐसा तब होता है, जब ईश्वर में रखा गया विश्वास अपने मजबूत एवं रूआबदार हस्तक्षेप से सब कुछ अपने अधिकार में कर ले. मसीही ज़िन्दगी किसी मलबे का ढेर नहीं, बल्कि आत्मविश्वास और धैर्य की ज़िन्दगी है, जिसका खुशनुमा वातावरण कभी मरता नहीं.

सुमिता अक्सर मुझसे कहा करती, 'अशि, मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना करना, कि खुदा बाप तुमसे पहले मुझे अपने घर ले जाए. तुम्हारे न रहने पर मेरी तमाम उम्मीदें टूट जायेंगी. तुम हो तो उम्मीदें हैं. ज़िन्दगी है.'

'सुमी, यह सब कुछ तो ईश्वर के हाथ में है. जीवन और मृत्यु पर कब किसका अधिकार रहा है?ज़िन्दगी तो वह दस्तावेज़ है, जिसे सिर्फ ईश्वर ही बदल सकते हैं.'

'पर, मेरे लिए तो प्रार्थना तो कर ही सकते हों न?क्या नहीं कर सकते हो?'

मैं चुप था. नितांत खामोश. सुमिता के इस सवाल ने मेरे माथे पर की आड़ी-तिरछी रेखाएं खींच डाली थीं. किसी के लिए मौत मांगू और वह भी अपनी पत्नी के लिए. आखिर कैसे करूँ ऐसी प्रार्थना? सुमिता से अपने अलगाव की मांग. मैं बुत सा उसके समक्ष था.

तभी मेरी खामोशी में सेंध मारते हुए सुमिता ने आगे कहा था, 'चुप क्यों हो गये? मुझे पता है कि मेरे बिना तुम्हारे लिए भी ज़िन्दगी पहाड़ बन जायेगी. पर एक विधवा की ज़िन्दगी से अधिक कठिन नहीं.'

'हां ! मुझे सब पता है. पति के न रहने पर पत्नी की ज़िन्दगी घुप्प अंधेरे को चीरती हुई रोशनी कभी बन नहीं सकती. बिघ्न-बाधाओं का समुंदर औरत की विवशता के बीच उसका सब कुछ बहा ले जाता है. विधवा-ज़िन्दगी पर लोगों की नज़र शिकारी कुत्तों की तरह पड़ी रहती है. कब नोच-खसोट लें, पता नहीं. आदमी तब कुत्ता बन जाता है. जब उसे न तो किसी की मां, न तो किसी की बहन का और न ही किसी की बीबी का होश रहता है. ज़िन्दगी मर्यादा का लिबास उतारकर चीख पड़ती है, चिल्लाती है, पर दूर-दूर तक सुनने वाला कोई नहीं होता.'

छः-सात महीने हम दोनों ने कैसे काटे, न वह जान पायी और न ही मैं.हम इस दरम्यान एक-दूसरे को देखते. एक-दूसरे के लिए प्रार्थना किया करते. एक-दूसरे के लिए साहस बटोरने की भरपूर कोशिश किया करते. फिर एक दिन छः महीने के समापन पर सुमिता के शरीर के चप्पे-चप्पे में कैंसर का मिज़ाज बढ़-चढ़ कर बोल उठा. वह दर्द से छटपटाती. कहती, 'देखो न, शरीर के भीतर कुछ चल रहा है. कुछ देर थम जाता है. फिर चल पड़ता है. मैं दर्द के इस खिंचाव को अपने भीतर और सह नहीं सकती. मेरे लिए प्रार्थना कर दो न. अब और जीना नहीं चाहती.'

मैं उसके सिर पर हाथ रखकर कहता, 'हे प्रभु परमेश्वर, अब आप इसे ले जाएँ. इसकी पीड़ा देखी नहीं जाती. आपकी अमानत है. अब इसे मेरे पास गिरवी न रहने दें. आप इसे छुडा लें. इस छटपटाहट से मुक्ति दे दें. मैं तो दिल का रोगी हूँ. कब धड़कन रुक जाए, पता नहीं. मेरे बिना इसकी ज़िन्दगी बंसी में फंसी तड़पती-छटपटाती मछली-सी हो जायेगी.'

तभी मेरे कानों में सुनाई पड़ा था, 'आमीन.'

मैंने भी कह दिया था, 'आमीन.' अर्थात् प्रभु आप ऐसा ही करें.

मेरी आराधनीय प्रार्थना सुनकर सुमिता के चेहरे पर एक अलौकिक आभा कौंध गई. मेरी हथेली अपनी मुट्ठी में कसते हुए उसने इतना भर कहा, 'अशि, तुम बहुत अच्छे हो. जो सुख तुमने मुझे आज दिया है, मैं अपनी मुट्ठी में सदा बांधे रहूंगी. ईश्वर के घर में जब मुट्ठी खुलेगी, तो वहां भी तुम्हारा ही नाम होगा, विवाह के दिन लोगों के समक्ष ईश्वर द्वारा मेरे साथ जोड़ दिया गया तुम्हारा नाम.'

मैंने अनचाहे मन से अपने चेहरे पर मुस्कान बिखेर कर सुमिता को देखा था. उसे कहाँ पता था कि आनेवाले अलगाव का दर्द किसी तपस्वी की तरह समाधि लगाकर मेरे मन के आंगन में उसी दिन बैठ गया था, जब डॉक्टर अमृता ने कैंसर होने की बात कही थी. सुमिता के जीवित रहते-रहते ही अलगाव का विष पान करना मैंने शुरू कर दिया था. पर मेरे लिए आज तक दबे पाँव आती हुई मौत से नित क्षण सुमिता की मुठभेड़ और हमारे बीच धीरे-धीरे अलगाव की पीड़ा का दर्द एक रहस्य बना हुआ है. मृत्यु सामने खड़ी थी. बहुत करीब, हर पल दस्तक देती हुई. मैं आज तक जान नहीं पाया कि इस सत्य के बीच घर-द्वार का छूटना तथा बच्चे और मेरे साथ होनेवाले अलगाव को सुमिता ने कैसे बर्दाश्त किया होगा? मैं निरुत्तर होकर सुमिता को देखता. मन में कई प्रश्न उठते और मैं अपनी निरुत्तरता का अर्थ तलाशने में डूब जाता.

पहली बार एक ही क्षण में सुमिता के साथ बीते कितने अतीत जुड़ गये थे, मेरे साथ. सांस धौंकनी सी चल पड़ी थी और मन में अलगाव और बेचैनी का सैलाब अपने अल्हड़ अंदाज़ में मुझ पर पागल सा हंसने लगा था. शरीर बुरी तरह पसीने से भीग चुका था और मेरे रुंधते गले से एक भी शब्द निकल नहीं पाया.

सुमिता जा चुकी थी और मैं बर्फ़ सा ठंडा पड़ता जा रहा था. निहायत ही ठंडा. पहली बार मुझे बे-इंतिहा प्यार के बावजूद छाये हुए सन्नाटे के बीच ज़िन्दगी बहुत बेईमान-सी लगी. कुछ पल के लिए ईश्वर में मेरा अनावृत (खुला) विश्वास किसी अनावृत (न दोहराई गई) कहानी की तरह बेखौफ होकर बेतहाशा चुभने लगा. चेहरे पर दर्द और अलगाव की खींची हुई लकीरें बेरहम ढंग से ज़िन्दगी का फलसफ़ा बनकर परत-दर-परत मेरे अंतर्मन में जमने लगीं.

मेरी मेज़ पर सुमिता की डायरी पड़ी है. मैं कांपते हाथों से पन्ने पलटता हूँ. मेरी आँखें अटक जाती हैं. पढ़ता हूँ, 'मनुष्य क्या खोता है और क्या पाता

है? जब उसे किसी वस्तु, विषय या लक्ष्य की प्राप्ति की सनक चढ़ती है तो उसे प्राप्त करने के लिए वह एड़ी-चोटी का पसीना एक कर देता है. हमारे मनोरथ पूरे होते हैं. हम प्रसन्न हो जाते हैं पर शीघ्र ही सब कुछ सामान्य हो जाता है और वह भी उबाऊ-सा प्रतीत होता है और फिर हम एक नई धुन की ओर अग्रसर हो जाते हैं और नैराश्य हम पर हावी होने लगता है और जीवन व्यर्थ लगता है. मुझे भय लगता है, अस्वस्थ होने का भय. सुख और आराम के खोने का भय. अकेलेपन का भय. आशा की जगह निराशा का भय. निर्बलता होने का भय. इत्यादि.. इत्यादि. उस ईश्वर को पुकारने लगती हूँ, जिसे मनुष्य सा ढूंढती हूँ, पर वह नहीं मिलता. हां, उसे स्मरण करने पर धीरे-धीरे भय दूर होने लगता है. स्थिति-परिस्थिति के उहापोह से उबरने लगती है. मन शांत होने लगता है. स्वयं में साहस-सा प्रतीत होता है और स्वयं को सहज कर लेती हूँ. लगता है जिस ईश्वर को इधर-उधर ढूंढती हूँ वह मुझमें ही है.'

मैं डायरी पढ़ना बंद कर देता हूँ. बहुत कुछ लिखा है. ...और खोने और पाने के चक्रव्यूह में फंसा मैं अपने अकेलेपन में गोते लगाने लगता हूँ. किस गहराई तक गोते लगाता हूँ मेरे पास कोई मापदंड नहीं और न ही हो सकता है.

सुमिता की मृत्यु के बाद मैं अक्सर उसकी कब्र पर आया-जाया करता हूँ. कब्र पर मोमबत्तियां जलाना...गुलाब और गेंदे की पंखुड़ियां बिखेरना...प्रार्थना करना...और ईश्वर को धन्यवाद देना जैसी बातें आज मेरे लिए एक जीवित विश्वास बन गया है. सुमिता की मृत्यु से पहले मैंने कभी भी अपने विश्वास को प्रभु यीशु मसीह में इतना गहरा नहीं पाया, जो अनंत जीवन को दस्तक देता है. आज कब्रिस्थान में मेरे लिए एक सीढ़ी है, मेरे विश्वास को प्रभु यीशु मसीह में मृत्यु के पार अनंत जीवन से जोडनेवाली सीढ़ी, क्योंकि प्रभु यीशु मसीह का मृत्यु के बाद जीवन में लौट आना और कब्र का खाली पाया जाना, प्रभु यीशु मसीह में विश्वास रखने वाले हम विश्वासियों के लिए सबसे बड़ी और सुखद घटना.

कब्रिस्थान का चौकीदार बिरजू भाई मुझसे कहता है, 'साहब, कब तक आओगे यहाँ मेमसाहब की कब्र पर मोमबत्तियां जलाने?'

'बिरजू भाई, कब्रिस्थान हमारे लिए एक पवित्र स्थान है.'

'कब्र में पड़ी लाशें, लाशें नहीं, जीवित लोग हैं, जो अपने उद्धारकर्त्ता के अंतहीन प्रतीक्षा में चिरनिद्रा में पड़े है. एक दिन कब्र में ये तमाम लोग जाग पड़ेंगे. कब्रें खुल जायेंगी और कब्र में पड़े ये लोग प्रभु की महिमा करते दिखाई पड़ेंगे. बिरजू भाई, मेम साहब मरी नहीं जीवित हैं.'

बिरजू भाई एक टक मुझे देखता है. पता नहीं, मेरे एक शब्द उसके मन में कब तक ध्वनित-प्रतिध्वनित होते रहेंगे. मेरे कंधे पर उसका हाथ रखना, ढेर सारे शब्दों से कहीं अधिक मेरे लिए खुशियाँ बटोरने की बात है. मैंने उसके मन में विश्वास का एक छोटा सा बीज रोप दिया है. जो कभी-न-कभी अंकुरित होकर कब्रिस्थान की सत्यता की बात कह जाएगा.

मैं सोचता हूँ कब्रिस्थान से ही तो हमारी ज़िन्दगी का नया अध्याय शुरू होता है. एक अंतहीन अध्याय ! मृत्यु अनंत जीवन से जुड़ जाती है. मैं नहीं जानता, मेरा कब्रिस्थान आना... सुमिता की कब्र पर फूल चढ़ाना... प्रार्थना करना... मसीही विश्वास से जुड़ी ये तमाम बातें बिरजू भाई के लिए कब तक एक गुत्थी रहेंगी. पर, मेरी निश्चितता सदा इस बात में है कि प्रभु परमेश्वर का कार्य अनूठा है. उनके कार्य करने का ढंग और उनकी सोच मनुष्य जैसी नहीं. मैं नहीं जानता कि बिरजू भाई कब तक कब्रिस्थान से जुड़े मसीही विश्वास को, जो पाप और मृत्यु से मिली मुक्ति की परिभाषा और एक अदव्तीय दास्ताँ है, समझ पायेगा.

मैं देखता हूँ कब्रिस्थान की जमीन पर नाजायज़ ढंग से घर-मकान बनाकर बसे हुए लोगों को. इन लोगों से मैं कैसे कुछ कहूँ... क्या कहूँ, जो अनाधिकारिक रूप से कब्रिस्थान में घुस कर रह रहे हैं. ये लोग नासमझ हैं. इन्हें कब्रिस्थान की पवित्रता की समझ नहीं. कब्रिस्थान में मसीही विश्वास की पूर्णता का ज्ञान नहीं. पर हम मसीही लोग? हमें तो कब्रिस्थान की पवित्रता की समझ है. कब्र में पड़े चिरनिद्रा में पड़े लोगों का पता है? फिर हम क्यों मसीही मुर्दों से भी अधिक मुर्दे होकर जी रहे हैं, एक मसीही ज़िन्दगी? मसीही ज़िन्दगी और कब्रिस्थान से जुडे विश्वास को अलग-अलग खेमें में रखा नहीं जा सकता.

ईस्टर की आराधना के लिए ढेर सारे लोग कब्रिस्थान पहुंच चुके हैं. शुक्र है क्रिसमस की तरह ईस्टर जाड़े की ऋतु में नहीं आता, वरना तड़के सबेरे-सबेरे रजाई से निकल कर कब्रिस्थान जाना दुश्वार हो जाता. ढेर सारी मोमबत्तियां जल रही हैं. हर कब्र पर लोगों ने मोमबत्तियां-अगरबत्तियाँ जला रखी हैं. आराधना शुरू होती है. हम सब प्रार्थना करते हैं. अपने विश्वास को जगाने की कोशिश करते हैं. शायद एक कोशिश भर? गीत गाते हैं, 'पुनरुत्थान की सुंदर भोर को, देह और आत्मा मिलते हैं... .' पादरी साहब बाइबल खोलकर पढ़ते हैं, 'यदि मसीह जी नहीं उठे तो हमारा प्रचार करना भी व्यर्थ है और तुम्हारा विश्वास करना भी व्यर्थ... यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह में आशा करते हैं, तो हम सब मनुष्यों से अभागे हैं.' फिर लम्बा-चौड़ा उपदेश. मृत्यु से जी

उठने की बात. आराधना खत्म होते ही लोग चर्च की ओर चल पड़ते हैं. ईस्टर की आराधना है. कोई मामूली आराधना नहीं.

पूरा कब्रिस्थान खाली हो चुका है. कब्रिस्थान में आंधी की तरह आई जगमगाहट और गरमाहट खत्म हो जाती है. अब ये जगमगाहट और गरमाहट एक साल के बाद ही लौटेगी. एक बार फिर कब्रों की सफाई होगी. लीपा-पोती. सफेदी-चूना. जंगल-झाड़ काटे जायेंगे. मैं धीरे से कहता हूँ, 'कब्र में पड़े मेरे प्रियो, बस ऐसे ही चिरनिद्रा में पड़े रहना. अब साल भर कोई लौटकर तुम्हें और खुद को जगानेवाला नहीं. एक साल की छुट्टी है तुम्हारी भी और कब्र पर जानेवाले बेशुमार लोगों की.

मैं सुमिता की कब्र को देखता हूँ. प्रभु यीशु मसीह में सुमिता का विश्वास मेरे भीतर एक बार फिर से ज़िंदा हो उठता है. कब्रिस्थान खाली हो चुका है. सारे लोग जा चुके हैं चर्च की आराधना के लिए. मैं नम आँखों से कब्रिस्थान में नाजायज़ ढंग से बसे हुए लोगों को देखता हूँ. खुद पर शर्म आती है. कब्रिस्थान की होती हुई दुर्दशा और अपवित्रता को देखकर खून खौल उठता है. मन कचोटकर रह जाता है. कुछ देर पहले बेताहशा भीड़ में भी अकेला था. अब भी तन्हा हूँ. मन के भीतर एक आवाज़ गूंजती है, 'काश, पुनरुत्थान की खुशी मनानेवाले हम मसीहियों ने कब्रिस्थान को भी एक ज़िंदा कलीसिया समझा होता, तो आज इसकी ये दुर्दशा न होती. इसकी पवित्रता कायम रहती और अनाधिकारिक ढंग से अन्य जातियों का बसना न हुआ होता.

आज करीब महीने भर बाद कब्रिस्थान आया हूँ. बिरजू भाई दौड़कर आता है. अपने चेहरे पर खुशियाँ बिखेरते हुए कब्रिस्थान का फाटक खोलते-खोलते बोल पड़ता है, 'साहब जी, आपका विश्वास जीवित है. नहीं तो आप यूँ ही मेमसाहब की कब्र पर मोमबत्ती जलाने नहीं आते. हमारे और आप लोगों के बीच बड़ा फर्क है.'

मैं बिरजू भाई के चेहरे पर बिखरी हुई खुशियों को गिनने की कोशिश करता हूँ. पर, गिन नहीं पाता. कैसा मूर्ख हो गया हूँ मैं? क्या खुशियाँ भी गिनी जा सकती हैं? मैं एक बार फिर से बिरजू भाई के चेहरे पर दौडती-भागती खुशियों को देखता हूँ, तो मुझे लगता है कि प्रभु यीशु मसीह का पुनरुत्थान उसके अंतर्मन में भी जीवित होकर कभी-न-कभी उसे भी अनंत जीवन का सुख दे पायेगा.

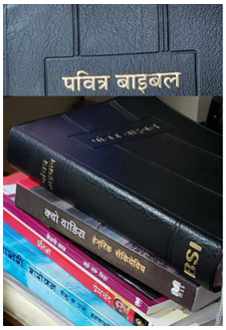

बाइबल इसमें
क्या है?

दानिय्येल की पुस्तक

दानिय्येल की पुस्तक, दानिय्येल भविष्यद्वक्ता के द्वारा उस समय लिखी गई थी जबकि, एक मूर्तिपूजक राजा नबूक्द्नेस्सर इस्रायल को तहस-नहस करके अपने देश में बन्धुआई में सारे इस्राएलियों को ले गया था और वह उन्हें बहुत बुरी तरह से सता रहा था. यह वह समय था जबकि, एक बार इस्राएल देश का नक्शा विश्व के चित्र से हटा दिया गया था. इसमें कोई भी संदेह नहीं है कि, नबूक्द्नेस्सर ने अपनी तरफ से इस्राएलियों के दमन में कोई भी कोर-कसर नहीं छोडी थी. ऐसे समय में दानिय्येल अपनी इस पुस्तक के द्वारा उस समय के सताए जा रहे अपने लोगों का उत्साहवर्धन करता है और उन्हें अपने दर्शनों, कथाओं के द्वारा उनमें यह आशा जाग्रत करने की कोशिश करता है कि, परमेश्वर इस दमनकारी राजा से उन्हें एक दिन अवश्य ही नजात दिलाएगा. वह उन्हें फिर से उनके अपने देश में ले जाकर बसाएगा.

अगर ध्यान दें और गम्भीरता से विचार करें तो दानिय्येल की पुस्तक के दो भाग होते हैः पहले भाग में दानिय्येल और उसके साथियों-निर्वासितों से सम्बन्धित कुछेक घटनाएँ. इन लोगों ने अपने विश्वास के द्वारा अपने सतानेवालों पर विजय पाई. यह सभी घटनाएँ बेबीलोनियन और फारसी राजाओं के समय की हैं. इस पुस्तक के दुसरे भाग में, दर्शनों की वे कड़ियाँ जिन्हें दानिय्येल ने देखा था. इन दर्शनों में बेबीलोन से आरम्भ करते हुए राजाओं का उत्थान और पतन. मूर्तिपूजकों का पतन और परमेश्वर की विजय.

रूप-रेखा:

1. दानिय्येल और उसके साथी- 1:1-6:28
2. दानिय्येल के दर्शन- 7:1-12:13
    * चार पशु- 7:1-28

* मेढ़ा और बकरा- 8:1-9:28
* स्वर्गीय संदेश देनेवाला- 10:1-11:45
* अंतिम समय का वर्णन- 12:1-13

पतरस की दो पत्रियां (नया नियम)

पहली पत्री-

पतरस की पहली पत्री उन मसीहियों के नाम लिखी गई थी जो उस समय एशिया मायनर में तितर-बितर होकर रह रहे थे. इन मसीहियों को 'परमेश्वर के चुने हुए लोग कहा गया है. इस पत्री से पतरस अपने मसीही लोगों को उत्साह से भरने की कोशिश करता है, क्योंकि ये लोग अपने मसीही विश्वास के कारण दुःख और सताव का सामना कर रहे थे. पतरस इस स्थिति में उन्हें बताना चाहता है कि, मसीह की मृत्यु, पुनरुत्थान और प्रतिज्ञात आगमन जैसे पहलुओं पर विश्वास करने का अर्थ ही है कि, परमेश्वर के विश्वासी दुःख और क्लेश उठायें. केवल इस विश्वास के साथ कि, यह सब दुःख और क्लेश उनके विश्वास की सच्चाई की साक्षी है. इसके अतिरिक्त जब वे यीशु मसीह के समक्ष उपस्थिति होंगे तो उन्हें स्वर्ग में बड़ा प्रतिफल मिलेगा. पतरस इन बातों के अतिरिक्त इस बात पर भी ज़ोर देता है कि, प्रभु के लोग, प्रभु के समान ही अपना जीवन व्यतीत करें.

रूप-रेखा-

1. भूमिका- 1: 1,2
2. उद्धार का मनन- 1:3-12
3. पवित्रता का जीवन- 1:13-2:10
4. सताव और उत्तरदायित्व- 2:11-4:19
5. सेवा और दीनता- 5:1-11
6. सारांश- 5:12-14

दूसरी पत्री-

पतरस की दूसरी पत्री मसीहियों के एक विशाल समुदाय के लिए लिखी गई थी. इस खत का विशेष उद्देश्य था कि, पतरस अपने मसीही लोगों को झूठे शिक्षकों, उनके द्वारा किये जा रहे कार्यों और इस तरह की शिक्षाओं से उत्पन्न भ्रांतियों व अनैतिकताओं के बारे में सचेत करे. उसका यह भी कहना था कि इस

प्रकार की बातों से बचने का सरल उपाय यही था कि, मसीही लोग प्रभु यीशु मसीह के सच्चे ज्ञान में बने रहें. वह ज्ञान जिसका अनुभव उन लोगों को विशेष है जो मसीह के साथ रहे और जिन्होंने उसे देखा भी है, उसकी शिक्षाओं को सुना है. पतरस का निशाना उन लोगों की झूठी बातों की तरफ था जो इस बात को कहते फिरते हैं कि, मसीह अब दोबारा वापस नहीं आयेगा. पतरस इस बात को तो स्वीकार करता है कि, मसीह के आने में देर अवश्य हो रही है, लेकिन उसका यह भी विश्वास है कि, यह देर केवल इस बात का संकेत है कि, परमेश्वर नहीं चाहता है कि कोई भी नष्ट हो, बल्कि सभी को मन फिराव का सुअवसर प्रदान हो.

रूप-रेखा-

1. भूमिका- 1:1,2
2. बुलाहट- 1:3-21
3. झूठवाद- 2:1-22
4. आगमन- 3:1-18

ये घर रहा न ये देश

जब फुटपाथों पर लगने लगे लाशों के अम्बार,
कोरोना के भय से चढ़ गये नेताओं के ज्वार.

बड़े शान से चले थे, करने हिन्दू राष्ट्र निर्माण,
लाखो हिन्दू ही मरने लगे, शायद बचे न कोई प्रमाण.

समझ रहा न कोई दिन को, न रात को ही अब रात,
जब जीना-मरना एक है, तो अब जीने की क्या शान.

भाषण-भाषण और चुनाव में ले डूबे ये देश,
पंछी उड़ कर भाग रहे है, ये घर रहा न देश.

जुगनू लेने निकले थे हम सब चन्द्रमा के पास,
मर कर आधे हो गये, जुगनू मिले न प्रकाश.
-शरोवन.

यीशु नासरी

'और नासरत नाम नगर में जा बसा; ताकि वह वचन पूरा हो, जो भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा गया था, कि वह नासरी कहलाएगा.' मत्ती 2:22,23

रे. कोनिंग एंव जॉर्ज कोनिंग द्वारा लिखित पुस्तक, '100 Fulfilled Bible Prophecies'- यीशु मसीह के बारे में की गई उन भविष्यवानियों का वर्णन है जो पूरी हो चुकी हैं. इन भविष्यवानियों के लिए बाइबल के विद्वानों के तरह-तरह के उत्तर भी होते हैं. जे. बार्टन पायने बाइबिल भविष्यवाणी के अपने विश्वकोश में, 191 भविष्यवाणियों की एक सूची देते हैं. जिसे वह "मसीह के लिए व्यक्तिगत संदर्भ" के रूप में समझते हैं. एक अन्य विद्वान अल्फ्रेड एडरशेम ने निष्कर्ष निकाला कि पुराने नियम में कम से कम 456 अंश हैं, जिन्हें यहूदी रब्बियों ने ऐतिहासिक रूप से मसीहा के बारे में होने के रूप में व्याख्या की है. विद्वानों के पास मसीहाई भविष्यवाणियों को वर्गीकृत करने के विभिन्न तरीके भी हैं- इन भविष्यवाणियों को, जिन्हें ईसाइयों का मानना है कि यीशु द्वारा पूरा भी किया गया है और जो रह गई हैं, वे भी शीघ्र ही पूरी होनेवाली हैं.

इन्हीं भविष्यवाणियों में से एक भविष्यवाणी जिसका उल्लेख ऊपर ही किया गया है कि, 'और नासरत नगर में जा बसा; ताकि वह वचन पूरा हो, जो भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा गया था कि, वह नासरी कहलायेगा.' यह सन्दर्भ मत्ती रचित सुसमाचार के लेखक मत्ती ने अपनी पुस्तक मत्ती 2:22,23 में दिया है. सवाल है कि क्या यह भविष्यवाणी सचमुच में पुरानी बाइबल में कहीं भी दर्ज़ की गई है? अगर पुरानी बाइबल का अध्ययन करें तो इस प्रकार की भविष्यवाणी कि, 'वह नासरी कहलायेगा' कहीं भी नहीं पाई जाती है. अगर यह कहा जाए कि यह भविष्यवाणी लेखक की गलती से आई है तो ऐसा भी नहीं लगता है. सचमुच यीशु मसीह मिस्र से हेरोदेस के मरने के बाद नासरत चले गये थे. नासरत में ही वे पले-बढ़े थे और यहीं उनका पैत्रिक घर भी माना गया है और आगे चलकर वे 'नासरी भी कहलाए हैं. यदि यह कहा जाए कि, इस सुसमाचार के लेखक से कोई गलती हुई है तो वह भी मानने योग्य नहीं है, क्योंकि इसका लिखने वाला एक पढ़ा-लिखा, महसूल लेनेवाला, रोमी सरकार में

कार्यरत था. कहीं भी नहीं लगता है कि वह कोई इतनी बड़ी गलती भी कर सकता है.

दो बातें विशेष हैं; पहली यीशु मसीह नासरत के रहने वाले थे. इसलिए भी नासरी कहलाये थे, मगर उस भविष्यवाणी का क्या होगा जो पूरी भी हुई है, मगर मत्ती के कहने के अनुसार यह पुरानी बाइबल में नज़र नहीं आती है? कई तरह के सवाल उठ खड़े होते हैं. जैसे कि, क्या बाइबल गलत लिख सकती है? इस बारे में कोई भी मसीही सपने में भी हां नहीं कहेगा. अगला सवाल कि, क्या भविष्यवाणी गलत की गई है? इसकी भी कोई सम्भावना नहीं है क्योंकि सचमुच में भविष्यवाणी पूरी भी हुई है.

कोई प्रत्यक्ष पुराना नियम प्रशस्ति पत्र नहीं है जो मसीहा की भविष्यवाणी करता है जिसे नासरी कहा जाएगा। वास्तव में, नासरत (मसीह के समय लगभग 1800 लोग) पुराने नियम में या एपोक्रिफा में कहीं भी उल्लेख नहीं किया गया है. लेकिन, हमारे पास दो संभावित स्पष्टीकरण हैं:

सबसे पहले, मत्ती रचित सुसमाचार का लेखक' विलक्षण नहीं कहता है. वह कहता है कि, 'नबियों' और यह बहुवचन है. उसने 'नबी'- एक वचन नहीं कहा है. यह हो सकता है कि मत्ती यीशु के तुच्छ चरित्र के बारे में विभिन्न भविष्यद्वक्ताओं का ज़िक्र कर रहा हो? उदाहरण के लिए;

1. '6 परन्तु मैं तो कीड़ा हूं, मनुष्य नहीं; मनुष्यों में मेरी नामधराई है, और लोगों में मेरा अपमान होता है.' (भजन संहिता 22:6).

2. '13 वह फाड़ने और गरजने वाले सिंह की नाईं मुझ पर अपना मुंह पसारे हुए है.' (भजन संहिता 22:13).

3. '10 जब मैं रोकर और उपवास करके दुःख उठाता था, तब उससे भी मेरी नामधराई ही हुई.' (भजन संहिता 69:10).

4. '7 जो मनुष्यों से तुच्छ जाना जाता, जिस से जातियों को घृणा है, और, जो अपराधियों का दास है, इस्राएल का छुड़ाने वाला और उसका पवित्र अर्थात यहोवा यों कहता है, कि राजा उसे देखकर खड़े हो जाएंगे और हाकिम दण्डवत करेंगे; यह यहोवा के निमित्त होगा, जो सच्चा और इस्राएल का पवित्र है और जिसने तुझे चुन लिया है.' (यशायाह 49:7).

5. 'अब हे बहुत दलों की स्वामिनी, दल बान्ध-बान्धकर इकट्ठी हो, क्योंकि उसने हम लोगों को घेर लिया है; वे इस्राएल के न्यायी के गाल पर सोंटा मारेंगे. 2 हे बेतलेहेम एप्राता, यदि तू ऐसा छोटा है कि यहूदा के हजारों में गिना नहीं जाता, तौभी तुझ में से मेरे लिये एक पुरूष निकलेगा, जो इस्राएलियों में प्रभुता करने

वाला होगा; और उसका निकलना प्राचीन काल से, वरन अनादि काल से होता आया है.' (मीका 5:1,2). लेकिन, इन भविष्यवाणियों का सम्बन्ध कहीं भी 'नासरी' वाली भविष्यवाणी से कहीं भी नहीं मिलता है.

नासरत के गलील के उत्तरी इलाकों के लिए ड्यूरा रोमन गैरिसन के द्वारा आयोजन किया गया था. ड्यूरा रोमन गैरिसन के लिए क्या था? यह मुख्य रूप से मध्य फरात पर रोम की पकड़ के लिए सैन्य और राजनीतिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए था. लेकिन ड्यूरा ने ढहते अरसैद साम्राज्य के खिलाफ आगे सैन्य आक्रामकता के लिए एक आगे के आधार के रूप में भी कार्य किया था. इसलिए यहूदियों का इस जगह से कोई लेना-देना नहीं था और काफी हद तक इसका तिरस्कार भी किया गया था. नासरत का स्थान उस समय किसी भी तरह से कोई भी मूल्य नहीं रखता था. ना तो इस गाँव का स्थान मुसा की बैबले में था, ना ही धार्मिक तौर पर और ना ही व्यापारिक, आर्थिक रूप में ही. शायद यही कारण है कि यूहन्ना 1:46 में कहता है कि, '46 नतनएल ने उस से कहा, क्या कोई अच्छी वस्तु भी नासरत से निकल सकती है? फिलेप्पुस ने उस से कहा, चलकर देख ले.' इसलिए, यह एक वास्तविक स्थान के लिए नहीं एक संदर्भ हो सकता है, क्योंकि मसीह के बदनाम चरित्र के रूप में भी नासरत रोमन गैरिसन आवास के लिए बदनाम किया गया था.

दूसरी सबसे मुख्य बात; यहाँ पर शब्दों के गूढ़ अर्थ बहुत प्रभाव रखते हैं. यशायाह की पुस्तक के अध्याय 11:1-3 में नबी यशायाह यीशु मसीह की भविष्य वाणी करते हुये इस प्रकार से कहता है कि,

'1तब यिशै के ठूंठ में से एक डाली फूट निकलेगी और उसकी जड़ में से एक शाखा निकल कर फलवन्त होगी. 2 और यहोवा की आत्मा, बुद्धि और समझ की आत्मा, युक्ति और पराक्रम की आत्मा, और ज्ञान और यहोवा के भय की आत्मा उस पर ठहरी रहेगी. 3 और उसको यहोवा का भय सुगन्ध सा भाएगा. वह मुंह देखा न्याय न करेगा और न अपने कानों के सुनने के अनुसार निर्णय करेगा.' इब्रानी भाषा में 'डाली' या 'शाखा' को 'नेतज़र' -NETZER या NZR कहते हैं. नासरत को लघु रूप में, इब्रानी भाषा में NZR लिखा जाता है. इससे सीधा सा अर्थ निकलता है कि, मत्ती शायद इसी दूसरी शाखा जो नासरत से निकली थी, की ही बात कर रहा हो?

(More on Nazareth housing a Roman Garrison. This information is taken from the article found at: "Is this where Jesus Bates?" "A shopkeeper running a small souvenir business in Nazareth has made a sensational discovery that could dramatically rewrite the history of Christianity. Jonathan Cook reports, dated October 21, 2003. (Also, http://www.uhl.ac/NazarethVillage/nazareth.html)

कुछ भी हो, एक बात तो सही है कि, पुरानी बाइबल में, कहीं भी नासरत शहर का नाम नहीं आया है और ना ही इस प्रकार की कोई भविष्यवाणी की गई है कि, 'यीशु मसीह नासरी कहलायेंगे'. लेकिन एक बात को नहीं झुठलाया जा सकता है कि, गिनती की पुस्तक के अध्याय 6 में एक शब्द 'नाजीर' जरुर आया है. समसून, यहून्ना बप्तिस्मा देनेवाला, परमेश्वर के नाजीर थे. यीशु मसीह भी परमेश्वर के अभिषिक्त थे.

कोई भी पूर्व-ईसाई ग्रन्थ नासरत शहर को बिलकुल भी निरूपित नहीं करता है. इटाईमोलोजी- ETIMOLOGY- 'शब्दों के उद्गम के शास्त्र' के हिसाब से नासरत शब्द इब्री भाषा के शब्द NAN TESSER या NETZER या NZR से निकल कर आया है. सचमुच यदि देखा जाये तो यह एक जटिल विषय है और इसके लिए हम सबको अधिक से अधिक अध्ययन की आवश्यकता है.

एक सवेरा

आज अंधेरा है तो क्या हुआ
एक सवेरा फिर से आएगा,
मुसीबतों से जो है घिरा हुआ
वो भी सब मिट जाएगा.

बनाये रखना हर पल, अटूट विश्वास उस पर
जो अब तक जमीं में रखा है संभालकर,
हर हालातों में साथ वो तुम्हारा निभाएगा
अपने भूल जायें, पर वो कभी न भुलायेगा.

अपने हथेली पर चित्र खोद कर रखा है तेरा
आंखों की पुतली समान ध्यान रखता है तेरा,
अकेले नही हो तुम इस जिंदगी के सफर में
सच्चा साथी तेरे साथ है, वही तुझे बलवंत बनाएगा.

माना अभी तुम दुःख-दर्द सह रहे हो बेशुमार
तुम्हारी हिम्मत टूट रही है राह में बार-बार,
पर एक दिन इन सब बातों का अंत होगा ही
हमारा यीशु हर परिस्थितियों में तुम्हें जयवंत बनायेगा.

- दीप्ति नाग

दिलों का टूटना भी जरूरी है

दीप्ति नाग

मुश्किलें, परेशानियाँ, तकलीफों का आना
ये भी है जरूरी जीवन मे हमारे आना,
उदासी, निराशा, दिलों का टूट जाना
कभी-कभी जरूरी है ये भी होना जाना.

जितना कुछ खुश होकर हम नहीं सीख पाते
उतना कुछ दुःख में होकर हम हैं सीख जाते,
एक-एक पल मुश्किल से गुजरता ही है
जल्दी-जल्दी वक्त ही नहीं है कटता।

कोई दुःख में टूट कर बिखर जाता है
कोई मजबूत बनकर उठ खड़ा होता है
जब कोई रास्ता उसे नहीं सूझता है
तब ईश्वर उसे राह दिखाता है।

कठिनाइयों में ही इंसान को समझ आता है
वो ईश्वर को पुकारने लगता है
ईश्वर भी उनकी राह देखता है
इंसान उनके और करीब चला जाता है.

तराजू

एक पलड़े में, मैं था
दूसरे में तुम थीं,
अचानक मैं नीचे गिरा
तुमने डंडी मार ली थी.
यह तो तराजू थी,
मुहब्बत और मिलन की
मैं कम पड़ा, तुम्हें कोई
अन्य जीत गया था.

-शरोवन

मौत की वादी से निकाला हमें

व्यक्तिगत गवाही

कुमारी बिमला राय

यीशु मसीह की जय. मैं बिमला राय रांची, झारखंड की रहने वाली हूं. मैं आज आप के सामने एक जीवित गवाही को रखना चाहती हूं. कोरोना महामारी के बारे में, आज की तारीख तक तो सब को पता ही है और हो सकता है कि, आप सब लोगों ने इस महामारी को अपने जीवन में और अपने प्रिय जनों के जीवन में देखा भी होगा. मैं और मेरा परिवार भी उन में से ही एक हैं, जिन्होंने इस महामारी को न सिर्फ देखा है, बल्कि हमारे जीवित पिता परमेश्वर के अनुग्रह से इस महामारी के संक्रमण से अपने जीवनों को फिर से प्राप्त कर पाए हैं. आज मैं आप सब से इस संक्रमण के कुछ पलों के अनुभव को, जो मैं ने

महसूस किये हैं, रखना चाहती हूं. अभी कोरोना की दूसरी लहर का आरंभ ही हुआ था और हमारे राज्य में और जिले में इसने पांव पसारना अभी आरंभ ही किया था कि, हम सपरिवारसहित इसकी चपेट में आ गए.

हमारे परिवार में छः सदस्य हैं- मां, बाबा, मैं और मुझ से छोटी तीन बहनें. मार्च 30, 2021 को मुझे शाम से ही बुखार चढ़ा रहा था और उन दिनों मौसम भी अचानक गर्मी का हो रहा था तो मैं ने सोचा कि ऐसे ही बुखार लग रहा होगा तो ध्यान नहीं दिया. सोचा जाने दो. लेकिन, दूसरे दिन फिर बुखार चढ़ने लगा और धीरे-धीरे बुखार बढ़ने लगा. दवाई खाने के बाद भी दिन भर 100 डिग्री फेरानहाईट से ज्यादा बुखार था, लेकिन फिर दूसरे दिन बुखार नहीं था. डॉक्टर को दिखाने के बारे में सोच रहे थे लेकिन, थोड़ा ठीक लगने लगा तो फिर डॉक्टर के पास नहीं गए. इसी बीच मेरी मां को भी बुखार आया लेकिन मां को मार्च 26, 2021 को वैक्सीन लगा था तो ज्यादा ध्यान नहीं दिया क्योंकि वैक्सीन के बाद तो बुखार आएगा ही, ये पता था.

एक-दो दिन तक फिर मुझे ठीक नहीं लग रहा था तो मैं ने सोचा कि डॉक्टर को दिखा ही लेते हैं तो उन्होंने रक्त के परीक्षण के लिये लिखा और उसके परिणाम में टायफायड बताया और डॉक्टर ने मुझे छः दिन के लिए इंजेक्शन लगवाने के लिए लिखा. इसी दौरान मेरी मां को बुखार आता-जाता रहा और ठीक इसी के बीच मेरी छोटी बहनों को भी एक-एक कर के अलग-अलग दिन में बुखार चढ़ने लगा और सारे लोग पैरासीटामोल अपने जरूरत के हिसाब से खाते रहे. हम सब को घर के कामों को करने के लिए हिम्मत करना बहुत मुश्किल हो रहा था. किसी के भी शरीर में ज़रा भी ताकत नहीं थी और मां को भी देखना था, क्योंकि हम सब लोग जानते हैं कि मां जो होती है, अपना दर्द कभी किसी को नहीं बताती है. मेरी मां भी कुछ ऐसी ही है. कुछ ज्यादा बोलती ही नहीं है कि, उसको कैसा महसूस हो रहा है और मां देख भी नहीं सकती थी,तो हमें ही ध्यान रखना पड़ता है कि मां को कुछ जरूरत तो नहीं है.

मेरा भी हालत ठीक नहीं ही था. इंजेक्शन लगवाने के लिए नर्स को ढूंढना पड़ता था. मेरी बहनें, मां का ध्यान रख रही थीं. लेकिन उन सब की भी तबीयत ठीक नहीं था तो बहुत मुश्किल हो रही थी और कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें, क्यों एक-के-बाद एक, सब की तबीयत खराब हो रही थी. मां को ज्यादा दिन बुखार नहीं आना चाहिए था. वैक्सीन लेने के लिए ज्यादा से ज्यादा एक दिन या दो दिन बुखार आता है ऐसा कहा गया था, लेकिन फिर ठीक हो जाना चाहिए था. लेकिन ऐसा नहीं था. ये सब देख कर हम ये सोचते

कि, कहीं कोरोना तो नहीं हो गया? लेकिन हम ऐसा सोचना नहीं चाह रहे थे. हमें कैसे होगा और क्यों होगा? जब हमने सोचा की कोविड-19 का परीक्षण करा लेना चाहिए, तो 'स्पेसीमेन'(सैंपल) लेने वाले, कहने के बाद भी नहीं आए तो हमने सोचा छोड़ो, नहीं कराते हैं. ठीक हो जाएगा सब. ये सब होते-होते कुछ दिन और निकल गये. लेकिन, मां की तबीयत पहले से और भी अधिक खराब हो रही थी. बाहर से ठीक दिख रही थीं, लेकिन अंदर से कमजोर होने लगी थी. उन्हें खाने में भी रूचि नहीं लग रही थी. इसलिए ठीक से खा-पी भी नहीं रही थीं. और अभी तक हमें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें? मां को क्या हुआ है? विडम्बना देखिए कि, मई 04, 2021 को मां का जन्म दिन है और मां बीमार है. हम समझ ही नहीं पा रहे थे कि मां के लिए क्या करें? हम मां का क्या इलाज करवाये और उन्हें कहां लेकर जायें? दुख तो बहुत हो रहा था, लेकिन कुछ भी हाथ नहीं आ पा रहा था. खैर ! मां अपना जन्मदिन मनाने के लिए बिल्कुल भी सामान्य नहीं रहती है और पवित्र सप्ताह होने के कारण से मां वैसे भी अपने जन्म दिन पर कुछ करना नहीं चाहती है और आज तो हालात ही ठीक नहीं था, उस दिन न हम मां को खिला पा रहे हैं न हम मां के लिए कुछ अच्छा ही कर पा रहे हैं। मां के लिए बस यही प्रार्थना कर सके कि मां को कुछ न हो, मां ठीक हो जाए।

कोई भी निश्चय करते-करते जून 04, 2021 को हमने रक्त का परीक्षण करवाने के लिए एक दोस्त की मदद से रक्त का सेम्पल लेने वालों को बुलाया और सभी घर के सभी छः सदस्यों का परीक्षण करवाया, और उसी दिन मेरा भी टायफायड का अंतिम इंजेक्शन भी खत्म हुआ. अब मुझे थोड़ा ठीक लगने लगा था. लेकिन उस दिन तक मां का ऑक्सीजन का स्तर बहुत गिर चुका था. पच्चासी प्रतिशत के आस-पास रहता था. सब कुछ इतनी जल्दी हुआ की कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि, हमारे साथ ये क्या हो रहा था? इसी बीच हमने ऑक्सीजन के छोटे छोटे बंद डिब्बे में खरीद लिया और मां को बीच-बीच में उनके मुंह में स्प्रे कर देते थे.

आस-पड़ोस के लोग भी देख रहे थे कि मां का हाल बहुत खराब हो रहा है. सब लोग हमारे लिए चिंतित थे. जब उन्होंने जाना कि मां का ऑक्सीजन स्तर कम हो रहा है, तो उन्होंने उन्हें अस्पताल में भर्ती करने की सलाह दी. लेकिन हमें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें? अगर उन्हें कोरोना है, तो कौन से अस्पताल में भर्ती करना होगा? क्योंकि जिस अस्पताल में कोविद-19 मरीज के लोगों के लिए प्रबंध होगा, वहीं भर्ती कर सकते थे. मां को अस्पताल में भर्ती

कर के अकेले भी नहीं छोड़ सकते थे. वहां किसी न किसी को उनके साथ में रहना बहुत जरूरी था और अस्पताल में कोविड-19 के मरीज के साथ किसी को भी रहने भी नहीं दिया जाएगा और अभी तक हमारे पास हमारा कोविड-19 का टेस्ट रिजल्ट भी नहीं आया था. परिवार में अब हम सब की हालत खराब हो रही थी कि क्या करें? कुछ सोच नहीं पा रहे थे. हम ने कहा हम टेस्ट रिपोर्ट का इंतजार करते हैं. रिपोर्ट आने में दो दिन का समय लगेगा, ऐसा हमें बोला गया था. एक दिन तो किसी तरह बीत गया, लेकिन दूसरे दिन बहुत चिंतित थे. प्रभु जी अगुवाई करो- कुछ समझ नहीं आ रहा है? यही प्रार्थना कर रही थी कि कहीं मां को अस्पताल नहीं भेज कर कोई गलती तो नहीं करेंगे? ऐसे सवाल, हम खुद से ही पूछ रहे थे. अपने आप से और प्रभु से कि आप ही रास्ता दिखाओ. मां को कुछ भी खिला-पिला नहीं पा रहे थे. बहुत कोशिश करके, किसी तरह बिस्कुट और ब्रेड खा पा रही थीं. गारगल कर रही थीं, गर्म पानी थोड़ा-थोड़ा पीती थीं हमें बहुत दया आती थी और गुस्सा भी कि, हम कुछ भी नहीं कर पा रहे थे. रोना आ रहा था. मार्च 07, 2021 को हमने एक ऑक्सीजन सिलेंडर खरीद लिया, इस आशा में, कि जब तक हमारी कोरोना के टेस्ट की रिपोर्ट नहीं आती है, तब तक जरूरत में इसको ही उपयोग कर लेगें. दिन तो किसी तरह बीत ही गया. अब रात में कौन देखेगा? रात कैसे बितेगी? और टेस्ट रिपोर्ट कब आएगी? यदि ऑक्सीजन इस मध्य अचानक से कम हो जाए तो क्या करेंगे? और यदि उस वक्त हम लोग नहीं देख पाए तो क्या होगा? बहुत मुश्किल का समय था. रात के करीब 10.30 बजे बहुत कोशिश करने के बाद उन्होंने मां का कोरोना टेस्ट का परिणाम मिला, जो कि कोरोना पॉजिटिव था. अब हम और भी डरने लगे कि अब क्या करें? इधर आस- पास तो कोई भी अस्पताल नहीं हैं, जिसमें कोरोना का वार्ड होता, और बाकी अस्पताल कोई भी नहीं लेगा. कोरोना के मरीज को लेने के लिए उस रात न जाने हमने कितने फोन किए होंगें. अपने लोगों को, अस्पतालों में, कि कहीं भी जगह हो तो और कहीं कोरोना का वार्ड हो तो जगह मिल जाए, लेकिन ऐसा नहीं हुआ. उस रात हम जितनी जगह जानते थे, सब जगह हमने प्रार्थना-निवेदन दे दिया कि मां की तबीयत बहुत खराब है और आक्सीजन कम हो रहा है. हमारे लिए वह रात जीवन की सबसे काली रात थी. सब से ज्यादा अंधकार वाली रात थी. कुछ भी अनहोनी के बारे में हम सोचना भी नहीं चाहते थे. रात भर मैं मां के पास बैठी रही, उन्हें हर पल देखती रही. मां को और मन ही मन यही प्रार्थना कर रही थी कि प्रभु अपने नथनों का श्वांस मां के अंदर फूं फूंक दो. अंदर ही अंदर अपनी बेबसी पर

बहुत रो रही थी. कहीं हमारा फैसला गलत तो नहीं था? क्या मां को घर में ही अभी तक रख कर हमने कोई गलती तो नहीं की है? कहीं कुछ गलत न हो जाए?

सुबह होते ही हम ने सोचा की कहीं न कहीं तो भर्ती करना ही होगा. दवाई तो मिलेगा ही साथ ही ऑक्सीजन भी मिलेगा और कुछ न कुछ तो होगा- और रहा साथ में रहने का सवाल तो उसे बाद में देखा जाएगा. बोलेंगें कि मां के साथ किसी न किसी को साथ में रहना होगा नहीं तो मां अकेले नहीं कर पाएगी. अब तक उनका शरीर काफी कमजोर हो गया था. इतने दिन की बीमारी की वजह से चलना भी मुश्किल हो रहा था. डर लगता था कि, कहीं गिर न जायें. हमें लगता था कि, ये सब हमारी लापरवाही के कारण हुआ है. यदि हम थोड़ा ध्यान देते और कोरोना की दूसरी लहर के बारे में थोड़ा भी ध्यान रखते तो हालात इतना अधिक नहीं बिगड़ते. यही प्रार्थना करते थे कि, प्रभु सम्भाल लेना.

दूसरे दिन सुबह में प्रभु ने रास्ता खोला और बहुत इधर-उधर बात करने के बाद मांडर के अस्पताल में जाने की बात हुई. जो ऐसे मरीज को लेता है और वहां अच्छी देख-भाल भी होती है. प्रभु ने वहां हमारे जाने के लिए एक एम्बुलेंस भी उपलब्ध करवा दी, जिसमें ऑक्सीजन सिलेंडर पहले से ही उपलब्ध था. सब कुछ तैयारी करते-करते करीब 9.30 बजे में हम मांडर के लिए निकले. सुबह का समय था. इसलिए रास्ता खाली था. फिर भी करीब 30 किमी रास्ता तय करना बहुत मुश्किल लग रहा था. हम सब कुछ प्रभु के हाथ में सौंप कर निकल गए. निश्चिन्त होना चाह रहे थे, पर मनुष्य की चिंता करने की प्रवृति तो सब को पता ही है. प्रभु के उपर सारी चिंता डालने का हम नाटक करते हैं और खुद से कुछ करते भी नहीं बनता है. जब हम रास्ते में ही थे तो घर के बाकी सदस्यों का भी कोरोना टेस्ट का परिणाम भी आ गया. जिसमें मैं कोरोना पॉजिटिव थी और मेरी दो छोटी बहनें भी कोरोना पॉजिटिव थीं. बाबा और मंझली बहन का कोरोना टेस्ट नेगेटिव था. हम सबकी ऐसी रिपोर्ट के कारण से भी प्रभु ने हमें बहुत आशीषित किया. आप सोच रहे होंगे कि, वो कैसे? छः में से चार लोग तो पॉजिटिव हैं, तो वो कि मेरे पॉजिटिव होने से मां के अकेले रहने की समस्या खत्म हो गई, अब मैं कह सकती हूं मैं भी कोरोना पॉजिटिव हूँ तो मैं साथ में ही रहूंगी, घर में एक बहन कोरोना नेगेटिव है तो खाने-पीने बनाने की समस्या भी खत्म हो जाती है और बाबा की देख-रेख की समस्या भी खत्म हो जाती है. मतलब हम प्रभु को जितना भी धन्यवाद दे कम है. इस विषम परिस्थिति में कैसे वो हमारी ढाल बन के खड़ा है. हम बयां नहीं कर सकते. प्रभु ने कभी नहीं

कहा कि मेरे लोगों पर दुख नहीं आएगा या उनको मुश्किलों का सामना नहीं करना पड़ेगा, लेकिन वह अपने लोगों को सारी समस्या से और दुख तकलीफ के मंजर से पार कर के जयवंत से भी बढ़कर बाहर निकालेगा. हलिलूयियाह. . . हलिलूयियाह. . . हलिलूयियाह. . . हलिलूयियाह.

हम वहां पहुंच गए और बात करने पर बताया गया कि वहां जगह खाली नहीं है. हमने कहा कि हम बात करने के बाद यहां आए हैं फिर जिनसे बात हुआ था उन से बात करने पर उन्होंने बोला कि थोड़ा इंतजार करें. इंतजाम किया जा रहा है. हम बाहर एम्बुलेंस में बैठे-बैठे इंतजार करने लगे. समय बीत रहा था. एक-एक पल मुश्किल से बीत रहा था. ईश्वर का बहुत धन्यवाद हो कि प्रभु ने उस समय के लिए ऑक्सीजन सिलेंडर का इंतजाम करके रखा था। इसी बीच मैं मां से कहती थी कि, 'मां हिम्मत मत हारना. प्रभु पर भरोसा रखो. वह कुछ न कुछ जरूर करेगा. सब ठीक होगा. आत्मा में प्रभु का गीत सब गाते रहो. प्रार्थना करते रहो. मां के मन में क्या चल रहा था, मैं नहीं जानती थी. लेकिन ये जरूर सोच रही होगी की पता नहीं क्या होगा? जब हमने बाद में बात किया इस बारे में कि मां तुम को कैसा महसूस हो रहा था, तुम क्या सोच रही थी, तो मां बोलती हमको कुछ नहीं लग रहा था जो प्रभु की मर्जी होगी वही करेगा. अगर ले जाता है, तो ले जाएगा. हम इंतजार करते रहे और वहां कुछ नहीं हुआ. घर से बहन लोगों ने फोन किया कि यदि वहां कुछ नहीं हो रहा है तो तुम लोग वापस आ जाओ. मैं ने कहा बिना कुछ कहे, कैसे आ जायें? कैसे इतनी दूर से ऐसे ही आ सकते हैं? मां को लेके वापस आ सकेंगे की नहीं, हम को नहीं पता. यहां नहीं इंतजाम होने के उपर भी प्रभु की अद्भुत योजना थी जो बाद में विचार करने पर समझ में आता है कि, एक तो घर से इंतनी दूर है कि कुछ जरूरत होने पर कोई नहीं आ सकता था. अंततः हमें वापस ही आना पड़ा. मैंने मां से कहा, 'हमें वापस जाना है. तुम हिम्मत मत हारना. अस्पताल में बात हो गई है. वहां हम लोग को जगह मिल जाएगी. प्रभु का धन्यवाद हो उस एम्बुलेंस के लिए जिसमें हम उतनी देर से बैठे थे और हमें कोई दुख का अनुभव नहीं हुआ. बाहर गर्मी थी लेकिन हम आराम से थे. जब हम वापस आ रहे थे, तो रास्ते में मैंने लोगों को देखा कि सब लोग अपने दिनचर्या में मस्त हैं और हम एक एक श्वांस के लिए संघर्ष कर रहे हैं. इस महामारी की इतने विकराल रूप से अनजान जो कि कुछ दिनों के बाद पूरे देश में दिखाई देने वाला था, मैं सोच रही थी कि काश: मैं इनको अपने हालत के बारे बता सकती? इनको चिता सकती. सचेत कर सकती कि, अब भी बचने का समय है, अपने

आप को बचाने का समय है, इस कोरोना की दूसरी लहर से, जो बहुतों को खून के आंसू रूलाने वाला है. लेकिन अफसोस जिस बारे में, मैं और मेरा पूरा परिवार ही कुछ दिन पहले निश्चिन्त थे तो मैं दूसरों को क्या कहूँ. कुछ दिन पहले बीमार होने पर भी हमारा फायदा ही हुआ, जिससे हम अपने प्रिय जनों को बता सकें कि, क्या- क्या गलती नहीं करना है, लापरवाही नहीं करना है, जिससे हमने सीखा था और बाकी सब प्रभु के हाथ में सौंप देना है- वही सब सम्भालेगा भी.

प्रभु ने डॉ. मार्सल लुगुन को अपना दूत बनाया हुआ था. हमारे अस्पताल में भर्ती होने के लिए जगह बनाने के लिए, ये हमें अब पता चला, जब हमें मांडर से वापस आना पड़ा. भले ही थोड़ी देर हुई लेकिन इतनी भी नहीं कि हमें पछताना पड़े. डोक्टर साहब ने ही बाकी बहनें जो कोरोना पॉजिटिव थीं, उनका कोरोना का इलाज घर में ही किया. डॉक्टर साहब ने रांची के सदर अस्पताल में बात की और हमें वहां जगह मिल गई. एक अलग कमरा, जिसमें दो बिस्तर थे. एक मां के लिए और एक मेरे लिए, और वहां ही कमरे में ही बाथरूम था तो मुझे मां के लिए बहुत आराम हुआ. ये भी पता चला कि अपनी समझ पर ज्यादा भरोसा नहीं करना चाहिए, जैसे हमें बाइबल सिखाती है, नीतिवचन 3: 5, 6 में- '5 तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना.' 6 उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा.' ये वही अस्पताल है जहां हमें दो दिन पहले ही आना था, लेकिन प्रभु ने दो दिन तक सब कुछ सम्भाला और अंततः हम वहीं पहुंच गए जहां प्रभु ने उपाय किया था. उस अस्पताल में हमें शायद बिल का भी भुगतान करना पड़ता लेकिन प्रभु ने हमारे लिए ऐसा इंतजाम किया कि हमें यहाँ एक रूपया अस्पताल के बिल के रूप में भुगतान नहीं करना पड़ा. हमें कमरा मिल गया. दवाई मिल गई. 24 घंटे लगातार आक्सीजन सप्लाई मिली. मां के लिए, अब हमारे जान में जान आया. चलो कुछ तो हुआ. अब सब जल्दी ही ठीक हो जाएगा, लेकिन उस समय तक मां की और मेरी हालत बहुत खराब हो चुकी थी. मैं क्या मां की मदद कर सकती थी? मैं तो खुद ही दो अस्पताल के उस कमरे के जमीन में पड़ी थी, क्योंकि मेरे शरीर में इतनी ताकत नहीं लग रही थी कि मैं अपने बिस्तर में भी जा सकूँ. किसी तरह घसीटते हुए मां को दवाई दी और खुद भी खाई. सिर्फ दो बिस्कुट के बल पर मां दवाईयां ले रही थी, क्योंकि खाने की बिल्कुल भी ताकत नहीं बची थी कि, वो खाना भी चबा कर खा सके. बिस्कुट को पानी में धोल कर दे रहे थे. प्रभु ने सब कुछ सम्भाला. उसने अपना

श्वांश फूंका और फिर धीरे-धीरे सब ठीक होने लगा. बहुत सारे लोगों ने और मंडलियों ने इस दौरान हमें प्रार्थना में याद किये रखा. हमारी सुधि ली. हम एक-एक जन के लिए प्रभु से बहुत आषीश की मांग करते हैं. अस्पताल में रहते हुए, मैं ने भजन संहिता 91 को पकड़ लिया और उसी को पढ़ती थी. फिर भी मां का आक्सीजन अपने आप से नहीं बढ़ रहा था. ऑक्सीजन सिलेंडर लगा रहता तो ठीक रहती थीं. लेकिन जब ऑक्सीजन निकाल देते थे तो उसका स्तर धीरे-धीरे नीचे आने लगता था. इस लिए अभी तक मेरे मन से पूरा डर नहीं निकला था. कभी- कभी अचानक कुछ सोच में आ जाता था तो डर भी जाती थी और प्रभु से कहती थी कि, 'नहीं प्रभु, नहीं ऐसा कुछ नहीं होना चाहिए. हम बर्दास्त नहीं कर सकेंगें. उन दिनों बहनें भी रात दिन प्रार्थना कर रही थीं और जितने प्रार्थना योद्धओं को जानतीं उनसे प्रार्थना करवा रहीं थीं. क्योंकि प्रभु के अलावा कोई और सहारा भी नहीं था. हां, प्रभु ने इन सारे दिनों में हमें कुछ भी कमी या तकलीफ होने नहीं दी. उसके उपाय से, अनुग्रह से, बाजार दुकान की सामग्रियां या दवाईयां, आक्सीजन सिलेंडर, हर चीज के लिए प्रभु ने मददगार भाईयों को भेजा, जिन्होंने अपनी जान की परवाह किए बगैर, कोविड महामारी के इन बुरे हालातों में हमारी मदद की। यहां तक कि सुबह-शाम घर से नाश्ता बनाना, कोविड वार्ड तक लाना, क्योंकि हम खा नहीं पा रहे थे तो अस्पताल का खाना लेकर बर्बाद नहीं करना चाह रहे थे और थोड़ा बहुत रोज घर से ही मंगवा रहे थे. धीरे-धीरे हमारे खान-पान में वृद्धि हुई और शरीर में थोड़ा बल बढ़ा.

लेकिन अब धीरे-धीरे कोरोना की दूसरी लहर की स्थिति भयावह सामने आ रही थी. अस्पताल में मरीजों की संख्या बढ़ रही थी और जगह भी नहीं थी. अस्पतालों में आक्सीजन सपोर्टेड बेड की कमी थी, और प्रतिदिन एक-एक करके मौतें भी होने लगी थी. जहां पर हमारा कमरा था, उसी के बगल से वार्ड बॉय पी.पी.ई. किट पहन के और लाशों को प्लास्टिक बैगों में बंद कर के ले जाते थे. शुरू में संख्या कम थी, लेकिन धीरेधीरे संख्या बढ़ने लगी और कुछ तो आते-आते ही मर जाते, अंदर भी नहीं पहुंच पा रहे थे. रोना-चिल्लाना, ये सब देखना-सुनना बहुत मुश्किल था, सब कुछ बहुत भयानक था. हम भी इसी दशा में वहां पर पड़े थे. हमारे साथ कहीं कुछ ऐसा न हो. यही सोचती थी. लेकिन प्रभु का बहुत-बहुत धन्यवाद हो, हमें बचाने के लिए, प्रभु ने हमें इस भयानक परिस्थिति से जीवित निकाल लिया. प्रभु को लाखों करोड़ो धन्यवाद हों. भजन संहिता 91:7 वचन को मैंने थाम लिया. जिसमें ऐसा लिखा है कि, 'तेरे निकट हजार और तेरे दाहिने दस हजार गिरेंगे, लेकिन वो तेरे पास न आएगा.' और मां

के लिए भजन संहिता 91:15 और 16 वचन को थाम लिया. अब इस परिस्थिति में अस्पताल में रहना बहुत मुश्किल लग रहा था इसी बीच अस्पताल में फिर से कोरोना टेस्ट के लिए हमारा सैंपल ले कर के गए. उस दिन तो कोई रिपोर्ट नहीं आई. दूसरे दिन फिर से सैंपल ले कर के गए. फिर मुझे फोन आया. मेरा नाम लेकर के उन्होंने कहा कि तुम्हारा कोरोना टेस्ट नेगेटिव है. फिर मैंने मां के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि अभी उनकी बारी नहीं आई है. रिपोर्ट आयेगी तो बता देंगें. इसी बीच अस्पताल वाले चाह रहे थे कि मैं बिस्तर खाली कर दूं लेकिन मां के साथ रहना था मुझे, तो मैं ऐसा नहीं कर सकती थी. दो दिन बाद अस्पताल वालों ने आकर कहा कि आप लोगों का कोरोना टेस्ट नेगेटिव है, जितनी जल्दी हो सके, अपने घर वालों को बुला लीजिए. आप लोगों का डिस्चार्ज का कागज बन रहा है. मैं और मां बहुत खुश थे कि अस्पताल से छुट्टी हो रही है. जल्दी से मैं ने अपने घर में बहन लोगों को फोन किया कि, हम लोगों की छुट्टी हो रही है. जल्दी से लेने आ जाओ. हमलोग निकलने ही वाले थे कि,इतने में मां का नाम लेकर मुझे एक फोन आया कि उनका भी कोरोना टेस्ट पॉजिटिवट है. मैं ने कहा हम लोग तो अस्पताल से जा रहे हैं. हमें डिस्चार्ज कर दिया गया है. फिर उन्होंने कहा डॉक्टर से बात कीजिए. मैंने जा कर पूछा की फोन पर ऐसा बोल रहे हैं तो शायद उन्होंने बात किया होगा, तो उनको भी ऐसा ही बताया गया था, लेकिन हमारे कमरे से निकलते ही वहां मरीज आ गए थे और अब हम भी अस्पताल में नहीं रहना चाह रहे थे, इस लिए मैं ने सोचा की घर ही चले जाते हैं. हांलाकि मां का ऑक्सीजन स्तर थोड़ा ठीक नहीं था, लेकिन फिर भी, मैंने सोचा बाकी लोग घर में ही ठीक हो गए हैं, मां भी घर में ही ठीक हो जाएगी, इसलिए हम वहां से निकल गए और घर आ गए. उस दिन तो सब ठीक था, बीच-बीच में मैं मां का ऑक्सीजन स्तर देखती रहती थी क्योंकि, एक हिसाब से हम मां को हम रिस्क में लेकर आए थे. इसी बीच हमने एक और ऑक्सीजन सिलेंडर खरीद लिया था, लेकिन उसको भरवाना भी अपने में बहुत बड़ी परीक्षा थी. दो दिन के बाद आपको भर के मिलता वो सिलेंडर और ऑक्सीजन का स्तर,मैं रात में बीच-बीच में उठ-उठ कर देखती कि मां की सांसें चल तो रही है ना. हम लगातार नहीं किंतु कभी-कभी ऑक्सीजन देते थे, क्योंकि वो भी ज्यादा देर नहीं चलता, तीन दिन के बाद मैं ने अचानक मां का ऑक्सीजन का स्तर देखा तो बहुत कम है, ऐसा देखा और डर गई. और फिर दूसरे दिन हम मां को मेडिका अस्पताल में पोस्ट कोविद ट्रीटमेंट के लिए लेकर गए और वहां डॉक्टर ने बोला कि सी. टी. स्कैन करना होगा. उसको बिना देखे

कुछ नहीं बता सकता. तुरंत सी. टी. स्कैन करके मुझे फिल्म दिखाएं. उसको देख कर डॉक्टर ने कहा कोविद का दाग है. दवाई खाना पड़ेगा. उन्होंने स्टेरॉयड दिया और कुछ और दवाईयां भी दीं. इन्हेलर भी इस्तेमाल करने को बोला और ये भी उन्होंने बोला कि ऑक्सीजन का स्तर ठीक हो जाएगा. परमेश्वर का धन्यवाद हो. आज के दिन जब हम सामाचार पढ़ते हैं या अपने जान-पहचान वालों से सुनते है कि ठीक हो जाने के बाद भी या कोविद की रिपोर्ट नेगेटिव आने के बाद, ठीक होकर घर आने के बाद भी लोगों की मौत हो जा रही है, तो प्रभु का धन्यवाद हो कि इस समय भी प्रभु ने हमें ठीक समय में डॉक्टर के पास जाने की आशीष दी. कुछ दिनों के बाद जब हम अस्पताल से रिपोर्ट ले कर के आए तब हमने देखा कि 20/25 लिखा है. मतलब 80 प्रतिशत फेफड़े में दाग था, या 80 प्रतिशत फेफड़ा खराब हुआ था. लेकिन प्रभु का धन्यवाद हो कि, इससे पहले की हम ये देख कर और डर जाते, प्रभु ने मां को ठीक कर दिया और ये बात हमें कुछ दिनों बाद पता चली थी. हमारा प्रभु जो आनादि काल से अनन्त काल का पिता और राजा है और अधिकारी है और जो हमारा बनाने वाला है, उसने फिर एक बार हमारे जीवन में अपनी विश्वास-योग्यता को प्रकट किया है. हम पापी हैं और हर दिन न जाने कितने पाप करते हैं, कितने ही बार प्रभु को ही दोष देते हैं कि, ये ऐसा क्यों हुआ? वैसा क्यों हुआ? हमारे साथही क्यों हुआ? अच्छा क्यों नहीं हुआ? और न जाने क्या-क्या हम कहते रहते हैं? लेकिन हमारा प्रभु तो कल आज और कल हमेशा एक सा है. हमारी ही गति बदल जाति है और हम ही कभी एक समान नहीं स्थिर नहीं रह पाते हैं, लेकिन वह अपने बच्चों से बहुत प्यार करता है और कभी नहीं छोड़ता. वह कहता है कि हमारे दुख के समय वह हमें अपने गोद में उठा कर रखता है. वह हमारे आंसुओं को पोंछता है. बाइबल हमें बताती है कि वही हमारे घावों पर मरहम लगाता है. आज हम सब लोग बिल्कुल ठीक हैं और परमेश्वर को जो हमारा सृजनहार, पालनहार, तारणहार, है लाखों-लाख धन्यवाद करते हैं.

प्रभु में, बहन बिमला राय, रांची, झारखंड □

प्रस्तुति- शांता राय.
रांची, झारखंड.

युक्लिपटुस

कहानी-शरोवन

तीन महत्वपूर्ण जीवन उसकी ज़िन्दगी में आये थे. सवाल यह नहीं है कि, इन तीनों में कौन छोटा, कौन बड़ा और कौन सुप्रतिष्ठित हो सकता है? असली मुद्दा तो यही है कि, इन तीनों में से किसको क्या मिला या समय ने किसकी झोली में क्या ड़ाल दिया है? और यह सब क्यों हुआ? जो हुआ, उसके होने की महज व्याख्या ही की जायेगी अथवा फिर से कभी भी न हो; इस बारे में प्रयत्न भी किये जायेगें.

आस-पास के समस्त गाँवों के खेतों की सिंचाई के लिए धसना नहर से निकाली गई इसकी छोटी सी ब्रांच, जिसे गाँव की भाषा में बम्बा कहते हैं; में एक टूटे हुए घड़े से तीव्रता से टकरा-टकरा कर जोशीला जल इस प्रकार से बहता जा रहा था जैसे कि, कोई स्त्री अपने कुएं से पानी निकालकर मिट्टी के बने हुए घड़े में भर रही हो और उसकी क्षणिक कड़ड़..कड़ड़ जैसी आवाजें इस सांझ में पेड़ों पर आये हुए बसेरों के पक्षियों का मन जैसे घबरा रहीं हों. शाम हो चली थी और दूर से खेतों से चरकर आते हुए ढोरों के पैरों से उड़ती हुई धूल का धुंआ सारे वातावरण में फैलता जा रहा था. आकाश में पक्षियों के रेले अपने मार्ग की तरफ उड़े चले जाते थे. एक बड़ी ही अजीब बात थी जो मैं अब महसूस करने लगा था; कि मेरे आस-पास से लोग गुज़र रहे थे, आते-जाते मुझे एक निगाह देखते भी थे, परन्तु कोई भी मुझसे तनिक भी सम्बोधित नहीं होता था. जाने कैसी निष्ठुरता थी इन सबकी मेरे प्रति? मैं कोई भी निर्णय खुद से नहीं ले पा रहा था. मुझे लगता था कि जहां ये सब जा रहे थे; पास ही के गाँव के रहनेवाले लोग बड़े ही अजीब-से थे. एक दम स्पन्दन्हीन- ठंडे-ठंडे-से.

मुझे इसी पास के गाँव में ही,जिसका नाम 'ठाकुर छत्रपाल का पुरा' था, में जाना था. ज़ाहिर था कि जब नाम ऐसा है तो इन्हीं ठाकुर छत्रपाल सिंह ने जो मेरे पर बाबा हुआ करते थे, उन्होंने ही इस गाँव को बसाया था. मगर मेरी यहाँ

किसी से जान-पहचान नहीं थी. कोई मुझे जानता भी नहीं था. मुझे भी केवल इतना ही याद था कि, मेरा भी एक पुश्तैनी घर इसी गाँव में है और यहीं पर मेरे पूर्वजों के वे खेत भी थे जो नियमानुसार, कायदे से अब मेरी सम्पत्ति में आ चुके थे. अब मैं ही इनका मालिक था. यहीं पर मैं पला-बढ़ा भी था, पर न जाने ऐसा क्या कुछ हुआ था कि, मेरे पिता भक्त सिंह ने मुझे आठवीं कक्षा पास करने के बाद ही शहर भेज दिया था और फिर अपने जीते-जी यहां पर कभी भी नहीं आने दिया था. लगभग अपनी चौदह वर्ष की उम्र में मैने अपना घर छोड़ा था और आज जब दोबारा आया था तो पूरे तीस वर्षों के एक लम्बे अंतराल के बीत जाने बाद. एक जमाना, एक युग-सा बीत चुका था. सब कुछ, बहुत बदला-बदला-सा, एक नया-सा कस्बा जैसा मुझे अपना गाँव दिख रहा था.

मेरा यहाँ अपने इस गाँव में आने और अपने खेतों, हवेलीनुमा घर और अन्य सम्पत्ति का लेखा-जोखा लेना; यह तो कारण था ही, मगर मन में एक जिज्ञासा भी थी कि इस गाँव में मैं चाहे किसी से मिलूं या न मिलूं, मगर अपने साथ पढ़नेवाली रुकैया से जरुर मिलूंगा और उसके बारे में पता भी लगाउंगा कि अब वह कहाँ पर है. मुझे उसके बारे में कुछ भी नहीं मालुम था, मगर गाँव की लड़की होने के कारण यह तो विश्वास था ही कि, उसका विवाह हो चुका होगा. यहीं किसी न किसी आस-पास के गाँव में वह रहती होगी. उसका पति निश्चित रूप से किसान ही होना चाहिए और वह भी खेतों में ही काम आदि करती होगी. कम-से-कम तीन-चार बच्चों की वह मां भी बन चुकी होगी?

वातावरण में शाम की मिट्टी से भरी धुंध, गाय-बैलों, भेड़-बकरियों और नंगे पैरों के साथ उड़ाती हुई धूल के कारण, पसीने से मिली हुई बदन में भरी हुई गंध भी अब जैसे बोझिल लग रही थी. मुझे प्यास लगने लगी थी. अपने गाँव में पहुंचने की शीघ्रता और आराम करने की चाह; से मैं छटपटाने लगा था. बस से उतरकर, हाथ में बहुत बड़ा नहीं, मगर छोटा भी नहीं, अपना सूटकेस थामे हुए मैं चुपचाप चला जा रहा था. बस वाले ने मुझे सड़क के किनारे ही उतार दिया था. अचानक से मैंने अपने आने का कार्यक्रम बनाया था. मेरे आने का किसी को कुछ भी मालुम नहीं था, सो कोई सहायक अथवा सहायता भी मेरे लिए नहीं थी; मुझे पैदल ही जाना था. गाँव की सूखी, रेतीली धूल में अपने मंहगे 'स्पोर्ट्स शूज़' के निशानों को छोड़ते हुए.

गर्मी अधिक से अधिक तो थी, साथ ही जानलेवा भी; मैं थक गया था, सो अचानक ही मैं पास ही में बनी एक टूटी-सी झोपड़ी के पास बनी हुई मेड़ पर, अपना सूटकेस एक किनारे रखकर बैठ गया. बैठे हुए कुछेक क्षण बीते होंगे कि,

इतनी-सी देर में चार-पांच आदमी, जवान, मुझे एक अजनबी की तरह घूरते हुए निकल गये. सब ने जाते हुए एक नज़र देखा तो मुझे, मगर पूछा किसी ने भी नहीं. मेरा ही गाँव था. लेकिन कितना अजीब, किसकदर अजीब, संदिग्ध से लोग भी थे. किसी एक ने झूठे से भी नहीं पूछा था कि, 'कौन हो? कहाँ से आये हो? कहां जाना है, आदि? सचमुच, मैं उन सब के लिए अजनबी, अनजान और अपरिचित ही था. कोई क्यों बात करता मुझसे?

मैं अभी बैठा ही हुआ था कि तभी अचानक से एक दुबला-पतला, लेकिन अपनी उम्र से कहीं अधिक लम्बा-सा मासूम, नादान लड़का मेरे सामने खड़ा हुआ मुझे बड़ी ही हैरत के साथ देख रहा था. वह चुप खड़ा हुआ था. उसे देख कर मैंने उससे पूछा,

'तुम यहीं-कहीं पास ही में रहते हो न?'

'?'- उस लड़के ने हां में सिर हिलाया.

'कहाँ पर?'

लड़के ने उसी झोपड़ी की तरफ इशारा किया, जिसके पिछवाड़े मैं बैठा हुआ था और जिसकी कच्ची मिट्टी की दीवार पर चूने की सफेदी से लिखा हुआ था- 'मेरा भारत महान.' यह एक राजनीतिक नारा था, जो अपने समय में किसी चुनाव के होने की याद ताज़ा करा रहा था.

'?'- उसका इशारा देख कर मैं चौंका तो मगर कुछ और बोलता, इससे पहले मैंने उस बच्चे से गुजारिश की और कहा कि,

'कहीं से एक गिलास पानी मिल सकता है मुझे. बहुत प्यास लगी है?'

उस लड़के मेरी बात पर फिर से हां में सिर हिलाया तो मैंने कहा कि,

'तो फिर ला दो.'

तब वह लड़का बिजली की रफ्तार से अपनी झोपड़ी में गया और करीब सात मिनटों के बाद ही एक बाल्टी में पानी भर कर लाया. साथ में एक लोटा और गुड़ भी लाया. मेरे सामने ही उसने लोटे को वहीं मिट्टी से मांजकर न केवल साफ़ किया, बल्कि उसे ऐसा चमका दिया कि उसकी पेंदी में कोई भी अपना स्वरूप सहज ही देख सकता था. फिर लड़के ने बाल्टी में से मुझे पानी दिया. मैंने पानी पिया तो लगा कि जैसे बदन में किसी ने फिर से नया दम फूंक दिया है. पानी बिलकुल ठंडा था. ज़ाहिर था कि, वह लड़का नया, तरो-ताज़ा पानी कुएं में से भरकर लाया था. ठंडा, ताज़ा पानी पीकर, मीठा गुड़ खाकर मैं फिर से पानी के समान ही तरो-ताज़ा हो चुका था. तब बाद में मैंने उस लड़के से पूछा कि,

'क्या नाम है तुम्हारा?'

'युक्लिपटुस.'

'?'- उस लड़के का यह नाम सुनकर मैं सहसा ही चौंक गया. मेरा चौंकना बहुत स्वभाविक भी था, क्योंकि इस अनोखे नाम से मेरा बहुत गहरा सम्बन्ध था. कभी किसी ने मुझको ही, मेरा ये विशेष नाम दिया था.

'तुम्हें मालुम है कि, तुम्हारे इस विशेष नाम 'युक्लिपटुस' का क्या अर्थ होता है?'

'हां.'

'क्या?'

'नीलगिरी- सफेदे का पेड़.' लड़के ने बोला तो मैंने तुरंत ही फिर से आगे पूछा. मैंने बोला कि,

'किसने बताया तुम्हें इसका अर्थ.'

'स्कूल में मास्टर जी ने बताया था.'

'अच्छा !'

मैं कुछेक क्षणों के लिए खामोश हो गया. सोचने लगा कि, 'युक्लिपटुस' नाम क्या यहाँ पर बहुत प्रचलित है? मुझे तो यह नाम वर्षों पहले रुकैया ने दिया था. मैं अपने स्वास्थ्य की दृष्टि से दुबला बहुत था, मगर लम्बा कहीं अपनी उम्र से अधिक. वह मुझे अक्सर ही पहले से चिढ़ाती थी. कहा करती थी कि, 'तुम कितने अधिक लम्बे हो. बांस के समान, ताड़ जैसे. जमीदार के पुत्र हो और वह भी सूखे, बांस, ठठेरे की तरह- कुछ खाया-पिया भी करो. तब मैं भी बदले में उसे चिढ़ा देता था. कहता था कि, 'तू, कौन से अफसरा-सी दिखती है? तू भी तो है, काली-कलूटी, तवे के समान, कारोंच सी. जहां भी आ जायेगी तो कितना भी उजाला क्यों न हो, पल भर में अन्धेरा कर देती है. . .'

'बाबू जी !' युक्लिपटुस नाम के उस लड़के ने मुझे टोका तो मैंने जैसे तुरंत हड़-बड़ाते हुए, चौंकते हुए उसे देखा तो उसने मुझसे आगे पूछा,

'आपको नींद आ रही है?'

'हां, कुछ-कुछ. थका हुआ हूँ न, इसलिए आँखें बंद हो गई थीं.'

'?'- युक्लिपटुस कुछ भी नहीं बोला. वह केवल मुझे एक संशय से देखने लगा.

तब मैं अपने स्थान से उठा. अपना सूटकेस उठाया और उस लड़के से सम्बोधित हुआ,

'मुझे अब जाना चाहिए.'

'आपको जाना कहाँ है?' युक्लिपटुस ने मुझसे पूछा तो पहले तो मैंने उसे आश्चर्य से देखा, फिर उसे बताया कि,

'इसी ठाकुर छत्रपाल सिहं का पुरा गाँव में, जमींदार रतनपाल सिंह की हवेली में.'
'?'- मेरा इतना कहना भर था कि, युक्लिपटुस तुरंत ही मेरे पैरों पर जैसे गिर पड़ा और मेरे पैर छूने लगा. उसे ऐसा करते हुए मैं तुरंत ही अपने स्थान से हटा और उससे कहने लगा कि,
'अरे . . .अरे ! तुम यह क्या करते हो? मैं कोई ईश्वर नहीं, बल्कि तुम्हारी ही तरह एक मनुष्य हूँ. इंसान हूँ. तुम पैर छूकर, सामने गिरकर, ऐसा सिजदा केवल अपने ईश्वर को ही किया करो.'
'आप तो हमारे माई-बाप हैं. हमारे गाँव के प्रधान हैं, जमींदार हैं; मैं आपको प्रणाम, सम्मान न करूं तो किसको करूं?'
'चलो ठीक है. अब मुझे जाने दो.' कहकर मैंने अपना सूटकेस उठाया तो युक्लिपटुस ने मेरे हाथ से सूटकेस ले लिया और अपने सिर पर रखते हुए बोला, 'मैं पहुंचाऊंगा आपको. आप केवल चले चलिए.'
'देखो, मेरी बात सुनो.' मैंने युक्लिपटुस को रोकना चाहा तो उसने कहा कि,
'अब ऐसा नहीं हो सकता है. पहले की बात और थी. अब मालुम पड़ गया है, तो मैं अपने सामने आपको बोझा नहीं उठाने दूंगा.' कहते हुए युक्लिपटुस लम्बे-लम्बे डग भरने लगा.

फिर लगभग पन्द्रह-बीस मिनट के बाद ही हम दोनों गाँव की एक-अकेली उस हवेली के बड़े लोहे के सींखचों वाले द्वार के सामने खड़े थे, जो दूर से ही अपनी जमीदारी की भली-बुरी प्रतिष्ठा का जैसे बखान दे रही थी. युक्लिपटुस ने मेरा सूटकेस नीचे उतारा और मुझसे कहा कि,
'अन्धेरा हो, इससे पहले ही मैं चला जाता हूँ.'
उसने बहुत मना किया. अपने हाथ जोड़े, इनकार किया; लेकिन मैंने उसकी मेहनत, इंसानियत और प्रेम के बदले में उसे पचास रूपये देकर ही जाने दिया. जाने से पहले युक्लिपटुस ने हवेली में रह रहे अन्य नौकरों आदि को मेरे बारे में बताया तो पलक झपकते ही जैसे सारी हवेली में भरे हुए सन्नाटे में जैसे कहीं भूचाल आ गया था. दो-चार नौकर और चौकीदार थे, मगर हवेली को ठीक-ठाक करने और संवारने के लिए यों भाग रहे थे कि, जैसे उसमें बीस-पच्चीस मुलाज़िमों की भीड़ लगी हुई हो.

हवेली में मेरा कमरा ठीक किया गया. भोजन आदि का प्रबंध हुआ. नहाने आदि के लिए पानी गर्म नहीं बल्कि, गुनगुनाकर हल्का गर्म किया गया. फिर खाना आदि से निवृत होकर मैंने सभी मुलाज़िमों से बात की. उनका हाल-चाल पूछा. उन्हें अपने अचानक से आने का कारण बताया. और फिर, दूसरे दिन

हवेली में मुनीम जी को भी बुलावा भेज दिया गया. रात भर हवेली का सबसे पुराना और ईमानदार, भरोसेमंद और सबसे अधिक वयोवृद्ध सेवक तिमाईधन मेरे पास बैठा रहा और पिछले बीसियों वर्षों की अच्छी-बुरी सारी कहानियाँ मुझसे साझा कीं. उन्हीं कहानियों में एक दास्ताँ उस रुकैया की भी थी जिसका वर्णन इस कहानी में पहले किया गया है और जो मिडिल स्कूल तक मेरे साथ-साथ पढ़ी थी.

करीब सुबह के चार बजे तिमाईधन उठकर चला गया था, मगर मेरी आँखों के सामने रुकैया का चेहरा जैसे हटने का नाम ही नहीं ले रहा था. . .'

'. . . पहली कक्षा से लेकर पांचवीं कक्षा तक मैं और रुकैया साथ-साथ स्कूल जाते थे. आपस में खेलते और झगड़ते थे. एक दूसरे को चढ़ाते थे. लेकिन, हम दोनों के मध्य एक बात जरुर थी, हम कितना भी लड़ते, झगड़ते, आपस में कभी-कभार मार-पीट भी कर लेते थे, पर बाद में जैसे सब कुछ भूलकर एक हो जाते थे. वह मुझको कभी बांस, कभी ठठेरा, कभी सफेदा और अक्सर ही युक्लिपटुस कहकर बुलाती थी. मैं भी उसको कभी उसका नाम रुकैया या फिर अक्सर ही कलुइया नाम से सम्बोधित करता था. धीरे-धीरे किसी तरह जीवन के ये पांच वर्ष, प्राइमरी पाठशाला के समाप्त हो गये. हम दोनों ने दूसरे मिडिल स्कूल में प्रवेश किया. नये स्कूल में, नई कक्षा में आने का उल्लास और खुशी तो थी ही, लेकिन साथ में अनेकों बदलाव भी आ चुके थे. सबसे अधिक बदलाव रुकैया में आने लगा. वह अब बहुत कुछ समझने-सोचने लगी थी. ठाकुर और अनु-सूचित जैसे शब्दों का मापदंड करती थी. उम्र के हिसाब से भी वह पहले से अधिक सतर्क हो चुकी थी. उसके शरीर में वयोसंधि की तरफ बढ़ते हुए चिन्ह स्पष्ट होने लगे थे. अक्सर ही मुझसे कहने लगी थी;

'मुझसे दूर ही रहा करो अब.'

'पहले की बात और थी और अब बात कुछ और है.'

'चलो, गरीब-अमीर, किसान-जमीदार में अंतर न जानो लेकिन, तुम 'ठाकुर' और अनु-सूचित जैसे शब्दों का भेद तो समझते ही होगे?'

'देखो, तुम्हारा तो कुछ भी नहीं बिगड़ेगा, मगर मैं और मेरा गरीब परिवार अवश्य ही नाश हो जाएगा. मैं अब बड़ी हो गई हूँ, इसी कारण मेरे पिताजी आठवीं के बाद मेरा ब्याह करनेवाले हैं. उन्होंने मेरा वर ढूंढा ही नहीं बल्कि पसंद भी कर लिया है.'

'पहले मैं छोटी थी. मेरा मतलब हम छोटे थे. मिलते-बैठते, बातें करते और खेलते थे, पर किसी को गाँव में कोई भी हमसे मतलब नहीं था. लेकिन अब देखो तो सारे गाँव की नज़रे किस प्रकार से हम दोनों को चीरने जैसी लगती हैं. तुम्हारे पिता बहुत बड़े जमींदार ही नहीं हैं बल्कि, हमारे गाँव के प्रधान और कद्दावर नेता भी हैं. यह गाँव ही नहीं, आस-पास के सारे गाँवों से लेकर शहर तक में उन्हें कौन नहीं जानता है. हम जैसे लोग गाँव के लेखपाल से अगर खसरा-खतौनी की प्रतियां-नकलें आदि मांगे तो कम-से-कम पांच सौ रूपये खीस के और सौलह रूपये फीस के देने होते हैं. लेकिन तुम्हारे पिता मुंसिफ, कचहरी, जिलाधीश और कोर्ट का कोई भी कागज़ निकलवा लेना तो उनके बांये हाथ का खेल है. जरूरत पड़ने पर वह कोर्ट का फैसला तक बदलवा दें. अगर इतने से भी उनका काम न बने तो अपना काम करवाने के लिए चाहें तो किसी का भी. . .'

'किसी का भी . . .तो क्या? युक्लिपटुस ने एक संशय के साथ रुकैया की मध्य में ही रोकी गई बात पूरी करते हुए पूछा तो वह जैसे डरते हुए बोली,

'खून तक करवा दें.'

'खून?'

'हां, खून ही बोल रही हूँ. लाश तक का पता नहीं चलेगा. यह मैं नहीं, बल्कि जितनों को मैं जानती हूँ, वे लोग कहते हैं. इसलिए अब मुझसे मिलना-जुलना बंद करो. ईश्वर न करे, अगर कभी भी तुम्हारे पिता ने हम दोनों को यूँ एक साथ देख लिया तो समझना कि, मेरी लाश तक नहीं मिलेगी.'

और तब सचमुच ही रुकैया और युक्लिपटुस को उसके पिता जमींदार रतनपाल सिंह ने तब देख लिया जबकि, वे दोनों रहट के द्वारा निकलते हुए पानी को एक दूसरे पर उछाल-उछाल कर खेल रहे थे. रुकैया और युक्लिपटुस तब आठवीं कक्षा के छात्र थे. दोनों युवा नहीं थे, मगर इतने छोटे भी नहीं थे कि उन्हें बालकों की संज्ञा दी जा सकती. दोनों के बदन और कार्य, सोचना-विचारना इस बात की साक्षी थे कि, युवा होने की पायदानों में अब मात्र एक-दो सीढ़ियाँ बाकी रह गई थीं. रतनपाल सिंह ने अपनी कार रुकवाई और युक्लिपटुस से रुकैया के बारे में पूछा कि, 'यह लडकी कौन है.' बाद में उसे शीघ्र ही हवेली पहुंचने को कहा.

जमींदार, रतनपाल सिंह को देख कर रुकैया का भय के मारे सारा बदन अंगारे के समान जैसे लाल हो गया. घर आकर रतनपाल सिंह ने अपने बेटे क्षेत्र पाल सिंह (युक्लिपटुस) को अपने पास बुलाया और आठवीं कक्षा के बाद उसे शहर के 'कान्वेंट' ईसाई अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में शहर में रहते हुए आगे

पढ़ने के बारे में अपना इरादा बता दिया. युक्लिपटुस को सुनकर अच्छा तो नहीं लगा, लेकिन वह करता भी क्या? पिता का आदेश था, जब समय आयेगा, तब जाना होगा तो वह चला भी जाएगा. अभी तो सालाना परीक्षाएं होंगी, स्कूल गर्मी की छुट्टियों में बंद रहेंगे. फिर जुलाई में दोबारा नये स्तर के रूप में खुलेंगे. इस प्रकार से अभी तीन-चार महीने हैं; यही सोचकर उसने अपने मन को हल्का किया. मगर एक दिन युक्लिपटुस ने रुकैया को बताया कि, अगले वर्ष वह गाँव के स्थानीय स्कूल में नहीं पढ़ सकेगा. उसके पिता बहुत अच्छी शिक्षा के लिए किसी बड़े शहर के अंग्रेजी माध्यम के ईसाई स्कूल में भेजने का प्रबंध कर रहे हैं. लगभग सारे इंतजामात हो चुके हैं. वहां पर उसे बोर्डिंग में रहते हुए पढ़ना होगा.

'?'- रुकैया अचानक ही चुप हो गई. ज़ाहिर था कि उसे युक्लिपटुस का यूँ इस तरह से गाँव के बाहर जाना सुनकर बिलकुल भी अच्छा नहीं लगा था. मगर रुकैया ने स्वयं में संयम बनाये रखा. बड़ी देर तक वह चुप तो रही, लेकिन खुद को बाद में सामान्य बनाते हुए वह युक्लिपटुस से बोली,

'तो तुम ईसाई स्कूल में पढ़ोगे?'

'हां. पिताजी की यही मर्जी है.'

'सुना है कि, ईसाईयों के अंग्रेजी स्कूल में अंग्रेजी में तो पढ़ाते ही हैं, मगर साथ में वहां पर हर समय सभी को अंग्रेजी ही बोलनी पड़ती है. अंग्रेजी में ही सारी बात-चीत आदि करनी पड़ती है. हिन्दी का वहां कोई काम नहीं होता है.'

'हां, यह तो है. लेकिन हिन्दी अपने देश की राष्ट्र भाषा है, इसलिए हिन्दी विषय का एक पीरियड बारहवीं कक्षा तक होना अनिवार्य है.'

'और मैंने यह भी सुना है कि, वहां पर ईसाई ननें ही पढ़ाती हैं. वे अपने बाल नहीं रख सकती हैं, इसलिए सिर के सारे बाल उन्हें मुड़ाने पड़ते हैं?" रुकैया ने कहा तो युक्लिपटुस ने उसे बताया कि,

'यह तो उनके 'सिस्टम' और स्कूल के प्रबंध का एक नियम है. छात्रों के लिए भी बहुत सारे नियम हैं. जब पढ़ना वहां है तो नियम भी मानने पड़ेंगे.'

'ईसाई स्कूलों में उनका रहन-सहन, खान-पान, धर्म-आराधना आदि सभी कुछ ईसाईयत के हिसाब से ही होता है. तुम अपनी पूजा-पाठ कैसे करोगे, मन्दिर आदि में कैसे जाया करोगे. होली, दीवाली आदि अपने हिन्दू त्योहारों को कैसे मनाओगे?' रुकैया ने हैरानी से पूछा तो युक्लिपटुस ने उसे बताया. वह बोला कि,

'ऐसा कुछ भी नहीं है. यह तो आस्था की बात है. जैसा विश्वास है, उसे मानो. कोई भी रोक-टोक करनेवाला नहीं है.'

'मैंने सुना है कि, एक लम्बे समय तक रहने पर हर किसी के संस्कार बदल जाते हैं. तुम भी जब तक अपनी पढ़ाई पूरी करके निकलोगे तो ईसाई बन चुके होगे?'

'हो सकता है. एक ही स्थान पर लम्बे समय तक रहते हुए इंसान के संस्कारों में परिवर्तन तो आता ही है. रही बात मेरी, तो मैं ईसाई तो नहीं बन सकता हूँ, पर हां वहां रहने पर काफी-कुछ ईसाई संस्कार, स्वभाव्, बात करने का ईसाई तरीका आदि, बहुत कुछ मेरे जीवन में समा जाए. और वैसे भी जो अच्छी-अच्छी बातें हैं, वे चाहे किसी भी धर्म-समाज की ही क्यों न हो, उन्हें अपनाने में कोई बुराई तो नहीं है.'

उसके बाद दोनों की बातें समाप्त हुई. शाम हो चली थी. आस-पास के पेड़ों आदि पर अपने बसेरे के लिए कबूतरों के झुंड अपने पंख फड़-फड़ाने लगे थे. अन्धेरा बढ़ने लगा था. रुकैया उठकर अपने घर चली गई तो युक्लिपटुस भी जैसे बुझे मन से हवेली में आ गया.

सालाना परीक्षाएं जब तक हुई और जब तक समाप्त नहीं हो गईं, तब तक रुकैया और युक्लिपटुस, दोनों का वही पुराना रवैया बना रहा. दोनों ही पहले के समान मिलते-बैठते, बातें करते; मगर कभी भी दोनों में से एक भी अपने मन की भावनाओं को उजागर नहीं कर सका. दोनों ही एक-दूसरे को जानते थे. मानते थे, समझते थे और पसंद भी करते थे; मगर अपने मन में एक-दूसरे को आकर्षित करनेवाली भावनाओं का इज़हार कोई भी नहीं कर सका.

सालाना परीक्षाएं हो गईं. स्कूल बंद हो गये. गाँव में रहते हुए रुकैया युक्लिपटुस को कभी मिलती तो कभी नहीं भी मिलती. जब भी मिलती तो दोनों के मध्य एक-दो बातें हो जातीं. फिर एक दिन रुकैया काफी दिनों के लिए जैसे गायब-सी हो गई. काफी दिनों तक वह गाँव में नज़र ही नहीं आई. उधर युक्लिपटुस को उसके पिता ने शहर भेज दिया ताकि वह अपने अगले वर्ष की पढ़ाई के लिए उस ईसाई स्कूल और बोर्डिंग आदि को भी देखभाल ले. और जब युक्लिपटुस शहर से पूरे तीन महीनों के बाद गाँव वापस आया तो वह अचानक से नज़र आई तो युक्लिपटुस से नहीं रहा गया. वह उसे एकांत में एक सुरक्षित स्थान में ले आया और उस पर प्रश्नों की ताबड़-तोड़ बरसात-सी कर दी. उत्तर में रुकैया ने अपनी जुबान भी नहीं खोली. वह केवल रोती रही.

आंसू बहाती रही. तब युक्लिपटुस ने उसे गौर से देखा. उसकी आँखों में बहुत कुछ पढ़ना और जानना चाहा. मगर सफल नहीं हो सका. तब उसने रुकैया को ध्यान से देखा. उसके बदन को निहारा और उससे पूछा कि,

'चलो, ठीक है. नहीं बताना चाहती हो तो मत बताओ. लेकिन यह तो बता दो कि, तुम कहीं भी मेहमानी खाने गई थीं तो क्या मोटी होने भी गई थी? तुम्हारा पेट क्यों बढ़ रहा है?'

'?'- रुकैया का चेहरा अचानक ही सफेद हो गया.

उसने फिर युक्लिपटुस की कोई भी बात नहीं सुनी और ना ही अपनी तरफ से कुछ कहा. वह फुर्ती से अपने स्थान से उठी और किसी हिरनी के समान तेज भागती-दौडती हुई सीधे गाँव में अपने घर चली गई. युक्लिपटुस बड़ी हैरानी के साथ, रुकैया की इस बदली हुई मुद्रा, हाव-भाव और तेज भागते हुए कदमों को देखता ही रह गया. इस दिन के बाद से युक्लिपटुस को रुकैया फिर कभी भी नहीं मिली. जुलाई के महीने में स्कूल खुलते, इससे पहले ही उसके पिता ने उसको उस बड़े महानगर के किसी अंग्रेजी माध्यम के ईसाई स्कूल में भेज दिया, जहां पर छात्रों के लिए रहने को बोर्डिंग/हॉस्टल की भी सुविधा थी. साथ ही उस महानगर में रतनपाल सिंह का अपना आधुनिक वस्त्रों का एक व्यापार भी चलता था. उनका उस शहर में एक बड़ा ही आलीशान शो-रूम था और एक भव्य दुकान भी थी. आनेवाले दिनों में अपने पिता का सारा कारोबार आदि उसे ही सम्भालना होगा; . . . सोचते हुए युक्लिपटुस कब सो गया., उसे ज़रा भी एहसास तक न हो सका.

दूसरे दिन हवेली में पिछले बीस सालों से मुनीमगीरी और एक प्रकार से लेखाकार का काम करते हुए मुनीम जी आये तो आरम्भिक नमस्ते आदि के बाद युक्लिपटुस ने पहले तो सारी जमीनों का हिसाब-किताब देखा. मतलब कि, उसकी अनुपस्थिति में कौन से जमीनें बेची गई और कौन सी खरीदी गई हैं, इस तरह की तमाम जानकारी युक्लिपटुस ने मुनीम जी से प्राप्त की. इतना सब देखते हुए उसने मुनीम जी से केवल एक ही सवाल किया. वह बोला कि, आज से बीस साल पहले मैं शहर गया था. और आज वापस आया हूँ. मुझसे पहले आप और पिताजी ही यह सब देखभाल रहे थे. लेकिन, एक बात मेरी समझ में नहीं आती है कि, पिताजी के पास आरम्भ में केवल बासठ बीघा जमीन थी, मगर पिछले बीस सालों में उनकी जमीनें आज दो सौ तिरपन बीघा कैसे हो गई? ऐसा तो कहीं नहीं दिखाई देता है कि, जमीनों का कहीं भी व्यापार किया गया हो. मेरा मतलब कि, कोई जमीन कम दामों पर खरीदी गई हो और बड़ी

कीमत पर बेची गई हो. जमीनें अगर बढ़ी हैं तो केवल खरीद कर ही. दूसरी बात खरीदी गई जमीनों में कुछ नाम लाल स्याही से लिखे गये हैं, कुछ हरी स्याही से लिखे हैं तो बहुत सारे नीली स्याही से भी हैं. ऐसा क्यों?'

युक्लिपटुस को समझाने के लिए मुनीम जी ने बहुत सारे उत्तर दिए. हर तरह से समझाया और अंत में यह कहकर अपने हाथ झाड़ लिए कि, वह तो जमीदार साहब के एक अदना से मुलाजिम थे. उन्होंने वही किया और लिखा है, जैसा कि उन्हें जमींदार साहब से आदेश मिलते थे. तब मुनीम जी के चले जाने बाद, युक्लिपटुस ने हवेली के एक और बहुत पुराने नौकर से पूछा. उससे कहा कि,

'मैं जब यहाँ रहता था तो मेरे साथ एक गाँव की लड़की भी पढ़ा करती थी. उसका नाम रुकैया था. मगर मुझे उसके बारे में कुछ भी नहीं पता चला. आज सुबह-सुबह मैं जल्दी उठकर जब उसके घर गया था तो उसका घर खंडर पड़ा हुआ है. तुम बता सकते हो उसके बारे में कुछ? क्या हुआ? अब वह कहाँ पर है?

'?'- युक्लिपटुस की ऐसी बात सुनकर उस नौकर के चेहरे पर जैसे हवाईयां-सी उड़ने लगईं.

'?'- युक्लिपटुस ने उसके चेहरे के बदले हुए हाव-भाव देखे तो उसने कहा कि,

'देखो, तुम्हें मालुम है तो मुझे बता दो. मैं वायदा करता हूँ कि, तुम्हारा कोई भी नुक्सान नहीं होगा, बशर्ते तुम खुद भी किसी ऐसे-वैसे कामों में लिप्त नहीं हुए होगे.'

'छोटे जमींदार साहब ! मेरी ऐसी औकात कहाँ है जो मैं, ऐसी-वैसी बातों से कुछ भी सरोकार रखता. जो रखता था, वह तो खुद ही ऊपर वाले को प्यारा हो चुका है. सही बात तो यह है कि, इस हवेली के अंदर होनेवाले कार्यों के प्रति और बड़े ठाकुर के कामों के बारे में, मैं तो क्या ही, सारा गाँव ही जानता है. यही कारण है कि, आज भी इस तरफ गाँव का मनुष्य तो क्या एक काना परिंदा तक सही नज़रों से देखता तक नहीं है. आपकी हवेली के तहखाने में आज भी न जाने कितनी दुखियाओं की आत्माएं, रो रही हैं, तड़पती हैं, आंसू बहाती हैं, चीखती हैं, चिल्ला रही हैं; मगर उनकी सुनने वाला कोई भी नहीं है. आप जो मुनीम जी से पूछ रहे थे, कि हरे, लाल और नीले रंग की स्याही का मतलब क्या है? तो लाल रंग की स्याही से लिखी जमीनें उन लोगों की हैं जिनकी गैर-कानूनी ढंग से हथियाई गई हैं.'

'?'- अपने ईमानदार नौकर से ऐसी अप्रत्याशित बात को सुनकर युक्लिपटुस को अचानक से ऐसा लगा कि, जैसे किसी अपने ने ही उसके मुंह पर लात मार दी है. अपने ही घर में, अपने ही बिछौने पर जिस पर वह बैठा हुआ है, अपने खानदान के खूनी रंग देखकर वह अचानक ही उठकर खड़ा हो गया. बड़ी देर तक वह बुतों समान, मृतक-सा बना खड़ा रहा. फिर अचानक ही धम से वहीं बैठ गया.

काफी देर के बाद युक्लिपटुस के सामने रुकैया की जो दर्दभरी, चीखती-चिल्लाती कहानी निकल कर सामने आई, उसके अनुसार रुकैया के साथ भी वह सब कुछ हुआ था, जो सालों से गाँव की हरेक सुंदर युवती के साथ होता आ रहा था. युक्लिपटुस को अचानक ही याद आया कि, जब काफी दिनों के बाद वह रुकैया से मिला था तो उसके गुम-सुम और चुप, खामोश रहने का कारण भी यही था. जब उसने रुकैया से पूछा था कि, 'उसका पेट क्यों बढ़ रहा है?' तब तक उसके साथ उपरोक्त जघन्य अपराध हो चुका था. फिर जब रुकैया के पिता को पता चला तो वह भी उसके पिता के सामने रोये, गिड़-गिड़ाये थे. लेकिन जब उसकी नहीं सुनी गई तो उसने अदालत में जाने की धमकी दी थी, मगर अदालत में पहुंचने से पहले ही उसे ऊपर वाले की अदालत में भेज दिया गया था. बाद में रुकैया को धमका दिया गया था कि अगर उसने अपना मुंह खोला तो साथ में उसकी मां को भी मार दिया जाएगा. इस तरह से रुकैया चुप रही. शांत रही. अंदर ही अंदर घुटती रही, हर रोज़ थोड़ा-थोड़ा मरती रही, मगर मुख से उफ़ तक नहीं किया. उसने अपने बच्चे को एक कुंवारी मां बनकर जन्म दिया तो गाँव वालों ने उसे उसकी मां के साथ गाँव से बाहर निकाल दिया. गाँव के बाहर रहते हुए उसने अपने बच्चे की परवरिश की, उसे पाला और उसका नाम 'युक्लिपटुस' इसलिए रखा क्योंकि, उसके बेटे की लम्बाई भी सफ़ेदे के पेड़ के समान ही थी. एक दिन जब उसकी मां भी चल बसी तो दूर गाँव के एक चचेरे भाई ने उसे संभाल लिया. वह उसकी देखभाल करता रहा. मगर बाद में रुकैया भी चल बसी तो उसका लड़का 'युक्लिपटुस' अकेला रह गया.

उपरोक्त सारी बातों की सच्चाई सुनकर युक्लिपटुस की आँखों में स्वत: ही आंसू उस किसान की दशा के समान भर आये कि, जिसकी पकी फसल अचानक ही आग लगाकर बर्बाद कर दी गई हो. युक्लिपटुस यह सब जान और सुनकर ना तो रो सका और ना ही रुकैया के प्रति अपनी कोई भी संवेदनाएं ही दे सका. वह तो समझता था कि इस प्रकार की कहानियां वह आज तक अखबारों, टी. वी. पर और रोजमर्रा की खबरों में सुर्ख़ियों में पढ़ता-सुनता आया

था; उसे क्या मालुम था कि, कुंवारी लड़कियों के साथ हुए योनाचार जैसे अपराधों और बेबस मां बनने वाली भोली-भाली युवा लड़कियों के सारे किस्से-गाथाओं की पोथियाँ तो उसकी अपनी हवेली की कोख में बंद कर दी गई हैं. . .'

'. . .सोचते हुए युक्लिपटुस की आँखों के सामने अन्धेरा छाने लगा. वह समझ नहीं पाया कि, अचानक से उसकी आँखों के समक्ष छा जानेवाला यह अन्धकार उसके खानदानी जुर्मों के इतिहास के आये हुए काले बादलों की तरफ से है या फिर रुकैया के मन में अपने अनकहे प्यार की अग्नि का जला दीप बुझ जाने के कारण? जब भी वह अब कभी इन सफ़ेदे के ताड़ जैसे गगनचुम्बी पेड़ों को देखा करेगा तो रुकैया की कही हुई यही बात याद किया करेगा कि, 'क्या वह सचमुच ही लम्बा, ताड़-सा, खोखला बांस समान, एक ठठेरा जैसा है, जो अपने ही गाँव की भोली, बाला रुकैया के लिए कुछ भी नहीं कर सका है? क्या उसका ल्म्बापन मात्र देखने ही भर के लिए है?'

'छोटे जमींदार साहब !'

'?'- युक्लिपटुस ने अचानक देखा तो घर का नौकर उससे ही सम्बोधित था.

'ठाकुर साहब, वह जो लम्बा सा लड़का आपका बक्सा अपने सिर पर रख कर, हवेली तक लाया था, वही रुकैया का लड़का है. मेरा मतलब आपका . . .'

'छोटा भाई. . .?' युक्लिपटुस अपने मन में ही चुपचाप दोहरा गया. नौकर आगे कुछ और कहता, इससे पहले ही उसने नौकर से कहा कि,

'अब तुम जाओ और मुझे कुछ देर के लिए अकेला छोड़ दो.'

'?'- नौकर बहुत खामोशी के साथ, अपना सिर झुकाए और यह कहकर कि, 'जी, बहुत अच्छा', कमरे से बाहर चला गया. उसके जाने के पश्चात युक्लिपटुस अपना सिर पकड़कर वहीं सोफे में अंदर तक धंस गया. कड़वे अतीत की ज़ख्मों से सराबोर कहानी ने जैसे सारी हवेली का माहोल भी बोझिल कर दिया था.

बाद में युक्लिपटुस अपने गाँव और हवेली में दो सप्ताह और रुका. इन दो सप्ताहों में उसने जैसे एक क्रांतिकारी काम करके सारे गाँवों वालों को आश्चर्य में ड़ाल दिया. उसके पिता ने जिन-जिन किसानों की जमीनें गलत ढंग से हडप ली थी, उन सबको उसने बाकायदा कागज़ात के साथ उन्हें वापस कर दिया. रुकैया के लड़के 'युक्लिपटुस' की भी जमीन को भी उसने उसे दे दिया. इसके अतिरिक्त, उसने गाँव में एक अच्छा स्कूल खोलने की भी घोषणा कर दी. बाद में उसने रुकैया के लड़के से यह भी कहा कि, 'यह उसकी मर्जी है कि, वह गाँव में ही रहकर अपनी खेतीबाड़ी देखे, पढ़ाई करे अथवा चाहे तो वह उसके साथ शहर भी चल सकता है और शहर में रहते हुए पढ़-लिखकर अपने जीवन में और

भी तरक्की कर सकता है. आसमान की ऊंचाइयों से सचमुच एक 'युक्लिपटुस' के वृक्ष के समान ही बातें भी कर सकता है. मैं तुम्हारी मां का उजड़ा हुआ चमन दोबारा बाहरों से तो नहीं सजा सकता हूँ, पर हां तुम्हारे जख्मों पर मरहम रखने की कोशिश जरुर करता रहूंगा.'

अपना गाँव छोड़ने से पहले उसने यह साबित कर दिया था कि, 'माता-पिता के दुष्कर्मों की सजा अगर संतानें उठाती हैं, तो वही संताने उनके दुष्कर्मों को सुकर्मों में बदलने का प्रयास तो कर सकती ही हैं. रुकैया, उसके प्रतिष्ठित पिता रतनपाल सिंह और रुकैया का लड़का युक्लिपटुस'- ये तीन महत्वपूर्ण जीवन उसकी ज़िन्दगी में आये थे. सवाल यह नहीं है कि, इन तीनों में कौन छोटा, कौन बड़ा और कौन सुप्रतिष्ठित हो सकता है? असली मुद्दा तो यही है कि, इन तीनों में से किसको क्या मिला या समय ने किसकी झोली में क्या ड़ाल दिया है? और यह सब क्यों हुआ? जो हुआ, उसके होने की महज व्याख्या ही की जायेगी अथवा फिर से कभी भी न हो; इस बारे में प्रयत्न भी किये जायेगें. अगर हम सब मिलकर यह प्रयास भी नहीं कर सकते हैं तो रुकैया की कहानी आज जैसे अंतहीन अंत बनकर समाप्त नहीं हुई है, आने वाले कल में न जाने कितनी रुकैया जैसी ग्रामीण बालाओं की कहानियाँ अतीत के अंधेरों में दबती रहेंगी, मिटती रहेंगी और लुप्त होती रहेंगी.

काका शिकोहाबादी के दोहे

रात-रात और दिन में, गई बात की बात,
अपनी-मेरी कह ले, मत कर ओरों की बात.

चंदा गर न चले रात भर, तारे बढ़ें न एक पग
ऐसी जलन की मार, लग जाए तो हंसता है जग.

तू ऐंठ में अकड़ गया, मैं नम्र में गया पिघल,
छछूंदर गले में आ गई, निकाली जाय, न निगल.

तू पैसों से गर्म है, मैं गरीब की आँख,
तू गर्मी से जल जा, गरीब है मीठी दाख.

चंदा, दुआ, आराधना और स्तुति के आयाम,
जिससे भी पूछा सवाल, वह भूल गया प्रणाम.

इस्राएल और पलिस्तीन का झगड़ा

Prayers infront of wailing wall- photograph by Chetna.com, 2007

वर्तमान के हालात-

अभी पिछले दिनों 11 दिन की इस्राएल और पलिस्तीन में हुए युद्ध के बारे में चाहे किसी को मतलब न हो पर भावुक रूप से तीन धर्मों के अनुयायी क्रमश: ईसाई, यहूदी और मुसलमान अवश्य ही प्रभावित हुए होंगे. इस लड़ाई के पीछे जो मुख्य कारण था वह यही कि, यहूदी अपना यरूशलेम दिवस वेलिंग वाल के सामने मना रहे थे. ठीक इस दीवार के पीछे ही अल अकशा मस्जिद में फिलिस्तीनी अपनी रमजान की नमाज़ पढ़ रहे थे. यहूदियों को यरूशलेम दिवस की खुशियाँ मनाते देख अल अकशा मस्जिद में नमाज़ पढ़ने आये हुए फिलिस्तीनियों ने यहूदियों पर पत्थर फेंकने आरम्भ कर दिए थे. यहूदी अपना यरूशलेम दिवस अपनी 1967 की वह लड़ाई जिसमें, इस्राएल पर तीन देशों मिस्र, सीरिया और जॉर्डन ने एक साथ मिल कर हमला इस उम्मीद पर कर दिया था कि वे इस्राएल का नाम और नक्शा विश्व के नक्शे से मिटा देंगे. मगर उस समय की इस्रायली प्रधान मंत्री गोल्डा मायर और अमरीकी राष्ट्रपति निक्सन की सहायता के फलस्वरूप छः दिन की भीषण लड़ाई के बाद इस्राएल ने

अपार जीत हासिल की थी. इसी जीत की खुशी में यहूदी अपना राष्ट्रीय दिवस मनाते हैं. बस फिर क्या था कि, यहूदियों और फिलिस्तीनियों; दोनों में पत्थरबाज़ी होने लगी और विशाल झगड़े का रूप ले लिया. फिर जब आगजनी होने लगी तो इस्राएली पुलिस को वहां आना पड़ा. पुलिस मुसलमानों की मस्जिद में घुसी और तब गाजा पट्टी से हमास के संगठन ने यरूशलेम की तरफ राकेट और मिसायलें बरसानी आरम्भ कर दीं. बदले की कार्यवाही में इस्राएल ने गाजा में हमास पर रोकेट, लड़ाकू हवाई जहाज और अपनी जमीनी सेना के द्वारा ताबड़-तोड़ हमले कर दिए. इसमें कोई शक नहीं है कि, इस लड़ाई में सबसे ज़्यादा नुक्सान हमास के गाजा में हुआ है. हर दिन की बमबारी की बजह से फिलिस्तीन के 200 से अधिक लोग मारे गये जिनमें 63 बच्चे और 30 महिलाएं भी हैं. फिर जब गाजा से लोग भाग कर मिस्र में जाने लगे तब हमास ने यू एन ओ से इस लड़ाई को बंद करवाने की गुहार लगाई और फिर यह लड़ाई बंद कर दी गई है. लेकिन यह युद्ध कब तक थमा रहेगा, इसमें अभी संदेह है.

अल अक्शा मस्जिद का प्रांगण संसार के तीन बड़े धर्मों, ईसाई, मुस्लिम और यहूदियों के लिए पवित्र स्थान का केंद बिंदु है. इसी के प्रांगण में डॉम औफ़ दी रॉक का गुम्बज भी स्थापित है.

अल-अक्सा मस्जिद इस्लामी आस्था की सबसे पवित्र संरचनाओं में से एक है. यह मस्जिद 35 एकड़ भूमि में है. मुस्लिम समुदाय इसको हरम-अल-शरीफ और यहूदी समुदाय इस स्थान को टेम्पल माऊंट के नाम से जानते हैं. यह जगह मुख्य रूप से ईसाइयों और मुसलमानों के लिए बे-हद पवित्र मानी जाती है

और यरूशलेम के पुराने शहर के नाम से विख्यात है. मुस्लिम समुदाय का विश्वास है कि, उनके पैगम्बर मुहम्मद मक्का से यात्रा करके इसी स्थान पर आये थे और यहीं से वे स्वर्ग में अल्लाह के पास गये थे. फिर वहां से कुरआन शरीफ को लेकर अल-अक्शा में उतरे थे, तब वे यहाँ से मक्का चले गये थे. इस बड़े और विशाल, खुले स्थान को मुसलमान पाक मानते हैं और यहीं पर वे अपनी नमाज़ अदा किया करते हैं.

टेम्पल माऊंट को यहूदी भी बेहद पवित्र मानते हैं और इब्रानी भाषा में इसे 'हर-हैबियत'- नाम से पुकारते हैं. क्योंकि, 1967 में फिलिस्तीन से भारी जीत के बाद प्रसिद्ध इजरायली सेना रेडियो ने एक प्रसारण किया था 'Har Habayit B' Yadenu, Har Habayit B' Yadenu- टेम्पल माउंट हमारे हाथ में है, मंदिर माउंट हमारे हाथ में है.' यहूदियों का विश्वास है कि, इसी स्थान पर उनके मशहूर राजा सुलेमान ने पहला यहूदी मन्दिर बनवाया था. बाइबल के अनुसार इस मंदिर को बेबीलोनियन ने नाश कर दिया था. फिर इसी स्थान पर दूसरा मन्दिर लगभग 600 बी.सी. में राजा हेरोदेस ने बनवाया था. मगर इस मन्दिर को भी रोमियों ने सन 70 में यहूदियों की बगावत के कारण तोड़ डाला था और उसकी बाहरी दीवार जिसे वैलिंग वाल भी कहते हैं, इसलिए छोड़ दिया था ताकि, यहूदी इस दीवार को मन्दिर के खंडर समझते हुए फिर कभी रोमियों से बगावत करने का साहस न कर सकें. आधुनिक समयकाल में इस दीवार को 'यूनेस्को' (The United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization, UNESCO.) ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्व देते हुए सम्पूर्ण सुरक्षा पर ध्यान देने को कहा है.

सन 1967 की लड़ाई में अपनी भारी जीत के बाद यरूशलेम को अपनी राजधानी घोषित कर दिया, मगर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अभी भी इसको मान्यता नहीं मिल सकी है. अमरीका पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के द्वारा भी दिसम्बर 06, 2017 को यरूशलेम को इस्राएल की राजधानी घोषित किया जा चुका है. इसी आपसी झगड़े में इस्राएल और फिलिस्तीन, दोनों अपनी-अपनी मान्यताओं के साथ इस स्थान पर अपना अधिकार जताते हैं, मगर अभी भी यरूशलेम पर इस्राएल और फिलिस्तीन, दोनों में से किसी का भी अधिकार नहीं है. इसलिए अधिक वाद-विवाद न हो और झगड़ेबाजी न हो, यरूशलेम में अल-अक्शा मस्जिद और रॉक औफ़ दी डोम का संचालन वक्फ नामक संस्था के अंतर्गत जॉर्डन को दे रखी है. यह प्रबंध सन १९९४ में एक शान्ति बनाये रखने के लिए शान्ति समझौता इस्राएल और फिलिस्तीन के मध्य हुआ था जिसे 'जॉर्डन के साथ शान्ति समझौता' - Peace treaty with Jordan' नाम से जाना जाता है.

इस्राएल की पुलिस इस स्थान पर शान्ति बनाये रखने के लिए बराबर अपना सहयोग वक्फ को देती रही है. यही कारण है कि ईसाई और यहूदी अभी यह स्थान देखने के लिए आमंत्रित हैं, मगर मुसलमानों के अनुसार रॉक ऑफ़ द डोम के प्रांगण में मुसलमानों के अतिरिक्त किसी अन्य को अपनी इबादत करने की अनुमति नहीं है. यहूदी अपनी प्रार्थना टेम्पल माऊंट के चारो तरफ बनी हुई वेलिंग वाल के सामने ही प्रार्थना कर सकते हैं.

A view of holyland from mount of olive- photograph by Chetna.com, 2007

बाइबल के समय का इतिहास

बाइबल का इतिहास इस्राएल के लिए उस समय से आरम्भ होता है जब परमेश्वर ने इब्राहीम की अपने प्रति भक्ति को देख कर उसे ईराक देश के उर नगर से बुलाया था और कनान देश जाने के लिए कहा था, और कहा था कि वह कनान देश जिसे आज का फिलिस्तीन कहते हैं, उसे और उसके वंशों को देगा. तब इब्राहीम अपना देश छोड़कर कनान देश में आकर मामे के बाँझ वृक्षों के तले अपना तम्बू गाड़कर रहने लगा था. फिर परमेश्वर की बात जैसे आई-गई हो गई और इब्राहीम की पत्नी सारा के उसकी 90 वर्ष की आयु तक कोई सन्तान नहीं हुई, क्योंकि वह बाँझ थी. तब सारा ने इब्राहीम को अपनी दासी हाजरा को उसकी पत्नी बनाने के लिए कहा और यह शर्त रखी कि, जब हाजरा अपने बच्चे को जन्म दे तब वह उस बच्चे को सारा की जांघ पर जन्म दे और इस रीति से वह सन्तान तब सारा की कहलायेगी. फिर ऐसा ही हुआ भी और हाजरा ने इश्मायल को जन्म दिया. मगर बाद में परमेश्वर ने अपने वचन को पूरा किया और सारा गर्भवती हुई. जब इश्मायल 13 वर्ष का हुआ तब उसका और इब्राहीम का खतना एक ही दिन और एक ही समय पर हुआ. इसके बाद सारा ने अपने पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम इसहाक रखा गया. जब

सारा को अपने खुद के पुत्र की प्राप्ति हो चुकी तब सारा ने इब्राहीम के द्वारा हाजरा और उसके पुत्र को घर से निकलवा दिया और इस प्रकार हाजरा अपने पुत्र इश्मायल के साथ अरब देश की तरफ चली गई. इस प्रकार से इश्मायली जाति का उद्गम हुआ. उधर, इसहाक से याकूब और याकूब से 12 गोत्र जिनमें एक गोत्र का नाम यहूदा के गोत्र से आया, यहूदी कौम का आरम्भ हुआ. याकूब का नाम परमेश्वर ने 'इस्राएल' रखा था और उससे उत्पन्न उसके 12 पुत्र ही इस्राएल कहलाये थे.

इस्राएल और फिलिस्तीन के झगड़े और विवाद का मूल कारण यहीं से आरम्भ होता है. इस्राएलियों का विश्वास है कि, फिलिस्तीन देश उनको उनके परमेश्वर ने उनके मूल पिता इब्राहीम जो बाद में अब्राहम भी कहलाया, उसे दिया है. फिलिस्तीनी विश्वास करते हैं कि, इश्मायल भी अब्राहम का पुत्र है, इसलिए फिलिस्तीन देश पर उनका भी अधिकार है. दोनों का कहना एक प्रकार से सही भी है, मगर एक तर्क है कि, क्या वास्तव में इश्मायल से इश्मायली जाति पैदा हुई थी अथवा मुस्लिम जाति? क्योंकि मुस्लिम विश्वास करते हैं कि, इश्मायल से अरब देश में मुसलमानों का उद्गम हुआ है.

यीशु मसीह का जन्म अब्राहम के लगभग 4000 हजार सालों के बाद ए. डी. 2-4 के मध्य हुआ था. मुसलमानों के पैगम्बर मुहम्मद का जन्म सन 610 में हुआ था. सन 630 में उन्होंने इस्लाम धर्म की स्थापना की थी, अर्थात यीशु मसीह के पुनरुत्थान के 630 सालों के बाद. कहने का आशय है कि, मुहम्मद से पहले ना तो मुसलमान थे और ना ही कुरआन और अल्लाह के बारे में भी कोई नहीं जानता था. दूसरी मुख्य बात, जब आज के फिलिस्तीन (कनान देश) पर इस्राएलियों ने यहोशू के नेतृत्व में अधिकार किया था, तब भी वहां पर मुसलमान नहीं रहते थे. तब वहां पर कनानी रहते थे और वे सब मूर्तिपूजक थे. और जब ऐसा है तो वर्तमान के फिलिस्तीनी किस आधार पर उसे अपना देश होने का अधिकार देते हैं, यह बात बिलकुल समझ से परे है. और अगर यह बात कहीं पर लिखी है या कहीं पर है तो उसे आवश्यक है कि, सबके सामने लाया जाए.

इस्राएल और फिलिस्तीनियों की लड़ाई कोई आज और कल की नई बात नहीं है. यह लड़ाई तो सदियों से होती आई है. बाइबल के हिसाब से नीचे देखिये कि किस तरह से इस्राएल लड़ाइयों और विवादों में घिरा रहा है;

- 1000 बी. सी. राजा दाऊद ने यरूशलेम शहर पर अपना कब्जा किया था.

- 586 बी.सी. में बेबीलोनियन ने इस शहर को बर्बाद कर दिया.
- 332 बी. सी. में सिकन्दर महान ने इसे अपने अधिकार में लिया.
- 320 बी. सी. में यह मिस्र के अधिकार में चला गया.
- 198 बी. सी. में इस नगर पर सेलुसाइड, सीरिया ने अपना अधिकार कर लिया.
- 168 बी. सी, ने सेलुसाइड, सीरिया ने इसकी शहरपनाह को नष्ट कर डाला.
- १६५ बी. सी. में यहूदियों ने इसे स्वतंत्र कराया और अपने अधिकार में लिया.
- 63 बी. सी. में रोमी आये और इस पर अपना कब्जा कर लिया. उन्होंने इसकी शहरपनाह को भी नष्ट किया.
- 66 ए. डी. में यहूदियों ने रोमियों के अत्याचार के विरोध में बगावत की.
- 70 ए. डी. में मसादा यहूदी बगावत फिर से हुई तो रोमियों ने यरूशलेम की शहरपनाह के साथ दूसरा यहूदी मन्दिर भी तोड़ डाला और यादगार के रूप में इसकी बाहरी दीवार जो वैलिंग वाल कहलाती है, को छोड़ दिया.
- 132 ए. डी. यहूदियों ने फिर से यरूशलेम पर कब्जा कर लिया.
- 135 ए. डी. में रोमियों ने फिर से इसे वापस अपने अधिकार में ले लिया. शहर को उन्होंने दोबारा बनाया और बसाया लेकिन यहूदियों को शहर से बाहर निकालकर उनके आने पर रोक लगा दी.
- 638 ए. डी. अरब के मुसलमानों ने हमला किया और रोमियों को भगाकर यरूशलेम पर कब्जा किया तथा जहां पर टेम्पल माऊंट था, ठीक उसी स्थान पर डॉम ऑफ़ द रॉक की स्थापना कर दी.
- सन 1071 में सेल्जुक के तुर्क के तुर्क-फारसी सुन्नी मुसलमानों ने इसे अपने अधिकार में ले लिया.
- सन 1099 क्रुसेडर्स आये और उन्होंने तुर्क मुसलमानों को मार भगाया और येरूशलेम को अपने अधिकार में ले लिया.

- सन 1187 में मुसलमानों ने इसको फिर से अपने अधिकार में कर लिया.
- सन 1517 में तुर्की के ओटोमन के राजा ने येरूशलेम को अपने अधिकार में ले लिया.
- सन 1917 में बिट्रिश ने येरूशलेम को अपने अधिकार में कर लिया.
- सन 1949 में हुई लड़ाई के बाद येरूशलेम को दो यहूदी और पलिस्तीन के दो भागों में बांटा गया.
- सन 1967 में छः दिन की लड़ाई के बाद यहूदियों ने लगभग सारे पलिस्तीन पर अपना अधिकार कर लिया और गाजा पट्टी तथा फिलिस्तीन का थोड़ा सा भाग जो आज की स्थिति है, छोड़ दिया.

बाइबल के इतिहास के बाद की स्थिति

नया नियम के अनुसार, यीशु मसीह के बलिदान के बाद यहूदियों का अपने पापों के कारण पशुओं की बलि की प्रथा लगभग समाप्त सी हो गई थी. यह सब सन 70 में यहूदी विद्रोह के बाद हुआ था. हांलाकि, बाद में यहूदियों ने कई सालों के लिए रोमियों को अपने देश से बाहर कर भी दिया था, मगर बाद में रोमी फिर से आये और यहूदियों पर राज्य करने लगे. इतना ही नहीं रोमियों ने यहूदियों को भी रोम से बाहर कर दिया था. इस बार तहस-नहस हुआ यहूदी मन्दिर फिर दोबारा कभी भी नहीं बन सका. बाद में जब हेड्रियनस ने रोमी नगर फिर से बसाना आरम्भ किया तो यहूदियों ने फिर से विद्रोह शुरू कर दिया. सन 135 में हुई इस लड़ाई में यहूदी हार गये और हेड्रियनस ने तब यहूदियों को यरूशलेम में घुसने तक पर पाबंदी लगा दी थी.

लगभग 200 साल के बाद रोम के सम्राट कांस्टेंटतायन ने मसीही धर्म को आधिकारिक तौर पर सरकारी मान्यता दे दी और इस्राएल की पवित्र धरती पर चर्च तथा अन्य मसीही धार्मिक इमारतें बनवानी आरम्भ कर दीं. होली स्पलचर चर्च उसी समय की यादगार है. मसीहियों का विश्वास है कि, यह चर्च उसी स्थान पर बना हुआ है जहां पर यीशु मसीह को सलीब दी गई थी और इसी जगह पर कभी 100 साल पहले हेड्रियन ने अपने देवता वीनस का मन्दिर यीशु मसीह की यादगार को सदा-सदा के लिए मिटाने को बनाया था. इन्हीं दिनों यरूशलेम में आधिकारिक तौर पर प्रथम मसीही कलीसिया भी बनाई गई.

इसमें कोई भी संदेह नहीं है कि, यरूशलेम की धरती हमेशा से ही विभिन्न धार्मिक समुदायों के द्वारा, इस पर अधिकार लेने की खातिर, इंसानों के खून से लाल होती रही है. यहूदियों के लिए यह स्थान केवल एक पवित्र धरती है, मसीहियों के लिए यह स्थान यीशु मसीह का बलिदान स्थान और मृतकों में से फिर जी उठने और स्वर्गारोहण का पवित्र स्थान है तथा मुसलमानों के लिए, वह स्थान है जहां से वे विश्वास करते हैं कि, उनके पैगम्बर मुहम्मद आसमान में अल्लाह से मिलने गये थे. मुसलमानों ने इस स्थान को लेने के लिए 600 ए. डी. में अपने हमले करने आरम्भ कर दिए थे और इस तरह से उन्होंने यरूशलेम पर कम से कम 12-13 सदियों तक राज्य किया. क्रुसेडर्स बहुत कम समय के लिए यहाँ आये और सन 1099 में उन्होंने मसीही धर्म को फिर से इस स्थान पर लाकर स्थापित किया.

यहूदियों ने यहाँ केवल थोड़ा सा काम किया. सन 1800 में यहूदियों ने यहाँ वापस आना शुरू किया और फिर यहाँ की भूमि को स्थानीय पलिस्तीनियों से खरीदकर उस पर यरूशलेम के नागरिकों का एक बड़ा समूह बसाने की कोशिश की. और इस प्रकार सन 1948 की लड़ाई की जीत के बाद इस्रालियों ने बाकायदा अपने जीते हुये क्षेत्र को इस्राएली राष्ट्र घोषित कर दिया. इस लड़ाई की जीत के बाद इस्राएल देश पर पश्चिमी यरूशलेम, (पुराने नगर को छोड़कर) पवित्र भूमि, पश्चिमी दीवार, पर अपना अधिकार कर लिया. लेकिन 1967 की लड़ाई में हुई जीत के बाद इस्राएलियों ने गाजा पट्टी और वेस्ट बैंक को छोड़कर समूचे फिलिस्तीन पर अपना अधिपत्य कर लिया है.

वर्तमान में यरूशलेम

यरूशलेम की स्थिति वर्तमान में जैसे नगर के एक किनारे पर रख दी गई है. जनसंख्या के आधार पर वहां रहनेवालों में तीन में से दो पुरुष यहूदी हैं. फिलिस्तीनियों के आतंकी हमलों के बारे में यहूदी बहुत सतर्क रहते हैं, क्योंकि उन्हें नहीं मालुम होता है कि, फिलिस्तीनी उनके लिए बम रेस्टोरेंट में रखेंगे या फिर बस स्टेंड और पब्लिक स्थानों, पार्क आदि में. पलिस्तीनी लोग बहुत थोड़े से स्थान में जैसे दबे-पिसे से रहते हैं. अभी हालिया स्थिति यह है कि, दोनों ही समुदाय यरूशलेम को लेना चाहते हैं, लेकिन कोई भी इसमें बंटवारा नहीं करना चाहता है; और यही यहाँ होने वाली लड़ाई, खून-खराबा और फ़ैली हुई अशांति का मुख्य कारण भी है.

माँ से ही दुनियाँ महान होती है

माँ बच्चों की प्राण होती है।
माँ ही हमारी ज्ञान की ज्योती है।
माँ ही है सबसे सर्वश्रेष्ट,
माँ से ही दुनियाँ महान होती है।

माँ बिना पूरा जहान रोती है।
माँ को छोड़कर मंदिरों मे क्यो पुजा - पाठ होती।
माँ कोई देवियों से कम नहीं,
तो माँ हमेशा क्यों अपमान होती है।

माँ से ही निशा और बिहान होती है।
माँ से ही हमारी जिंदगी मे उढ़ान होती है।
माँ सब कुछ है हमारें लिए,
माँ से ही दुनियाँ महान होती है।

माँ से ही हमारी पहचान होती हैं।
हमारी सफलता मे माँ की योगदान होती हैं।
माँ से ही तो हम सब कुछ सिखते हैं,
माँ से ही दुनियाँ महान होती है।

श्री निरज यादव का जन्म बिहार के पूर्वी चम्पारण जिले के भोपतपुर नयकाटोला गाँव में हुआ है।उनके पिता का नाम श्री दीनानाथ प्रसाद यादव है और माता का नाम श्रीमती चिंता देवी है।

आप इनसे जरुर जुड़ें-
Instagram ID : @authorniajyadav
Twitter ID : @YadavAuthor
Facebook : @authornirajyadav

चेतना पढ़िये
और आगे बढ़िये ▶

बाइबल की स्त्रियाँ

हेरोदियास

वह राजवंशीय स्त्री जो एक मसीह प्रचारक की हत्या का कारण बनी.

हेरोदियास का नाम एक यूनानी नाम है और इसका सन्दर्भ मत्ती सुसमाचार के अध्याय 14:3 और लूका 3:19, में मिलता है. इस स्त्री का व्यक्तित्व एक ऐसी षणयंत्रकारी महिला के रूप में बाइबल में मिलता है जो अपने मार्ग के रोड़े को हटाने के लिए किसी भी हद तक जा सकती है. हेरोदियास हेरोदियन राजवंश के मुख्य सदस्य के तौर अपनी हैसियत रखती है. मत्ती और लूका के अतिरिक्त इसके बारे में मरकुस की इंजील में पढ़ा जा सकता है. बाइबल में हेरोदेस का राजवंश सबसे अधिक नीच, क्रूर और कट्टर शाशकों के तौर पर कुख्यात कहा जा सकता है.

हेरोदियास, हेरोदेस महान के बेटे अरिस्टोबुलस की लडकी थी. इसका सबसे अधिक और अमानवीय काम, यूहन्ना बप्तिस्मा देनेवाले की हत्या करवाने के लिये जाना जाता है. हेरोदियास ने अपने उस चाचा से जिसका नाम हेरोदेस द्वतीय फिलिप था और जिसको हेरोदेस महान ने अपनी सम्पत्ति से वंचित कर दिया था, विवाह कर लिया था. इसी हेरोदियास की एक लड़की भी थी जिसका नाम शलोमी था जो फिलिप से पैदा हुई थी. हेरोदियास जब 40 वर्ष की हुई तो उसने फिलिप को तलाक देकर उसके ही उस भाई हेरोदेस अंटीपास से विवाह कर लिया था, जो गलील प्रदेश का शासक था.

यहूदी व्यवस्था के अनुसार जब एक स्त्री अपने पति को छोड़ कर दूसरे से विवाह करती है तो इस कृत को कौटम्बिक व्यभिचार कहा जाता है. ऐसा करनेवाला पापी कहलाता है. यूहन्ना बप्तिस्मा देनेवाले नबी ने हेरोदेस अंटीपास और हेरोदियास की खुले-आम निंदा की तो हेरोदियास को यह बात बहुत बुरी लगी. तब उस दिन से हेरोदियास यूहन्ना से चिढ़ने लगी थी और इसी कारण उसने उसे जेल में बंद करा दिया था. फिर तब से वह यूहन्ना को मरवाने के लिए अवसर ढूंढने लगी थी. वह तो पहले ही दिन से यूहन्ना को जेल में बंद करवाने के बाद मरवा देना चाहती थी, परन्तु हेरोदेस अंटीपास ने मना कर दिया था, क्योंकि वहां सारे लोग यूहन्ना को भविष्यद्व्क्ता मानते थे. यदि वह ऐसा

करता तो देश में बलवा हो सकता था. तब से हेरोदियास यूहन्ना को मरवाने का कोई उचित अवसर ढूंढने लगी थी.

एक दिन यह अवसर भी हेरोदियास को मिल गया. हेरोदेस का जन्मदिन आया. उसने एक विशाल भोज का आयोजन किया. हेरोदेस ने हेरोदियास की पुत्री शलोमी से नृत्य करने को कहा और इसके बदले उसे पुरस्कार के रूप में अपना आधा राज्य तक देने की शपथ ली. शलोमी ने नृत्य किया और पुरस्कार के रूप में उसने अपनी मां के कहने के अनुसार यूहन्ना बप्तिस्मा देनेवाले का सिर थाल में सजाकर माँगा. हेरोदेस इस बात पर अपनी शपथ में फंस गया और इस तरह से यूहन्ना का कत्ल हुआ और हेरोदियास की मंशा भी पूरी हो गई. लेकिन हेरोदियास की चालबाजियों का सिलसिला यहीं आकर समाप्त नहीं हुआ. एक दिन हेरोदियास ने अंटीपास को सलाह दी कि वह रोम जाए और वहां से राजा का खिताब लेकर वापस आये, क्योंकि हेरोदियास का भाई हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम यह खिताब लेने को था और हेरोदियास अपने इस भाई से द्वेष रखती थी. लेकिन उसके इस मंसूबे का ठीक विपरीत हुआ. हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम ने रोम के सम्राट को, अंटीपास पर दोष लगाते हुए यह कहा कि, अंटीपास रोम से बलवा करने के अवसर में है. उस समय का रोमी सम्राट और कैसर; केलीगुला, अग्रिप्पा के बचपन का मित्र था. उसने अग्रिप्पा की बात पर विश्वास किया और रोम की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए उसने हेरोदेस अंटीपास को देश से बाहर निकालकर फ्रांस में भेज दिया. यह ए. डी. 39 की बात है. इस तारीख में अग्रिप्पा, यहूदिया का राजा अंटीपास के स्थान पर बना दिया गया.

हेरोदेस का महिलाओं के लिए जो रूप है, वह मसीह और प्रेरितों के समय के दौरान राजनीतिक शासकों के लिए शाही नाम है. यह हेरोदेस के नीच और क्रूर आदेशों के तहत था कि यीशु और उसके अनुयायियों को अक्सर सताया जाता था और दंडित किया जाता था.

पवित्र शास्त्र बाइबल में कई महिलाओं ने बुराई के लिए अपनी सुंदरता का दुरुपयोग किया उदाहरण के तौर पर; ईज़ेबेल, दलीला. इन महिलाओं ने अपनी सुन्दरता को दांव पर रखकर व्यभिचार का रुख अपनाया. हमें उनसे यह सीखने की जरूरत है कि यह एक बुरा और पापमय तरीका है. हम अपने पवित्र व्यवहार से अपने आप को और हमारे आसपास के पुरुषों की रक्षा में सुंदरता देखने की जरूरत है. हेरोदियास और यूहन्ना बप्तिस्मा देनेवाले के बीच लड़ाई में, यूहन्ना हार गया. लेकिन वह केवल इस दुनिया में ही हारा है, और स्वर्ग में जीत गया. है. हमें विश्वास है कि यूहन्ना ने गरीब आदमी लाजर के समान ही इब्राहीम की

गोद में बैठते हुए स्वर्ग एक अनंत निवास का घर बनाया है. हम भी अपने लिए ऐसा ही मार्ग चुन सकते हैं.

एलीशा नबी

एलिय्याह नबी के साथ नबी एलीशा का नाम बहुत जरूरी हो जाता है क्योंकि, एलीशा एलिय्याह का शिष्य था तथा एलिय्याह के उठाये जाने के बाद उसका सारा काम नबी एलीशा के सुपुर्द परमेश्वर की तरफ से कर दिया गया था. इसीलिये एलिय्याह ने एलीशा को प्रशिक्षित भी किया था. जिस तरह से एलिय्याह के नाम का अर्थ था उसी तरह से एलीशा के नाम का भी अर्थ, 'परमेश्वर बचाता है,' है. एलीशा नबी की नबी के रूप में जो अवधि थी वह करीब पचास साल की मानी जाती है. उसने राजाओं के शासनकाल के पूरे पचास वर्षों तक इस सेविकाई को पूरा किया था. परमेश्वर ने एलीशा के द्वारा बहुत से आश्चर्यजनक कार्य भी दिखाए हैं. एलीशा ने बीमारों को चंगा किया, भूखों को भोजन खिलाया, मुर्दों को जिलाया, नामान जैसे शत्रु देश के सेनापति को भी कोढ़मुक्त किया था.

कितने आश्चर्य की बात है कि, यूहन्ना बप्तिस्मा देनेवाले के बाद यीशु मसीह आये थे. यूहन्ना ने मन फिराव का संदेश दिया था. इसीतरह से एलिय्याह के बाद एलीशा आया था. यीशु मसीह के नाम का अर्थ इब्रानी भाषा में 'परमेश्वर बचाता है,' उसी तरह से एलीशा के नाम का भी अर्थ 'प्रभु बचाता है,' लेकिन, इन समानताओं का अर्थ यह बिलकुल भी नहीं है कि, एलीशा, यीशु मसीह के समान था. यीशु मसीह परमेश्वर के पुत्र हैं तो एलीशा परमेश्वर की तरफ से चुना हुआ एक नबी था. एलीशा भी, एलिय्याह के समान ही प्रजा के बीच होनेवाली बुराई की निंदा करने से कभी भी नहीं डरा था.

हंसी

मौसम की बात है,
आंधी-तूफानों में भी
वृक्षों से लगे-लिपटे रहे,
पतझड़ में जब गिर गये, तो
हंसते हो हम पर?

जुगनू बनकर जब तक चमकते थे,
तुम्हारे आस-पास !
चाँद निकल आया तो अब
हंसते हो हम पर?

वक्त सबका एक सा नहीं रहता है,
याद रखना !
तुम्हें देखकर तो सागर की लहरें भी
पलट जाती हैं पीछे,
सोचा कभी कि,
वे क्यों हंसती हैं तुम पर? **-जसवंती**

काका शिकोहाबादी के दोहे

पानी से मत टकराइये, जाकी शक्ति अपार,
अपनी पे जो आ गया, तो कर दे आर-पार.

पानी ने बनाया नहीं, कभी किसी को यार,
काटे से कभी कटा नहीं, काटो तुम बारम्बार.

रात और दिन दिया जलाओ, रोशन घर न होए,
सारा जग ही काला दिखे, जो दिल अंधियारा होए.

मुर्गी अंडा देकर खुशी-खुशी, चहुँ ओर चिल्लाए,
मानव ही ऐसा जीव है, जो खुशी बाँट न पाय.

खेल अगर ही देखना है, तो देखो जुगनू का खेल,
मुख से कभी उफ़ न करे, फिर भी हर रात जले.

इस स्तंभ के अन्तर्गत् हम बाइबल की उन जगहों का विस्तृत वर्णन करेंगें जिनका सीधा संबन्ध यीशु मसीह के मिशनरी कार्यों से रहा है। मुख्य रूप से हम बताना चाहेंगे कि बाइबल में यीशु मसीह के समय पर जो स्थान थे, और जहां पर उन्होंने कोई भी अपना कार्य आदि किया था, वे वर्तमान में भौगोलिक स्थिति के हिसाब से कहां पर हैं और उनके नाम या तो वही हैं अथवा बदल दिये गये हैं?

अरियुपगुस- Areopagus

अरियुपगुस जगह का नाम सबसे पहली बार प्रेरितों के काम 17:19 में उस समय आया है जबकि, पौलुस एथेंस में अपने साथियों और मसीही भाइयों के आने की बात जोह रहा था. यह घटना उसकी द्वतीय मिशनरी यात्रा के दौरान हुई थी. सो जिस समय पौलुस एथेंस में था तो उस नगर को मूर्तियों से भरा देखकर उसका मन उदास और खिन्न हो चुका था. एथेंस में तमाम मूर्तियों के मध्य उसने एक वेदी ऐसी भी देखी जिस पर लिखा हुआ था, 'अनजाने ईश्वर के लिए.' तब आराधना में इपिकूरी और स्तोईकी पंडित लोग उससे वाद-विवाद करने लगे. पौलुस उनसे यीशु मसीह के मरे हुओं में से पुन: जीवित होने बारे में स्पष्ट कर देना चाहता था, मगर वहां पर बैठे हुए तमाम यूनानी लोग मरे हुओं में से फिर से किसी के जीवित हो जाने के बारे में विश्वास नहीं करते हैं. इसलिए वे अपनी बात मनवाने के लिए उसे उपरोक्त स्थान अरियुपगुस नामक स्थान पर ले गये थे. यह स्थान एक पहाडी है जो ऊपर से चपटी और पसड़ी हुई, तथा चुने से बनी हुई थी. इसकी ऊंचाई लगभग 370 फीट है और यह ऊपर जाने पर अमरीका में एक स्थल, 'स्टोन माऊंटेन' जैसी दिखती है.

फिर काफी देर के वाद-विवाद के बाद भी यूनानियों ने पौलुस की बात नहीं मानी थी और उससे यह कह कर कि, 'वे उससे इस विषय में फिर कभी बात करेंगे', कहकर चले गये थे. फिर उनमें से कुछेक ने उसकी बात पर विश्वास किया था और बहुतेरे उस पर हंस रहे थे.

बाशान

बाशान का अर्थ होता है कि, 'चिकनी और समतल'. बाशान का नाम सबसे पहले बाइबल की किताब गिनती के अध्याय 21:33 में उस समय आया है जबकि, यहोशू इस्राएलियों के साथ मिलकर कनान देश पर अपना अधिकार लेने के लिए लड़ रहा था. तब एमोरियों को हराने के बाद यहोशू ने बाशान देश के

राजा ओग को हराया था. दक्षिणी सीरिया में गलील के समुद्र के पूर्व में एक बेतरतीब से फैला हुआ पठार इतना उपजाऊ है कि इसराइल और सीरिया के बीच यह युद्ध का कारण बन गया है. सीरिया सदा से इस स्थान को लेने के लिए लड़ता रहा है. बाशान में अक्सर ही बारिश होती रहती है और यही कारण है कि यहा की भूमि बहुत ही उपजाऊ भी है. यहाँ की मिट्टी जो कभी ज्वाला मुखी के फूटने से अब फसलों और घरेलू पशुओं के लिए भी बहुत फलदायी बन चुकी है. विशेष कर गायों के लिए यहाँ की हरी-हरी चराइयां अत्यधिक फलदायी हैं. भविष्यद्वकता आमोस अध्याय 4:1 में बाशान के लिए कहता है कि, 'बाशान की गायो'. राजा ओग जिसका शरीर किसी भी दानव से कम नहीं था, वह 13 फीट लम्बा और 6 फीट चौड़ा था. उसने इस स्थान पर साठ नगरों पर तब तक राज्य किया था जब तक कि, इस्राएलियों ने यहाँ अपना अधिकार नहीं जमा लिया था.

बैतफगे - मत्ती 21:1

बैतफगे को अंजीर का घर (House of the early figs) भी कहा जाता है. इसका सबसे पहले वर्णन मत्ती की इंजील के अध्याय 21:1 में उस समय आया है जहां से यीशु मसीह की अंतिम यरूशलेम की यात्रा के लिए उनके चेलों को एक गधी का बच्चा मिला था. यह स्थान एक गाँव है जो जैतून के पर्वत से कोई अधिक दूरी पर नहीं है. बैतफगे के बारे में केवल इतना ही वर्णन बाइबल में मिलता है. यरूशलेम से दो मील की दूरी पर बसे बैतनियाह गाँव के समान, जिसे मरियम, मार्था और लाजरस का घर भी कहते हैं; बैतफगे भी समझा जाता है कि, यीशु मसीह के समय में यह गाँव भी जैतून के पहाड़ पर, यरूशलेम के पास ही कहीं होना चाहिए था. ऐसा भी माना जाता है कि यह स्थान यरूशलेम

जाने वाली मुख्य सड़क पर कहीं बैतनियाह और यरूशलेम के मध्य में होगा. बाइबल में इस स्थान का मूल्य केवल इसलिए है कि, यहीं से यीशु मसीह के लिए गधी के बच्चे का प्रबंध, यरूशलेम जाने लिए, उनके सलीबीकरण से पहले, उनके शिष्यों ने किया था.

बैतसैदा - Bethsaida

'मछुआरों का घर' - बैतसैदा को कहा जाता है. मत्ती की इंजील के अध्याय 11:21 में इसका नाम सबसे पहले आया है. इसमें किसी भी आश्चर्य की बात नहीं है कि, यीशु मसीह के तीन विशेष चेले जो मछलीमार थे; पतरस, अन्द्रियास और फिलिप्पुस, इसी बैतसैदा के रहनेवाले थे. यह गाँव 'मछुआरों का गाँव' नाम से यीशु मसीह के समय में प्रचलित था. गलील के सागर के उत्तरी किनारे पर कहीं इस स्थान के होने की सम्भावना की जाती है. यह स्थान हरा-भरा और पहाड़ी की ढलान, फिर झील के सामने बसा होने के कारण ही शायद यह जगह हेरोदेस फिलिप, रोमी गवर्नर और हेरोदेस महान के पुत्र ने इसको एक शहर बनाया था तथा अपने खुद के लिए एक कब्रिस्थान का स्थान भी. लूका के अध्याय 9:13 के अनुसार बैतसैदा की ढलान पर यही वह जगह मानी जाती है जहां पर यीशु मसीह ने पांच रोटी और दो मछलियों से पांच हजार लोगों को खिलाया था. यहीं बैतसैदा में बाद में मरकुस 8:22-25 के अनुसार यीशु मसीह ने एक अंधे को भी चंगा किया था. इसी बैतसैदा में यीशु मसीह ने यहाँ के लोगों को और कफरनहूम के निवासियों को भी चेतावनी भी थी कि, वे यदि अपने पापों से मन नहीं फिरायेंगे तो उनकी दशा न्याय के दिन सूर, सैदा और सदोम के लोगों से भी बदतर होगी;

'21 हाय, खुराजीन; हाय, बैतसैदा; जो सामर्थ के काम तुम में किए गए, यदि वे सूर और सैदा में किए जाते, तो टाट ओढ़कर, और राख में बैठकर, वे कब के मन फिरा लेते. 22 परन्तु मैं तुम से कहता हूं; कि न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सूर और सैदा की दशा अधिक सहने योग्य होगी. 23 और हे कफरनहूम, क्या तू स्वर्ग तक ऊंचा किया जाएगा? तू तो अधोलोक तक नीचे जाएगा; जो सामर्थ के काम तुझ में किए गए है, यदि सदोम में किए जाते, तो वह आज तक बना रहता. 24 पर मैं तुम से कहता हूं, कि न्याय के दिन तेरी दशा से सदोम के देश की दशा अधिक सहने योग्य होगी' (मत्ती 11:21-24).

यहाँ पर तीन बेतसैदाके लिए तीन खंडहर सुझाए जाते हैं. दो सागर के किनारे लाइन पर हो सकते हैं और एक बड़े शहर अल-अराज और मिसादिये हो सकता

है, लेकिन फिर भी बैतसैदा की वास्तविक स्थिति अभी तक नहीं मालुम की जा सकी है.

बेतशान/बेतशीन- Beth-Shan/Beit-shean

बाइबल पुराना नियम की पुस्तक यहोशू की पुस्तक के अध्याय 17:11 में पहली बार इस जगह का नाम आया है. इब्रानी भाषा में इस जगह को 'शान्ति का घर' कहा गया है. इसके अतिरिक्त विस्तार में इस जगह का नाम 1 शमूएल की किताब में भी आया है. इस्राएल में आज भी इस स्थान के खंडर देखे जा सकते हैं. यह यीशु मसीह के समय में यह स्थान गिलबो पहाड़ के ठीक नीचे बसाया गया था और यहाँ पर रोमियो का एक प्रकार से सचिवालय था. रोमी शासन के सारे सरकारी कार्यों को यहीं से अंतिम रूप देकर शाही एलान किया जाता था. यहीं पर तब रोमी अफसरों के आलीशान मकान हुआ करते थे.

शमूएल की पुस्तक के आधार पर यहीं गिलबो पहाड़ पर इस्राएल के बिन्यामीनी गोत्र के प्रथम राजा शाऊल का अंतिम युद्ध पलिस्तियों से हुआ था. शाऊल राजा इस लड़ाई में मारा गया था. उसके साथ उसके तीनों पुत्र भी मारे गये थे. तब पलिस्तियों ने शाऊल और उसके तीनों पुत्रों के सिर काटकर इनकी लोथें इसी गिलबो पहाड़ पर जड़ दी थीं और उनके सिर सारे पलिस्तीन देश में एक विजय के रूप में दिखाए थे. उनके हथियार पलिस्तियों ने अपनी देवियों के मन्दिर आश्तोरेत में रखे थे. तब शाऊल के मरने के बाद दाऊद इस्राएल की गद्दी पर बैठा था.

'10 तब उन्होंने उसके हथियार तो आश्तोरेत नाम देवियों के मन्दिर में रखे, और उसकी लोथ बेतशान की शहरपनाह में जड़ दीं. 11 जब गिलाद वाले याबेश के निवासियों ने सुना कि पलिश्तियों ने शाऊल से क्या क्या किया है,12 तब सब शूरवीर चले, और रातोंरात जा कर शाऊल और उसके पुत्रों की लोथें बेतशान की शहरपनाह पर से याबेश में ले आए, और वहीं फूंक दीं. 13 तब उन्होंने उनकी हड्डियां ले कर याबेश के झाऊ के पेड़ के नीचे गाड़ दीं, और सात दिन तक उपवास किया', (1शमूएल 31:10-13).

बेतशान नगर अपने समय में शहर का स्वर्ग माना जाता था. यह शहर दो घाटियों; क्रमश: उत्तर-दक्षिण में यर्दन नदी की घाटी और पूरब-पश्चिम में इजावेल (Jezreel) घाटी या हर-मगदोन की घाटी के चौराहे पर बसा हुआ था. यहोशू अपने जीवन में कभी भी इस नगर को नहीं जीत पाया था.

गोलेन्द्र पटेल की कविता

ऊख

प्रजा को
प्रजातंत्र की मशीन में पेरने से
रस नहीं रक्त निकलता है साहब

रस तो
हड्डियों को तोड़ने
नसों को निचोड़ने से
प्राप्त होता है
बार बार कई बार
बंजर को जोतने-कोड़ने से
ज़मीन हो जाती है उर्वर

मिट्टी में धँसी जड़ें
श्रम की गंध सोखती हैं
खेत में
उम्मीदें उपजाती हैं ऊख
कोल्हू के बैल होते हैं जब कर्षित किसान
तब खाँड़ खाती है दुनिया
और आपके दोनों हाथों में होता है गुड़!

सफ़ेदपोश लोग

कहानी

रेव्ह. डॉ. जुलियस अशोक शॉ

सफ़ेद चोगा सफ़ेद था, बेहद सफ़ेद. चुना-सफ़ेदी की गई कब्र की तरह स्वच्छ और सफ़ेद. किन्तु सच तो यह भी है कि कब्र के भीतर ज़िन्दगी नहीं, लाश होती है- एक भयानक दुर्गन्ध.यही सच है, ज़िन्दगी का एक बहुत बड़ा सच, जहां सफ़ेद चोगे ने विश्वास और कर्म को कभी साथ-साथ जीने नहीं दिया. विश्वास कुछ कहता रहा और कर्म कुछ और ही करता रहा.

उस दिन चर्च से लौटकर कजली बहुत रोई थी. इसलिए नहीं कि, चर्च में उसे बैठे देखकर लोगों ने कानाफूसी की थी और आराधना के बाद चर्च से बाहर

निकलते उस पर बरस पड़े थे, 'ज़रा, देखो तो इस बदचलन को. शर्म तक नहीं आई. इस पवित्र स्थल को भी अपवित्र कर दिया. अब तो इस स्थल को धोना पड़ेगा. धूप और अगरबत्तियाँ जलानी पड़ेंगी.' बल्कि, इस कारण रो पड़ी थी कि, एक बार फिर से लोग उसके बदले हुए मन को देखने से चूक गये थे.

आदमी कितना भी खुद को बदल डाले, किन्तु लोगों की उसके प्रति बनी छवि बदल नहीं पाती. उसके चरित्र पर लगा हुआ दाग, पत्थर पर खींच दी गई लकीर-सा लोगों के मस्तिष्क पर से मिट नहीं पाता. इस सच से निकल पाना आदमी के लिए उतना ही कठिन होता है, जितना मृत्यु के शिकंजे से छूट पाना. कुछ ऐसा ही हुआ था कजली के साथ भी. अपने प्रति लोगों के चक्रव्यूह वह तोड़ न पाई. सफ़ेदपोश लोगों के प्रहार ने उसे उठते-बैठते दम तोड़ते देखना कहीं अधिक अच्छा समझा, इसके बजाय कि ईश्वर में वह एक नई सृष्टि बने और जिये भी.

उसका नाम कजली नहीं था. काजल-सा काला उसके तन का रंग और चरित्र पर लगे कलंक ने उसे महिमा जोशी से कजली बना दिया था. लोग भी उसे कजली कहा करते. पुकारते. वक्त के साथ-साथ वह खुद भी अपना नाम भूल चुकी थी. फिर उसके जीवन में एक ऐसा भी वक्त आया, जब लोगों का कजली पुकारना उसे खुद भी बहुत अच्छा लगने लगा.

लोग कहा करते थे कि वह बहुत ही चरित्रहीन थी. सार्वजनिक स्थानों पर वह अक्सर दिख जाया करती थी, कभी इसके साथ तो कभी उसके साथ. रंग-रूप से काली महिमा जोशी को उसकी चरित्रहीनता ने उसे और भी मैला कर रखा था.

किन्तु मेरे लिए महिमा जोशी कभी भी कजली नहीं बनी और न ही चर्च में उसका उपस्थित होना मुझे कभी खला. मैंने हमेशा उसे पढ़ने की कोशिशें कीं और हर बार उसे देखकर-पढ़कर मुझे लगा कि कहीं-न-कहीं यीशु के जन्म ने उसे पाप के बंधन से मुक्त करके उसके मैले-कुचैले मन को हिम-सा श्वेत कर दिया था.

एक दिन बाज़ार में महिमा जोशी को सलीब खरीदते हुए देखकर मैं चौंक पड़ी. सिर से पैर तक मैं काँप उठी. कहना और पूछना तो दूर रहा, उसके पास जाने की हिम्मत भी मुझे जुटानी पड़ी. कांपती हुई बहुत साहस बटोरकर मैं उसके पास गई, तो वह भी मुझे देखकर चौंक उठी, जैसे सूर्योदय पूरब से न होकर पश्चिम से हुआ हो.

खामोशी और दूरी का दायरा तोड़ते हुए मैंने कहा, 'महिमा, मुझे गलत न समझना. मैंने कभी भी तुम्हें गलत नहीं समझा. उन नज़रों से नहीं देखा, जिन नज़रों से दुनियां तुम्हें देखती है. कई बार आदमी वह नहीं होता, जो वह दिखता है और यह सच तुम्हारे साथ भी है. महिमा, तुम मेरे लिए कभी भी कजली नहीं बनी और इस कारण मेरे मन के किसी कोने में हमेशा यह बात घूमती रही कि एक-न-एक दिन तुम अपने लिए सलीब चुनोगी. मैंने हमेशा तुम्हारे लिए प्रार्थनाएं की हैं, तुम्हें अपना जाना है.'

महिमा जोशी चुप थी. खामोश. वह मुझे छोड़कर एक टक सलीब को देखती रही फिर सलीब को चूमती हुई कह पड़ी, 'बहन, मेरे लिए अब सिर्फ सलीब है और सलीब पर त्राणकर्त्ता यीशु का बहा हुआ लहू. लोग मुझे कुछ भी कहें, अब मैं परवा नहीं करती. अपने जिस्म का सौदा मैं कभी नहीं कर सकती. यह मन, यह तन गोया मेरा सब कुछ अब यीशु का है. मैं अपने प्रभु को और धोखा नहीं दे सकती, चाहे लोग मुझे मार ही क्यों न डालें.'

मुझे पहली बार लगा था कि यीशु का जन्म कोई साधरण-सी बात नहीं. एक अत्यंत गम्भीर बात है, जिसे सफ़ेदपोश लोगों ने घर, बाज़ार, चर्च जैसे स्थानों को सजाकर उस 'महान जन्म' का मजाक उड़ाया है. ढेर सारी बत्तियां जलाईं हैं. चकाचौंध रोशनी की है. किन्तु हर बार मन के भीतर अन्धेरा रखा है. एक भयानक अन्धेरा.

लोगों ने उसे बदचलन अवश्य कहा था- कानाफूसी तक की थी- और चर्च आने-जाने तक पर प्रतिबन्ध भी लगाया था. किन्तु पुलपिट पर से कहा गया. उपदेश कई दिनों तक उसे हिम्मत भी बंधाता रहा. उसके अंदर एक नई ज़िन्दगी जीने का साहस बटोरने के लिए उसे प्रेरित करता रहा.

कजली को यीशु का, व्यभिचार में रंगे हाथ पकड़ी गई स्त्री को दंड न देकर उसे एक नई ज़िन्दगी जीने का अवसर प्रदान करना बहुत-बहुत अच्छा लगा था. उसे लगा था कि एक बार फिर से वह कजली से महिमा जोशी बन गई थी, एक नई सृष्टि. उसे लगा था कि, व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री कोई और नहीं, वह खुद है, जिसके समाज के सफ़ेदपोश लोगों ने खुद को पवित्र मानकर-जानकर यीशु से पूछा था, 'हे गुरु, यह स्त्री व्यभिचार में पकड़ी गई है. धर्मशास्त्र में लिखा है कि ऐसी स्त्री को समाज में रहने और जीने का कोई हक नहीं, बल्कि ऐसी स्त्रियों को तो पत्थरवाह करके मार डालना ही उचित है. आप ऐसी स्त्रियों के विषय में क्या कहते हैं?'

यीशु ने लोगों को बड़े ही गौर से देखा. फिर एक चुप्पी के बाद वह कह पड़े, 'देखो, इस स्त्री को पहला पत्थर वही मारे, जिसने कभी कोई पाप न किया हो?'

यह कहकर यीशु झुके और ज़मीन पर अपनी अंगुली से वहां पर खड़े एक-एक व्यक्ति का नाम और उसके नाम के आगे उनके गुनाहों के नाम लिखने लगे.

लोग घबरा उठे. उस स्त्री को छोड़कर एक-दूसरे को देखने लगे. अपने ऊपर पत्थरवाह का ख्याल आते ही वे भाग खड़े हुए.

जब यीशु ने अपनी आँख उठाई, तो उस स्त्री को छोड़कर वहां कोई भी न था. सारे-के-सारे लोग वहां से जा चुके थे.

यीशु ने उस स्त्री से कहा, 'हे नारी, वे कहाँ गये? क्या किसी ने भी तुझ पर दंड की आज्ञा नहीं दी?'

उस स्त्री ने कहा, 'हे प्रभु, किसी ने भी नहीं.'

यीशु ने कहा, 'मैं भी तुझ पर दंड की आज्ञा नहीं देता. जा और फिर पाप न करना.'

चर्च से लौटकर उस दिन जब कजली अपने घर लौटी तो मुंह के बल गिरकर उसने प्रभु से क्षमा माँगी. खुद के लिए और उन समस्त लोगों के लिए भी, जिन्होंने उसे हमेशा एक बदचलन के रूप में देखा- उसकी इज्ज़त लूटी- उसे अपमानित किया.

जब कोई इंसान सच्चे मन से पश्चाताप करता है, तो वह धर्म और जातिपांति से बहुत ऊपर उठ जाता है. पश्चाताप से भरे आंसुओं में इतनी ताकत होती है कि किसी भी रंग का पाप मिटे बिना नहीं रह पाता. कुछ ऐसा ही हुआ कजली के साथ भी. पश्चाताप के आंसुओं से धुलकर वह पूर्णत: श्वेत हो गई थी और उसके गुनाहों का नामो-निशान तक नहीं रह पाया.

अपने घुटनों के बल ईश्वर के समक्ष कजली ने उस दिन ठान लिया था कि वह मर जायेगी, लेकिन दो रोटी के लिए अब कभी भी अपने जिस्म का सौदा नहीं करेगी. और फिर जिस दिन उसने खुद को बिकने से इनकार किया था, लोग उसे खुले आकाश के नीचे घसीटकर चिल्ला पड़े थे, 'ऐसी बदचलन को समाज में रहने का कोई हक नहीं बनता. इसे मार डालना ही अच्छा है.' और फिर एक पत्थर उठा- फिर दो- फिर तीन- और फिर न जाने कितने पत्थर उस पर एक साथ बरस पड़े.

वह खामोश हो गई. बिलकुल खामोश. पर, अपनी खामोशी से पहले उसके होठ हिले थे, 'हे प्रभु इन्हें क्षमा कर देना. मेरे गुनाहों का हिसाब-किताब इन पर न थोपना.'

तभी भीड़ में से ऊपर से नीचे तक सफ़ेद चोगे में खड़े एक व्यक्ति ने कहा, 'देखो ! जरा देखो तो इस बदचलन को. खुद तो समाज को गंदा करती रही और अब हम सबके लिए क्षमा मांग रही है. क्या कोई पाप करनेवाला भी दूसरों के लिए क्षमा मांग सकता है. लानत है ऐसी स्त्री पर.'

दर्द से छटपटाती कजली ने आख़िरी बार बड़ी ही मुश्किल से अपनी आँखें खोलीं तो देखा, यह तो वही व्यक्ति है, यहाँ के चर्च के फादर, जिन्होंने आराधना के दौरान पुलपिट पर से कैसी लम्बी-चौड़ी बातें की थीं. एक पापी तक से प्रेम करने की बातें? सफ़ेद चोगा- सफ़ेद था, बेहद सफ़ेद. चूना-सफ़ेदी की गई कब्र की तरह स्वच्छ और सफ़ेद. किन्तु सच तो यह भी है कि कब्र के भीतर ज़िन्दगी नहीं, लाश होती है- एक भयानक दुर्गन्ध.

यही सच है, ज़िन्दगी का एक बहुत बड़ा सच, जहां सफ़ेद चोगे ने विश्वास और कर्म को कभी साथ-साथ जीने नहीं दिया. विश्वास कुछ कहता रहा और कर्म कुछ और ही करता रहा.

'. . .और कजली की आँखें हमेशा-हमेशा के लिए प्रभु में सिमट कर रह गईं.

काका शिकोहाबादी के दोहे

***

लड़का बोला देखकर, बड़ा भव्य सा चर्च,
ईश्वर तेरे नाम में, किराया है न खर्च.

बकरा देख कसाई को, करता है मलाल,
क्यों लिखा तूने प्रभु, मेरे नाम हलाल.

सुबह-सुबह उठ जाइए, नहीं घड़ी का काम,
गाड़ी-मोटर, चिल्ल-पों, बिना दाम के अलार्म.

भर सके तो भर दे, जीवन में प्रकाश,
बरना तो व्यर्थ है, क्रिसमस का भी प्रकाश.

ये दिन

ये दिन ढल जाएगा मौसम
बदल जाएगा, आज नहीं
तो कल, ये वक्त बदल जाएगा.

जब यीशु है हमारे साथ तो
डरने की क्या बात,
चलना तुम भी उसके साथ
कि बन जाए हर बात.

हौसला रखे रहना तुम न
हो वक्त तुम पर भारी,
यीशु पर भरोसा रखना
यही हो तेरी जिम्मेदारी.

करें नई सुबह का इंतज़ार
कि वह है हम पर मेहरबान,
वही कहता है, कर इंतज़ार
कि उसमें हों हम शादमान.

ये दिन ढल जाएगा, मौसम
बदल जाएगा, आज नहीं,
तो कल ये वक्त बदल जाएगा.

- शालिनी मिंज

आसमां से

***

सागर से बबंडर उठा,
दुनियां समझे कि,
वह फूट रहा है.
आसमां से तारा टूटा,
कोई क्या जाने कि,
कौन टूट रहा है.

- जसवंती

मिस्र का राज्यपाल- एक यहूदी

शालिनी मिंज

बहुत देर तक, जब शालीमार अपने अकेलेपन से लड़ते हुए थक गया और उसका मन नहीं माना तब वह सुनसान रात में अकेला चाँद और तारों की मध्यम रोशनी में बिना डरे और बिना किसी की परवाह किए हुए कब्रों की ओर चल पड़ा. न जाने कब और क्यों शालीमार यों कब्रों का खोजी बन बैठा! न जाने कब्रों में ऐसी क्या बात थी जो उसे अपनी ओर खींचते हुए कभी हारती नहीं थी. चलते-चलते जब वह कब्रों के बीच पहुँच गया तब उसने अपनी छोटी सी फ्लैश लाइट का इस्तेमाल किया और उसे जलाकर पुरानी कब्रों पर खुदे हुए नामों को पढ़ने लगा. अनेक नामों के बीच उसने युसुफ नाम देखा और रुककर उसके विषय में सोचने लगा. इससे पहले कि उसके मस्तिष्क के घोड़े दूर तक दौड़ते, उसके पीछे खड़े शैतान ने उसे आवाज़ दी और उससे कहा कि यह युसुफ जो इस संसार में जीवित रहा उसके जीवन का वर्णन तो संसार का कोई भी व्यक्ति तुम से कर देगा, लेकिन मैं तुम्हें उस युसुफ के विषय में बताता हूँ जिसका वर्णन बाइबल भी करती है. एक ऐसा व्यक्ति जो परमेश्वर के भय में जीता था और परमेश्वर ने उसके जीवन में ऐसा कार्य किया जिसका वर्णन मैं तुम से करता हूँ- तुम उसे ध्यान से सुनो.

याकूब जिसने परमेश्वर और मनुष्यों से युद्ध करके, विजय हासिल की और जिसका नाम परमेश्वर ने इस्राएल रखा, यह युसुफ उसी याकूब का अतिप्रिय पुत्र था, क्योंकि वह अपने पिता के बुढ़ापे का पुत्र था. वह युसुफ से अपने सब पुत्रों से बढ़कर प्रेम करता था और उसके लिए सबसे अलग एक रंगबिरंगा अंगरखा बनवाया था. युसुफ 17 वर्ष का था और अपने भाइयों के संग भेड़-बकरियों को चराया करता था. यही नहीं बल्कि उनकी बुराइयों का समाचार अपने पिता को दिया करता था. इन सभी बातों के कारण उसके भाइयों ने उससे बैर रखा.

एक दिन उसने स्वप्न में देखा कि वह अपने भाइयों के साथ खेत में पूले बाँध रहा है और उसका पूला सीधा खड़ा हो गया और उसके भाइयों के पूले उसके पूले को झुककर दण्डवत करने लगे. एक और स्वप्न इसी प्रकार से उसने और देखा और अपने भाइयों से उसका वर्णन यों किया, 'सुनो, मैंने एक और स्वप्न देखा है, कि सूर्य, चन्द्रमा और ग्यारह तारे मुझे दण्डवत कर रहे हैं.' इस स्वप्न का उसने अपने पिता और भाइयों से वर्णन किया तब उसके पिता ने

उसको डाँट कर कहा, 'यह कैसा स्वप्न है, जो तू ने देखा है? क्या सचमुच मैं और तेरी माता और तेरे भाई सब जाकर तेरे आगे भूमि पर गिरकर तुझे दण्डवत करेंगे?' उसके भाई उससे पहले ही बैर रखते थे और इन बातों को सुनने के बाद वे और भी अधिक उससे बैर रखने लगे. एक दिन भेड़-बकरियों को चराने के दौरान उन्होंने युसुफ को मार डालने का षड्यंत्र रचा. बहुत वाद-विवाद करने के बाद उन्होंने आपसी सम्मति से उसके रंगबिरंगे अंगरखे को उतारवाकर उसे एक सूखे गहरे गड़हे में डाल दिया.

इतना होने पर भी वे उसे मार डालना चाहते थे, लेकिन यहूदा जो भाइयों में से एक था, यह कहकर सुझाव दिया, 'अपने भाई को घात करने और उसका खून छिपाने से क्या लाभ होगा? आओ, हम उसे इश्माएलियों के हाथ बेच डालें, और अपना हाथ उसपर न उठाएँ; क्योंकि वह हमारा भाई और हमारी ही हड्डी और मांस है.' तब भाइयों ने उसकी बात मान ली. तब मिद्यानी व्यापारी उधर से होकर उनके पास पहुँचे. अतः युसुफ के भाइयों ने उसे चाँदी के बीस टुकड़ों में बेच दिया और वे व्यापारी उसे मिस्र ले गए. तब उसके भाइयों ने उसके अंगरखे को बकरे के खून में डुबोकर उसे अपने पिता के पास यह कहला भेजा; 'यह हमको मिला है, अतः देखकर पहचान ले कि यह तेरे पुत्र का अंगरखा है कि नहीं.' उसने उस अंगरखे को पहचान लिया और अपने वस्त्र फाड़कर अपने कमर में टाट लपेटा और उसके लिए बहुत दिन तक विलाप करता रहा. उधर युसुफ को मिद्यानियों ने अपने पास न रखकर मिस्र में ले जाकर फ़िरौन के हाकिम और अंगरक्षक के प्रधान पोतीपर के हाथों बेच डाला.

यह युसुफ के जीवन का अंत नहीं लेकिन शुरूआत थी. वह पोतीपर के घर में रहता था और चूंकि वह अपनी जवानी के दिनों से ही परमेश्वर के भय में जीता था, इसलिए परमेश्वर भी उसके साथ रहता था और जिस काम में वह हाथ डालता था, उसमें परमेश्वर उसे सफल कर देता था. इस कारण वह अति भाग्यवान हो गया और परमेश्वर की अनुग्रह की दृष्टि उसपर हुई और पोतीपर ने उसे अपने पूरी सम्पति पर अधिकारी ठहराया और सबकुछ उसके हाथों में दे दिया. इसके बाद पोतीपर के घर में भी परमेश्वर की आशीष बहुतायत से उतरी. सबकुछ अच्छा था, लेकिन इन सब बातों के बीच पोतीपर की पत्नी की नज़र युसुफ पर पड़ी. क्योंकि वह सुंदर और रूपवान था इसलिए उसकी पत्नी ने उसपर आँख लगाई और उसके वस्त्र फाड़कर उसे अपने पास सोने के लिए विवश किया, लेकिन युसुफ अपने वस्त्र छोड़कर वहाँ से भाग निकला. इसपर उस स्त्री ने युसुफ पर दोष लगाया और उसे बंदीगृह में डलवा दिया. पर यहोवा

युसुफ के संग रहा और उसपर करूणा की, और बंदीगृह के दारोगा की दृष्टि उसपर हुई. इसलिए उसने वहाँ के कैदियों को और सारे काम काज को उसके हाथ में सौंप दिया और सबकुछ युसुफ की आज्ञानुसार होने लगा. यहाँ भी यहोवा उसके संग रहा और हर काम में उसे सफलता देता रहा.

इन बातों के पश्चात् ऐसा हुआ कि मिस्र के राजा के पिलानेहारे और पकानेहारे ने अपने स्वामी के विरुद्ध कुछ अपराध किया. तब फ़िरौन ने अपने उन दोनों हाकिमों पर क्रोधित होकर उन्हें कैद कराके अंगरक्षकों के प्रधान के घर के उसी बंदीगृह में, जहाँ युसुफ बंदी था, डलवा दिया और युसुफ उनकी सेवा टहल करने लगा. एक रात राजा के पिलानेहारे और पकानेवाले ने स्वप्न देखा. सुबह युसुफ ने उन्हें उदास देखकर उनसे बातें की और उन्होंने बताया कि उन्होंने स्वप्न देखा है और उसका फल अर्थात् अर्थ बतानेवाला कोई नहीं. तब युसुफ ने परमेश्वर की सहायता से उनके स्वप्न का अर्थ बताने की मनसा से उनका स्वप्न पूछा.

तब पिलानेहारों का प्रधान अपना स्वप्न युसुफ को बताने लगाः 'मैंने स्वप्न में देखा कि मेरे सामने एक दाखलता है; और उस दाखलता की तीन डालियाँ हैं; और उसमें मानो कलियाँ लगी हैं, और वे फूलीं और उनके गुच्छों में दाख लगकर पक गई. फ़िरौन का कटोरा मेरे हाथ में था; और मैंने उन दाखों को लेकर फ़िरौन के कटोरे में निचोड़ा, और कटोरे को फ़िरौन के हाथ में दे दिया.' तब युसुफ ने उससे कहा, 'इसका फल यह हैः तीन डालियों का अर्थ तीन दिन हैं; इसलिए अब से तीन दिन के भीतर फ़िरौन तेरा सिर ऊँचा करेगा, और फिर से तेरे पद पर तुझे नियुक्त करेगा, और तू पहले के समान फ़िरौन का पिलानेहारा होकर उसका कटोरा उसके हाथ में फिर दिया करेगा. अतः जब तेरा भला हो जाए तब मुझे स्मरण करना, और मुझ पर कृपा करके फ़िरौन से मेरी चर्चा चलाना और इस घर से मुझे छुड़वा देना. क्योंकि सचमुच इब्रानियों के देश से मुझे चुराकर लाया गया है; और यहाँ भी मैं ने कोई ऐसा काम नहीं किया, जिसके कारण मैं इस कारागार में डाला जाऊँ.'

यह देखकर कि उसके स्वप्न का फल अच्छा निकला, पकानेहारों के प्रधान ने युसुफ से कहा, 'मैंने भी स्वप्न में देखा है, वह यह हैः मैंने देखा है कि, मेरे सिर पर सफेद रोटी की तीन टोकरियाँ हैं; और ऊपर की टोकरी में फ़िरौन के लिए सब प्रकार की पकी-पकाई वस्तुएँ हैं; और पक्षी मेरे सिर पर की टोकरी में से उन वस्तुओं को खा रहे हैं.' युसुफ ने कहा, 'इसका फल यह हैः तीन टोकरियों का अर्थ तीन दिन है. अब से तीन दिन के भीतर फ़िरौन तेरा सिर

कटवाकर तुझे एक वृक्ष पर टंगवा देगा और पक्षी तेरे मांस को नोच-नोच कर खाएँगे.'

तीसरे दिन फ़िरौन का जन्मदिन था, उसने अपने सब कर्मचारियों को भोज दिया और उनमें से पिलानेहारों के प्रधान और पकानेवालों के प्रधान, दोनों को बंदीगृह से निकलवाया. पिलानेहारों के प्रधान को तो पिलानेहारे के पद पर नियुक्त किया और वह फ़िरौन के हाथ में कटोरा देने लगा. पर पकानेहारों के प्रधान को उसने टंगवा दिया, जैसा कि युसुफ ने उनके स्वप्नों का फल उनसे कहा था. फिर भी पिलानेहारों के प्रधान ने युसुफ को स्मरण न रखा; परन्तु उसे भूल गया.

पूरे दो वर्ष बीतने पर फ़िरौन ने यह स्वप्न देखा कि वह नील नदी के किनारे खड़ा है. और उस नदी में से सात सुंदर और मोटी-मोटी गायें निकलकर कछार की घास चरने लगीं. और क्या देखा कि उनके पीछे सात गायें, जो कुरूप और दुर्बल हैं, नदी से निकलीं, और दूसरी गायों के निकट नदी के तट पर जा खड़ी हुईं. तब ये कुरूप और दुर्बल गायें उन सात सुंदर मोटी-मोटी गायों को खा गईं. तब फ़िरौन जाग उठा. और वह फिर सो गया और दूसरा स्वप्न देखा कि एक डंठल में से सात मोटी और अच्छी बालें निकलीं और उनके पीछे फिर सात बालें पतली और पुरवाई से मुरझाई हुई निकलीं. और इन पतली बालों ने उन सातों मोटी और अन्न से भरी हुई बालों को निगल लिया. तब फ़िरौन जागा और उसे मालूम हुआ कि यह स्वप्न ही था. भोर को फ़िरौन का मन व्याकुल हुआ और उसने मिस्र के सब ज्योतिषियों और पंडितों को बुलवा भेजा; और उनको अपने स्वप्न बताए; पर उनमें से कोई भी उनका फल न बता पाया.

तब पिलानेहारों के प्रधान ने अपनी गलती का अंगीकार करते हुए फ़िरौन को जेल में घटित हुई सारी घटना और युसुफ का वर्णन किया. तब फ़िरौन ने तुरंत युसुफ को बुलवा भेजा और उससे अपने स्वप्न का वर्णन किया. युसुफ ने फ़िरौन के स्वप्न का फल इस प्रकार बताया कि सात अच्छी-अच्छी गायें सात वर्ष हैं और सात बालें भी सात वर्ष हैं. फिर जो दुर्बल गायें और सात मुरझाई हुई बालें अकाल के सात वर्ष हैं. इसका अर्थ है कि मिस्र में सात वर्ष बहुतायत की उपज होगी पर सात वर्ष अकाल भी पड़ेगा और सारा देश का नाश होगा. इसलिए युसुफ ने फिरौन को परमेश्वर की इच्छा बताई ताकि वह पूरे देश पर अधिकारियों को नियुक्त करे और वे सुकाल तक मिस्र देश की उपज का पंचमांश लिया करें और अच्छे वर्षों में सब प्रकार की भोजन वस्तु इकट्ठा करें ताकि अकाल के सात वर्षों के लिए पर्याप्त भोजन रहे.

इन बातों के बाद फ़िरौन और उसके सभी कर्मचारियों ने इस बात का अंगीकार कर लिया कि युसुफ में परमेश्वर का आत्मा रहता है और उसके समान बुद्धिमान और समझदार कोई अन्य नहीं है. अतः फ़िरौन ने युसुफ को अपने घर का अधिकारी ठहराया साथ ही उसे अपनी सारी प्रजा और मिश्र देश के ऊपर अधिकारी ठहराया. उसे पूरे मिस्र देश पर प्रधानमंत्री ठहराया. उसने सारी प्रजा के सामने उसका आदर सत्कार किया और प्रजा को आज्ञा दी कि उसकी सुनें.

इस समय युसुफ 30 वर्ष का था और उसने इन सात सुवर्ष के दौरान अपना काम इस समय ईमानदारी पूर्वक किया. उसी दौरान उसकी शादी हुई, बच्चे हुए और परमेश्वर ने उसे फलवंत किया. जब सात वर्ष बीत गए तब सारी पृथ्वी पर भयंकर अकाल पड़ा. तब युसुफ मिस्र के भंडारों को खोलकर अन्न बेचने लगा और सारी पृथ्वी के लोग उसके पास अन्न मोल लेने के लिए आने लगे. जब याकूब ने सुना कि मिस्र में अन्न है तो उसने अपने बेटों से कहा कि वहाँ जाकर अन्न मोल ले आएं. इस पर उसके दस बेटे अर्थात् युसुफ के दस भाई मिस्र के लिए निकले. जब वे मिस्र में पहुँचे तो युसुफ ने तो उन्हें आसानी से पहचान लिया लेकिन वे युसुफ को पहचान न पाए. अतः युसुफ ने उनके साथ सख़्ती का व्यवहार किया और उन्हें भेदिया कहकर इस शर्त पर अन्न देने के लिए राज़ी हुआ कि वे एक भाई को मिस्र में छोड़कर अपने घरवालों की भूख मिटाने के लिए थोड़ा अन्न ले जाएं और जब वे अपने सबसे छोटे भाई को मिस्र लेकर आएं तभी वह उनकी बात पर विश्वास करके उनके बंदी बनाए गए भाई को उनके साथ जाने देगा. तब युसुफ की आज्ञानुसार उनके बोरे अन्न से भरे गए और एक जन के बोरे में रूपये भी रखे गए. साथ ही साथ उनके मार्ग के लिए कुछ भोजनवस्तु का भी प्रबंध कर दिया गया. तब वे सब वहाँ से निकलकर कनान देश में गए और अपने पिता याकूब से मिलकर सारा वृतांत बता दिया. लेकिन याकूब बिन्यामीन को उनके साथ भेजने के लिए राज़ी न हुआ. उधर जब अन्न ख़त्म होने लगा, तब याकूब ने अपने बेटों से कहा कि मिस्र जाकर अन्न ले आएं. तब उसके बेटों ने अपने पिता से उस चेतावनी का वर्णन दोबारा किया कि जब तक वे अपने छोटे भाई को साथ न ले जाएं तब तक न तो वह शिमोन को छोड़ेगा न ही उन्हें अन्न देगा. अतः याकूब अपने छोटे बेटे बिन्यामीन को उनके साथ भेजने के लिए राज़ी हो गया. इतना ही नहीं उसने उनके साथ देश की उत्तम वस्तुओं को जैसे कि बलसान, मधु, सुगन्ध द्रव्य, गन्धरस, पिस्ते और बादाम उनके साथ भेज दिए. साथ ही वे रूपये भी जो उन्होंने अन्न के बोरे में पाए थे, उन्हें भी भेज दिया. जब वे उन वस्तुओं के

साथ पुनः मिस्र पहुँचे तो उनके मन में यह सोचकर डर था कि युसुफ उनके साथ क्या करेगा? अतः जब वे उससे मिले तो उन्होंने सारी भेंट के साथ उसे दंडवत किया और अपने छोटे भाई बिन्यामीन के साथ उनकी मुलाकात कराई. अपने भाई के प्रति स्नेह के कारण युसुफ रो पड़ा, लेकिन स्वयं को संभालकर उसने उनके साथ अच्छा व्यवहार किया. उनके साथ भोजन किया और भरपूरी के साथ उसके भाईयों ने मनमाना खाया-पिया.

तब युसुफ ने अपने घर के अधिकारी को आज्ञा दी कि उनके बोरों में जितनी भोजनवस्तु समा सके उतनी भर दे और एक-एक जन के रूपये को उसके बोरे के मुँह पर उसके अन्न के रूपये के साथ रख दे और मेरा चाँदी का कटोरा छोटे के बोरे के मुँह पर उसके अन्न के रूपये के साथ रख दे. उसने ऐसा इसलिए कराया ताकि उनपर चोरी का इल्ज़ाम लगाकर वह अपने छोटे भाई को अपने पास रखे. उसने ऐसा ही किया, लेकिन अपने भाई यहूदा के निवेदन करने पर वह अपने आप को संभाल न पाया. उसने आज्ञा दी कि उसके आस-पास के सब लोगों को बाहर कर दिया जाए और वह अपने भाइयों के साथ अकेला रह गया. वह चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगा और स्वयं को अपने भाइयों पर प्रगट कर दिया. उसके भाई अत्यंत डर गए लेकिन युसुफ ने अपने पिता का हाल लिया और उन्हें ढ़ाढ़स बंधाया कि उनकी कोई हानि न होगी. उसने अकाल के विषय उन्हें बताया और कहा कि परमेश्वर ने आज के दिन के लिए ही ये सारा प्रबंध किया था. अतः उसने भाइयों से कहा कि जाकर पिता को सब कुछ बताएं कि कैसे परमेश्वर ने उसे मिस्र का स्वामी ठहराया है. उसने उन्हें आश्वासन दिया कि वह उन्हें उनके बेटे, पोते, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों और उनके सब कुछ समेत गोशेन देश में बसाएगा. इस बात का समाचार फ़िरौन के भवन में पहुंचाया गया और इससे फ़िरौन और उसके कर्मचारी भी प्रसन्न हुए. युसुफ ने फ़िरौन की आज्ञानुसार उन्हें गाड़ियाँ दीं ताकि वे अपने पिता और अपने घर के लागों को मिस्र ले आएं जिससे कि वे वहाँ भरपूरी का जीवन जिएँ और उन्हें किसी बात की घटी न हो. उन्होंने कनान जाकर याकूब को सब कुछ बताया और तब याकूब अपने सारे घराने समेत मिस्र को चला गया. याकूब के घराने के सारे प्राणी जो मिस्र में आए थे, वे सब मिलाकर सत्तर थे. युसुफ अपने पिता और परिवार समेत फ़िरौन से मिला और उसने उन्हें गोशेन देश में बसने की आज्ञा दी.

अकाल के समय युसुफ ने मिस्र देश में उत्तम प्रबंध किया और रूपयों के ख़त्म हो जाने के कारण लोगों से पशु मोल लेकर उन्हें भोजनवस्तु उपलब्ध

कराया. जब फिर से उनका रूपया ख़त्म हो गया तब उन्होंने अपनी ज़मीन दे दी. इस प्रकार मिस्र की सारी भूमि फ़िरौन की हो गई, सिर्फ याजकों से उनकी भूमि न ली गई, क्योंकि उनके खाने-पीने का प्रबंध फ़िरौन की ओर से हो रहा था. अतः युसुफ ने लोगों को ज़मीन में बीज बोने के लिए दिया और उन्हें फ़िरौन को सारी उपज का पंचमांश देने के लिए कहा. इस प्रकार युसुफ ने पूरे अकाल में प्रबंध किया साथ ही अपने पिता के घराने समेत अपने भाइयों की देख-रेख करता रहा. वह 110 वर्ष तक जीवित रहकर अपने बेटे और परपोतों को भी देखने पाया.

शैतान ने शालीमार को यह कहानी सुनाकर उससे कहा कि,
'जब युसुफ में परमेश्वर का आत्मा रहता था, तो उसने कनान लौटते हुए अपने छोटे भाई के बोरे में चाँदी का कटोरा छिपाकर उस पर चोरी का ग़लत और झूठा इल्ज़ाम क्यों लगाया, जबकि वचन कहता है कि परमेश्वर का झूठ बोलना अनहोना है?' इस प्रश्न का सही और सटीक उत्तर देना वरना तुम्हारी भी कब्र भी यहाँ बनते देर नहीं लगेगी?'

तब शैतान ने यह कहानी सुनाकर शालीमार से कहा. वह बोला कि,

'सबसे पहले तो इस बात पर निर्णय लेना अत्यंत आवश्यक है कि, पवित्र आत्मा क्या है? पिता परमेश्वर कौन है? यीशु मसीह कौन हैं? पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा- बाइबल के अनुसार परमेश्वर, परमेश्वर है और वह पिता है. यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र है और अन्य दूतों से बिलकुल ही भिन्न हैं. उन्होंने कभी भी यह नहीं कहा है कि, 'वह परमेश्वर हैं, अथवा परमेश्वर के तुल्य है. हां, उन्होंने सदा ही परमेश्वर को अपना पिता कहकर सम्मान दिया है. उन्होंने यह अवश्य ही कहा है कि, 'जिसने मुझे देखा है, उसने पिता को देखा है, मैं पिता में हूँ और पिता मुझमें है. पिता अपना काम मुझमें रहकर करता है. तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते हो, लेकिन मेरे कामों को ही देखकर विश्वास करो कि, पिता ने मुझे भेजा है.'

इसी तरह से, पवित्र आत्मा भी परमेश्वर न होकर, परमेश्वर की तरफ से कार्य करनेवाली पवित्र शक्ति है. वह एक प्रकार से परमेश्वर के कार्यों को करवाने के लिए उसका वह सहायक है जो केवल परमेश्वर की आज्ञा के बाद ही किसी को दिया जाता है. यीशु मसीह ने भी जब वे इस संसार से स्वर्गारोहण के लिए तैयार थे तो उन्होंने अपने शिष्यों को ये आश्वासन दिया था कि, वे पिता के पास जाते हैं और उनसे अनुरोध करेंगे कि, वह तुमको एक सहायक अर्थात पवित्र आत्मा भेजे, ताकि तुम सब लोग उसके साथ मेरे कामों को कर सको.

इसलिए, उपरोक्त तीनों शक्तियों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि, पिता परमेश्वर अपने स्थान पर है, यीशु मसीह अपने सिंहासन पर, अपनी जगह पर हैं और पवित्र आत्मा की अपनी जगह और अपनी शक्ति अलग है. कहने का आशय है कि, तीन परमेश्वर नहीं हो सकते हैं- क्योंकि, परमेश्वर तो एक ही है. हां, ये अलग बात है कि, इन तीनों में से दो; यीशु मसीह और पवित्र आत्मा, की शक्तियाँ लगभग, लगभग, परमेश्वर के समान ही हैं, मगर ये परमेश्वर का स्थान नहीं लेंगे. अगर ऐसा होता तो संसार के अंत का दिन और समय यीशु मसीह को भी मालुम होता. जबकि, यीशु मसीह कहते हैं कि, '36 उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत, और न पुत्र, परन्तु केवल पिता' (मत्ती 24:36).

एक अन्य बात और बहुत महत्वपूर्ण भी है कि, क्या स्वर्ग के दूतों में पवित्र आत्मा निवास नहीं करता है? क्या यीशु मसीह में परमेश्वर का पवित्र आत्मा नहीं रहता है और क्या तुम में भी (शैतान) में भी वही पवित्र आत्मा नहीं जो अन्य स्वर्गदूतों में भी है? मुझे मालुम है कि, सबका उत्तर हां में होगा. अगर सबका कहना हां है, तो फिर तुम अर्थात, शैतान क्यों पवित्र आत्मा के रहते हुए परमेश्वर के विरोध में काम करते हो और सारी दुनिया को भरमाते रहते हो? क्यों परमेश्वर के लोगों के लिए चाहते हो कि वे अपने परमेश्वर के मार्ग से भटक जाएँ और उनके विरुद्ध हो जाएँ?

क्योंकि, पवित्र आत्मा परमेश्वर की एक शक्ति है जो उसके कामों को करने के लिए उसके अनुयायियों की सहायता करती है. अब यह और बात है कि, परमेश्वर के भक्त और उसके अनुयायी किस तरह से पवित्र आत्मा का उपयोग अपने जीवन में करते हैं? नया नियम में, पौलुस अपने पत्र 1 कुरिन्थियों के अध्याय 6:19 में कहता है कि, '19 क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है; जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो?'

इसलिए, जब हम मनुष्यों की देह (यहाँ पर पौलुस उन मनुष्यों की बात कर रहा है जो प्रभु यीशु मसीह के चुने हुए हैं और उनके सुसमाचार के प्रचार व प्रसार का काम कर रहे होते हैं. जिन्हें पवित्र आत्मा का वरदान मिला हुआ है. आम और साधारण मनुष्यों के बारे में नहीं.) परमेश्वर का मन्दिर है और उसका पवित्र आत्मा, देह में विराजमान रहता है, पर उसको उपयोग करने की इच्छा और मर्जी उसी की है जिसकी देह को परमेश्वर ने उसका मन्दिर बनाया हुआ है.

अगर मनुष्य इस पवित्र आत्मा का उपयोग गलत तरीके से, बुरे कर्मों के लिए करेगा तो परमेश्वर उस पवित्र आत्मा को, अपने पास बुला लेगा.

युसुफ के बारे में परमेश्वर को मालुम था कि, वह पवित्र आत्मा का उपयोग अपने भाइयों, अपने पिता और अपने सम्पूर्ण परिवार की भलाई के लिए कर रहा है. उसने अपने भाइयों के सामने खुद को प्रगट करने के लिए एक युक्ति, एक उपाय लिया था. हांलाकि, उसने कोई भी झूठ नहीं बोला था, बल्कि, अपने तरीके का उपयोग करते हुए बिन्यामीन पर चोरी का इलज़ाम लगाया था. जबकि, सब जानते थे कि, बिन्यामीन की अनाज की बोरी में, गेहूं भरनेवाले और चांदी का कटोरा रखनेवाले स्वयं मिस्री ही थे.'

शालीमार से अपने प्रश्न का उत्तर सुनने के पश्चात शैतान एक आंधी के से वेग के साथ, चीखता हुआ किसी दूसरी कब्र पर जाकर बैठ गया.

जोंक"

रोपनी जब करते हैं कर्षित किसान ;
तब रक्त चूसते हैं जोंक!
चूहे फसल नहीं चरते
फसल चरते हैं
साँड और नीलगाय.....
चूहे तो बस संग्रह करते हैं
गहरे गोदामीय बिल में!
टिड्डे पत्तियों के साथ
पुरुषार्थ को चाट जाते हैं
आपस में युद्ध कर
काले कौए मक्का बाजरा बांट खाते हैं!
प्यासी धूप
पसीना पीती है खेत में
जोंक की भाँति!
अंत में अक्सर ही
कर्ज के कच्चे खट्टे कायफल दिख जाते हैं
सिवान के हरे पेड़ पर लटके हुए!
इसे ही कभी कभी ढोता है एक किसान
सड़क से संसद तक की अपनी उड़ान में!

Photography by chetna.com

गोलेन्द्र पटेल

बाल-ज्ञान

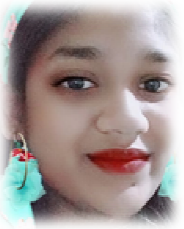

अब्राहम का बुलाया जाना

उत्पत्ति 12:1-13:18

बाइबल के समय का एक बड़ा और सुप्रसिद्ध देश था- बेबीलोन. उसके महानगर उर जो आज के वर्तमान का ईराक देश है; एक अत्यंत धर्मी व्यक्ति रहता था. उसका नाम अब्राहम था. अब्राहम परमेश्वर के भय में रहनेवाला और उसकी इबादत करनेवाला व्यक्ति था. एक दिन परमेश्वर ने अब्राहम से कहा कि, 'अपने देश, और अपनी जन्मभूमि, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा. और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और तुझे आशीष दूंगा, और तेरा नाम बड़ा करूंगा, और तू आशीष का मूल होगा. और जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे.'

सो यहोवा के इस वचन के अनुसार अब्राम चला; और लूत जो उसका भतीजा था; वह भी उसके संग चला; और जब अब्राम हारान देश से निकला उस समय वह पचहत्तर वर्ष का था. अब्राम अपनी पत्नी सारै, और अपने भतीजे लूत को, और जो धन उन्होंने इकट्ठा किया था, और जो प्राणी उन्होंने हारान में प्राप्त किए थे, सब को ले कर कनान देश में जाने को निकल चला; और वे कनान देश में आ भी गए. उस देश के बीच से जाते हुए अब्राम शकेम में, जहां मोरे का बांज वृक्ष है, पंहुचा; उस समय उस देश में कनानी लोग रहते थे. तब यहोवा ने अब्राम को दर्शन देकर कहा, यह देश मैं तेरे वंश को दूंगा: और उसने वहां यहोवा के लिये जिसने उसे दर्शन दिया था, एक वेदी बनाई. फिर वहां

से कूच करके, वह उस पहाड़ पर आया, जो बेतेल के पूर्व की ओर है; और अपना तम्बू उस स्थान में खड़ा किया जिसकी पच्छिम की ओर तो बेतेल, और पूर्व की ओर ऐ नगर है; और वहां भी उसने यहोवा के लिये एक वेदी बनाई: और यहोवा से प्रार्थना की और अब्राम कूच करके दक्खिन देश की ओर चला गया. और उस देश में अकाल पड़ा: और अब्राहम मिस्र देश को चला गया कि वहां परदेशी हो कर रहे, क्योंकि देश में भयंकर अकाल पड़ा था.

परमेश्वर ने वाचा बांधी

उत्पत्ति 15:1-18

इन बातों के पश्चात यहोवा का यह वचन दर्शन में अब्राम के पास पहुंचा, कि हे अब्राम, मत डर; तेरी ढाल और तेरा अत्यन्त बड़ा फल मैं हूं. अब्राम ने कहा, हे प्रभु यहोवा मैं तो निर्वंश हूं, और मेरे घर का वारिस यह दमिश्की एलीएजेर होगा, सो तू मुझे क्या देगा? और अब्राम ने कहा, मुझे तो तू ने वंश नहीं दिया, और क्या देखता हूं, कि मेरे घर में उत्पन्न हुआ एक जन मेरा वारिस होगा. तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा, कि यह तेरा वारिस न होगा, तेरा जो निज पुत्र होगा, वही तेरा वारिस होगा. और उसने उसको बाहर ले जाके कहा, आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन, क्या तू उन को गिन सकता है? फिर उसने उससे कहा, तेरा वंश ऐसा ही होगा.अब्राहम ने यहोवा पर विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना. और उसने उससे कहा मैं वही यहोवा हूं जो तुझे कसदियों के ऊर नगर से बाहर ले आया, कि तुझ को इस देश का अधिकार दूं. उसने कहा, हे प्रभु यहोवा मैं कैसे जानूं कि मैं इसका अधिकारी हूंगा.यहोवा ने उससे कहा, मेरे लिये तीन वर्ष की एक कलोर, और तीन वर्ष की एक बकरी, और तीन वर्ष का एक मेंढ़ा, और एक पिण्डुक और कबूतर का एक बच्चा ले. और इन सभों को ले कर, उसने बीच में से दो टुकड़े कर दिया, और टुकड़ों को आम्हने-साम्हने रखा: पर चिड़ियाओं को उसने टुकड़े न किया. और जब मांसाहारी पक्षी लोथों पर झपटे, तब अब्राहम ने उन्हें उड़ा दिया. जब सूर्य अस्त होने लगा, तब अब्राम को भारी नींद आई; और देखो, अत्यन्त भय और अन्धकार ने उसे छा लिया. तब यहोवा ने अब्राम से कहा, यह निश्चय जान कि तेरे वंश पराए देश में परदेशी हो कर रहेंगे, और उसके देश के लोगों के दास हो जाएंगे; और वे उन को चार सौ वर्ष लों दु:ख देंगे; फिर जिस देश के वे दास होंगे उसको मैं दण्ड दूंगा: और उसके पश्चात वे बड़ा धन वहां से ले कर निकल आएंगे. तू तो अपने पितरों में कुशल के साथ मिल जाएगा; तुझे पूरे बुढ़ापे में

मिट्टी दी जाएगी, पर वे चौथी पीढ़ी में यहां फिर आएंगे: क्योंकि अब तक एमोरियों का अधर्म पूरा नहीं हुआ. और ऐसा हुआ कि जब सूर्य अस्त हो गया और घोर अन्धकार छा गया, तब एक अंगेठी जिस में से धुआं उठता था और एक जलता हुआ पलीता देख पड़ा जो उन टुकड़ों के बीच में से हो कर निकल गया. उसी दिन यहोवा ने अब्राम के साथ यह वाचा बान्धी, कि मिस्र के महानद से ले कर परात नाम बड़े नद तक जितना देश है, अर्थात, केनियों, कनिज्जियों, हित्तियों, परीज्जियों, रपाइयों, एमोरियों, कनानियों, गिर्गाशियों और यबूसियों का देश मैंने तेरे वंश को दिया है.

नबी एलिय्याह

बाइबल में यूँ तो नबियों की बहुतायत नहीं तो ये कम भी नहीं हैं. बाइबल इस बात की साक्षी है कि, परमेश्वर ने अपना कार्य समय-समय पर अपने चुने हुए नबियों से ही करवाया है. सचमुच में ये नबी हमेशा से परमेश्वर के जन होते थे और परमेश्वर इनसे दर्शनों आदि के द्वारा बातें करके अपने निर्देश इन्हें देता था. बाद में यही नबी लोग परमेश्वर का संदेश प्रजा को दिया करते थे. पुराने समय में इन नबियों का इतना अधिक श्रेष्ठ मूल्य था कि, देश के राजागण तक इनसे भय खाया करते थे.

इन्हीं नबियों में दो नाम एलिय्याह और एलीशा भी थे. एलिय्याह के नाम का अर्थ, 'यहोवा ही परमेश्वर है' से आता है. उसका महान कार्य था कि, उसने यह साबित क्र दिया था कि, 'बाल का देवता'हवार न होकर यहोवा ही सच्चा परमेश्वर है. उसका पहला कार्य दुष्ट राजा अहाब को परमेश्वर के न्याय के बारे में अवगत कराना था. राजा अहाब और उसकी प्रजा के पाके कारण सारे देश को तीन सालों तक अकाल का सामना करना पड़ा था. फिर इन तीन सालों के बाद एलिय्याह ने स्वयं को कर्मेल के पहाड़ पर बाल के पुजारियों के सामने यहोवा की शक्ति के साथ प्रगट किया था. उस समय एलिय्याह सकेला था और उसके विरुद्ध राजा अहाब, उसकी दुष्ट रांवी इजाबेल और साथ में लगभग बाल के चार सौ पुजारी थे. बाद में यह अनोखी प्रतियोगिता एक भयानक रक्त के साथ हत्याओं के रूप में समाप्त हुई थी. अहाब ने नबोत के साथ जो दुर्व्यवहार किया था, एलिय्याह ने इसका विरोध किया था और कहा था कि, वह इसी कारण से मरेगा. बाद में एलिय्याह की यह बात सही साबित हुई थी.

मनन / जुलाई 2021 - एक.

'46 जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो? 47 जो कोई मेरे पास आता है, और मेरी बातें सुनकर उन्हें मानता है, मैं तुम्हें बताता हूं कि वह किस के समान है 48 वह उस मनुष्य के समान है, जिस ने घर बनाते समय भूमि गहरी खोदकर चट्टान की नेव डाली, और जब बाढ़ आई तो धारा उस घर पर लगी, परन्तु उसे हिला न सकी; क्योंकि वह पक्का बना था. 49 परन्तु जो सुनकर नहीं मानता, वह उस मनुष्य के समान है, जिस ने मिट्टी पर बिना नेव का घर बनाया। जब उस पर धारा लगी, तो वह तुरन्त गिर पड़ा, और वह गिरकर सत्यानाश हो गया.' - लूका 6:46-49.

अभी पिछले दिनों, यू-ट्यूब पर एक वीडियो प्रचलित हुआ था. इस वीडियो में एक सड़क के किनारे सीमेंट का बना हुआ तिमंजला मकान मात्र एक ट्रक के गुज़र जाने के बाद, पेड़ से टूटे हुए पत्ते के समान ढह कर धराशायी हो गया. किसी को कुछ भी अंदाजा नहीं हो सका कि, ये मकान क्योंकर गिरकर चकनाचूर हो गया है? लेकिन जब बाद में इसके गिरने के कारणों की खोज हुई तो पता चला कि, यह मकान सरकारी नियमों के अनुसार समुचित सिविल इंजीनियर की देख-रेख में न बनाकर, किसी नौसिखिये के द्वारा तैयार करवा दिया गया था. मकान बनवाने वाले मालिक ने इस बारे में ना तो किसी की सुनी थी और ना ही इमारत के बनवाने वाले नियमों और कानूनों का पालन किया था.

बाइबल में, उपरोक् सन्दर्भ में भी यीशु मसीह यही बात दोहराते हैं. यीशु मसीह का कहना है कि, जो कोई उनके पास आता है और उनका कहना मानता है वह उस मनुष्य के समान है जो अपना मकान चट्टान पर बनाता है और जो नहीं कहना मानता है, वह उस मूर्ख मनुष्य के समान है जो अपने मकान की नींव बालू पर बनाता है. फलस्वरूप चट्टान पर मकान बनाने वाले का घर स्थिर रहता है और बालू पर नींव डालनेवाले का घर जरा सी हवाओं के प्रभाव से ही ढह जाता है. इसी तरह से परमेश्वर की आज्ञा मानकर चलने वाला मनुष्य, बाइबल के पढ़ने से, प्रार्थना करने से, उससे प्यार करने से; हर तरह से बलवान रहता है और वह शैतानी आँधियों, उसके साथ की लड़ाइयों और उसकी चालबाजियों में भी नहीं बहक पाता है, क्योंकि, परमेश्वर का अपार प्रेम उसकी हर समय सहायता करता है. आपका मकान किस तरह की नींव पर बनाया गया है? विचार करें.

प्रार्थना - परमेश्वर, मैं अपने जीवन का घर आपके वचन के मजबूत पत्थर पर बनाना चाहता हूँ. मेरी सहायता करें. आमीन.

दो.

'22 पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, 23 और कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं; ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं. 24 और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उस की लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है. 25 यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी. 26 हम घमण्डी होकर न एक दूसरे को छेड़ें और न एक दूसरे से डाह करें (गलातियों 5:22-26).

एक बार एक अमेरिकन वुडस्टॉक चर्च, जॉर्जिया की सर्विस में वहां के पास्टर रेव्ह. जॉनी हंट ने बताया कि, एक दस साल की बच्ची ने उन्हें पत्र लिखकर पूछा कि, 'अंकल, क्या आप गारंटी से कहते हैं कि, जिस तरह से आप बहुत अच्छे दिखते हैं, क्या बिलकुल ऐसे ही अच्छे रूप में आप स्वर्ग में भी जायेंगे?' उस लड़की का सवाल स्वर्ग में हम कैसे दिखेंगे, इस बात के लिए था. उसका सवाल बहुत सटीक और बहुत कुछ सोचने योग्य था.

हम सभी जानते हैं कि, हमारा स्पष्ट दिखनेवाला चेहरा, हमारी उस आत्मा या रूह का प्रारूप है जो हम में से किसी को भी दिखाई नहीं देती है. सचमुच हमारी आत्मा का प्रारूप ही स्वर्ग या नर्क में जाएगा,और हमारा शरीर यहीं इस संसार की मिट्टी में मिल जाएगा. इसलिए हमें सोचना यह है कि, हम अपने कैसे चेहरे को लेकर परमेश्वर के सामने अपने न्याय के लिए खड़े होते हैं? पौलुस अपनी पत्री में जो उसने गलातियों की कलीसिया के नाम लिखी थी, कहता है कि, आत्मा के फल; प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम हैं. यदि उपरोक्त सारी अच्छी बातों को रखते हुए हम इस धरती से प्रस्थान करेंगे, तो सचमुच हमारा चेहरा भी वैसा भला और ईमानदार दिखेगा. और अगर हम अपनी बुराइयां भरकर चलेंगें तो हमारा मुख भी वैसा ही बुराई करनेवाला और डाह से भरा हुआ दिखेगा.

हम जैसा भी चेहरा लेकर इस दुनियां में आये हैं, उसके बदलाव के लिए हम कुछ भी नहीं कर सकते हैं. लेकिन अगर हमारा दिखना ज्यादा आकर्षक नहीं है तो उसे हम अपनी धर्मी बातों और कामों के द्वारा सजा सकते हैं. इसलिए हमें यह सोचना है कि, हम अपनी आत्मा को किस तरह से सजाते है? क्योंकि, हमारा चेहरा ही हमारी आत्मा का प्रारूप है.

प्रार्थना -

प्रभु यीशु मसीह, मैं हर दिन आपके स्वभाव के साथ बनना चाहता/चाहती हूँ. आइये और मेरे दिल में बसकर, मेरी सहायता करिये, ताकि मैं अपने आत्मिक रूप को आपकी इच्छानुसार सवांर सकूं और बना सकूं. आमीन.

मनन/ अगस्त 2021- एक

'38 तब उस ने पुकार के कहा, हे यीशु दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर. 39 जो आगे जाते थे, वे उसे डांटने लगे कि चुप रहे: परन्तु वह और भी चिल्लाने लगा, कि हे दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर.' -लूका 18:38-39.

एक बार, रसायनिक लैब में काम करते समय मेरा मित्र, माइक्रोस्कोप के सामने बार-बार अपनी आँखों को मलता था, पोंछता था, मगर फिर भी वह ठीक से देख नहीं पा रहा था. उसे देखकर उसके साथी ने एक दूसरा चश्मा जिसे 'सेफ्टी ग्लासिस' के तौर पर इस्तेमाल किया करते हैं, उसे दिया और कहा कि, लो इसे लगाकर देखो. सम्भव है कि तुमको कुछ सहायता देखने में मिले. उस व्यक्ति ने वह सेफ्टी ग्लासिस लगाये तो उसका चेहरा तुरंत ही खिल उठा. उसे साफ़ नज़र आ रहा था. 'तुम्हें, आँखें चेक करवाकर चश्में की जरूरत है,' उसके साथी ने कहा और फिर बात सामान्य हो गई. उस दिन के बाद से वह व्यक्ति चश्में का उपयोग करने लगा था. अब उसे किसी भी तरह की परेशानी देखने में नहीं थी.

बाइबल में उपरोक्त सन्दर्भ के साथ ऐसी ही एक कहानी है. एक जन्म का अंधा, किसी निश्चित स्थान पर बैठकर भीख माँगा करता था. हम में से हर किसी ने यह कहानी सूनी और पढ़ी भी होगी.हो सकता है कि, इसी कहानी पर सरमन भी सुने हों? यह व्यक्ति जन्म का अंधा था, मगर उसे एक बात पर विश्वास था कि, यीशु मसीह उसके अंधेपन को दूर करके उसे ज्योति दे सकते हैं. इसीलिये जब एक दिन यीशु मसीह उस रास्ते से गुज़रे तो यह जानकार कि, यीशु मसीह जा रहे हैं, वह अंधा व्यक्ति अपने बड़े शब्दों से चिल्लाने और पुकारने लगा कि, 'हे यीशु, दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर.' हांलांकि, लोगों ने उसे चिल्लाने को मना किया, उसे रोका भी, मगर उस अंधे मनुष्य ने यीशु मसीह को पुकारना बंद नहीं किया. बाद में यीशु मसीह ने उसका पुकारना सूना और फिर उसको जीवन-ज्योति प्रदान की. उसकी आँखों में चंगाई दी और वह अब बाकायदा देखने लगा.

कई बार मनुष्यों के जीवन में भी आत्मिक अन्धकार भरा रहता है, मगर वे कभी भी उस अन्धकार से बाहर आने की कोशिश नहीं करते हैं या कर पाते हैं. अगर करते भी हैं तो वे किसे पुकारते हैं? यह एक अहम सवाल है. आज आवश्यकता है, सही जगह, सच्चे परमेश्वर को पुकारने की.

प्रार्थना- पिता परमेश्वर हमारी आँखों को खोल, ताकि, हम जान सकें कि, यीशु कौन है और वह हमारी कैसे सहायता कर सकता है. आमीन.

दो. '10 मेरे माता पिता ने तो मुझे छोड़ दिया है, परन्तु यहोवा मुझे सम्भाल लेगा.' - भजन संहिता 22:10

एक बार, स्टोर में 'फादर्स डे' के दिन से एक दिन पहले शनिवार को मुझे मेरा मित्र, जो मेरे ही साथ काम करता था, अचानक से मिल गया. उसके साथ उसकी महिला मित्र भी. मेरे मित्र की महिला दोस्त अपने पिता के लिए 'फादर्स डे' पर, उन्हें शुभकामनाएं देने के लिए कार्ड खरीद रही थी. उसे देखकर मैंने अपने मित्र से यूँ ही पूछ लिया और कहा कि,' तुम नहीं खरीद रहे हो कार्ड, 'फादर्स डे' पर अपने पिता को देने के लिए?' मेरी इस बात पर, पहले तो मेरे मित्र ने मुझे गम्भीरता से देखा, फिर न जाने क्या सोचता हुआ बोला,' नहीं. मेरा कोई रिलेशन नहीं है अपने पिता से, करीबन बारह साल से.' उसकी बात सुनकर मुझे बहुत बुरा भी लगा, पर मैंने उससे आगे कुछ भी नहीं कहा.

आप और हमने बहुत सारे शुभकामनाएं देने के लिए 'फादर्स डे' के कार्ड देखे होंगे. अक्सर हरेक कार्ड पर एक से एक अच्छी-अच्छी बातें, लिखी होती हैं, पर कहीं भी किसी भी कार्ड पर ऐसी कोई बात लिखी हो, जिसमें पिता से बिगड़े हुए सम्बन्धों के बारे में, उनके सुधार के लिए भी कुछ लिखा हो; आप और मैंने, नहीं देखा होगा? भजन संहिता के अध्याय 27 में इस्राएल का राजा दाऊद अपने स्वर्गीय पिता यहोवा से अपने जीवन के लिए साहस, पराक्रम और उसकी रक्षा करने के लिए दुआएं माँगता है. यहाँ एक बात हम देखते हैं कि, जब दाऊद यहोवा के सामने अपनी परेशानियां रखता है, उससे कुछ माँगता है तो आगे के पदों में वह यहोवा से उपरोक्त सारी बातों को पूरा होने की आशा भी रखता है. उसका कहना है कि, यहोवा ने उसकी प्रार्थना को सुना है और उसने दाऊद की प्रार्थना को ठुकराया नहीं है. मगर अक्सर लोग शिकायत करते हैं कि, जब भी ऐसा उनके साथ उनके पृथ्वी के पिता के सामने होता है तो उनके पितागण अपने बच्चों की प्रार्थनाओं पर ध्यान भी नहीं देते हैं. इसी बात को राजा दाऊद उपरोक्त दसवें पद में स्पष्ट करता है कि, 'उसके भूमि पर के माता-पिता ने तो उसे त्याग दिया है, मगर स्वर्गीय पिता ने उसे संभाला हुआ है. इसलिए हमें ये विश्वास रखना चाहिए कि, भले ही हमारे सम्बन्ध इस जमीं पर अपने माता-पिता तथा अन्य से खराब हो जाएँ मगर ये सम्बन्ध कभी भी अपने स्वर्गीय पिता के साथ नहीं बिगड़ने चाहिए.

प्रार्थना- हमारे स्वर्गीय पिता, आपका धन्यवाद हो, जो हमें कभी भी, हमारी मुसीबतों, कठिन दिनों में नहीं छोड़ता है. वह हमसे अत्यंत प्रेम करता है. आमीन.

कहानी विधा

कैसे लिखें?

अंतिम किश्त

पिछली किश्तों में आपको बताया गया था कि, कहानी का आरम्भ कैसे और रोचकता के साथ करें. जब एक बार कहानी आरम्भ हो चुकी है तो फिर उसमें घटनाक्रम कैसे लगायें? इसके बाद कहानी तमाम उतार-चढ़ाव के बाद क्लाइमेक्स पर आ जाती है. इसके बाद हम अब आगे चलेंगे और बतायेंगे कि, कहानी का अंत कैसे करें?

आमतौर पर, क्लाइमेक्स पर कहानी के आने बाद बहुत कम पृष्ठ लिखने के लिए रह जाते हैं. आपके सामने सवाल आने लगता है कि, कहानी का अंत सुखद करें अथवा दुखद? सुखद अंत कहानी में समीक्षाओं के बहुत कम मिलने के आसार रहते हैं, और दुखद अंत की कहानी में समीक्षाओं की बाढ़ सी आ जाती है. इसलिए बहुत सतर्क रहने की आवश्यकता है कि यदि आप कहानी का अंत दुखद करते हैं तो आपके पास इसके समुचित उत्तर भी होने चाहिए. बे-मतलब किसी को मारकर, जलाकर, कत्ल करवाकर आपकी कहानी का अंत बुरा और दुखद तो हो सकता है, मगर इसको करने से पहले आपके पास बयानबाजी के समुचित उत्तर भी होने चाहिए. इसी तरह से यदि आप कहानी के मध्य में ऐसा कोई जघन्य अपराध करवाते हैं तो उसको करवाने से पहले आपके पास समुचित कारण और आधार भी होने चाहिए. बरना आपकी कहानी नाटकीय भी हो सकती.

यदि कहानी का अंत दुखद है तो अंतिम वाक्य, या अंतिम पैराग्राफ की अंतिम दो लाइनें लगने वाली, पाठक का दिल चीर देने जैसी और आंखें भर देने जैसी होनी बहुत आवश्यक हैं. उदाहरण के लिए;

1. दोनों ही ने नीली को खो दिया था- एक ने स्वार्थ में तो दूसरे ने शक में.'
2. एक ने अपना जीवन प्यार की इबादत में दिया था तो दूसरी ने पूजा में. ये जानते हुए भी कि, आराधना तो केवल ईश्वर की ही की जाती है.'
3. जाने क्यों, रोमी ने भावुकता को प्यार समझ लिया था? वास्तविकता के धरातल से टकराकर जब सपने चकनाचूर हुए तब उसकी समझ में आया कि, प्यार की किताबों में जो लिखा है वह तो सब झूठ है. सच तो वह है जो वह अपनी आँखों से देख रही है- और सच यह था कि, रोहित अपनी दुल्हन रीमा को सजाकर अपने घर ले जा चुका था. यही सच था- जीवन का कठोर सच; एक ऐसा तमाचा कि, जिसके एक ही प्रहार से उसके प्यार की सच्चाई उसकी आँखों

के सामने आ चुकी थी. इसकदर कि, वह अब उसके आगे अपने प्यार की भीख के दो अंश भी मांगने के काबिल नहीं रही थी. '

4. आप लोग उस गरीब, भोली-भाली और बेहद शालीन लड़की रोमिका के कातिल हैं, जो समाज, कानून और धर्म; तीनों ही तरीके से मेरी पत्नी, आपकी बहु और मेरे पैदा होनेवाले बच्चे की मां थी. मेरी आपके घर में कोई भी जगह नहीं है, जहां मुझे जाना चाहिए, मैं वहीं जाता हूँ. दूसरे ही क्षण तुगभद्रा की विशाल घूमती हुई लहरों में नाथन का शरीर एक पल को दिखा फिर अंतराल में सदा के लिए समा गया.

अब तुगभद्रा शांत थी तो नाथन को लेने आये हुए चर्च के पादरी, उसके मां-बाप तथा अन्य बनकर आये हुए हितैषी लोग; सबके चेहरे, मृत कामनाओं की अर्थी समान लटक चुके थे.'

कहानी के अंतिम परिच्छेद में कोशिश करिये कि, एक बार कम से कम शब्दों में फिर से कहानी का सारांश आ जाए, अगर आपकी कहानी लम्बी है या फिर उपन्यास है, तब ही करिएगा. एक बार फिर से बहुत ही मंजे हुए सटीक शब्दों में लिखने की कोशिश करिये कि, 'पहले ऐसा था, अब ऐसा है. बरसात, पानी, बादल, हरियाली, उजाड़ आदि कितने ही शब्दों में आप अपनी कहानी की भूमिका तैयार कर सकते हैं. यह भी ध्यान रखियेगा कि, यह भाग्य आपकी कहानी का सम्पूर्ण निचोड़ है. कहानी के इस भाग में किसी भी तरह का बन्दरबांट, जल्दबाजी और चतुराई नहीं होनी चाहिए. आपका पाठक आपके लिखे हुए का इस स्थान से जो लेकर जाएगा, वही उसके पास सुरक्षित रहेगा.

कहानी के अंतिम चरण में आकर, बार-बार एक ही शब्द को दोहराने से बचिए. एक ही बात को दोबारा मत कहिये. कोशिश करिये कि, नायक या नायिका के मन की आंतरिक दशा को अपने शब्दों में पिरोकर पाठकों के समक्ष रखिये आपकी कहानी का जो भी शीर्षक है, हों सके तो उसकी भी अपने चंद शब्दों में व्याख्या कर दीजिये. फिर अंत में कोई एक ज़ोरदार वाक्य लिखकर अपनी कहानी को समाप्त कर दें.

कहानी की समाप्ति के पश्चात अपने पाठकों से कभी भी उनकी टिप्पणियाँ, समीक्षाएं और विचार अपनी ओर से नहीं मांगे, तो कहानी लिखकर आपने अपना जो व्यक्तित्व पाठकों के लिए बनाया है, उसे बरकरार रखने में आपको अवश्य ही मदद मिलेगी.

आशा है कि, आपको कहानी विधा का यह प्रयास अच्छा लगा होगा.

-धन्यवाद.

मेरी अर्थी तेरे फूल

धारावाहिक उपन्यास

शरोवन

प्रथम परिच्छेद

तीसरी किश्त

रात भर के सुखद विश्राम और पहाडी श्रंखलाओं का मनमोहक सौंदर्य देखते ही नितिन के बदन का सारा दर्द एक पल में ही हवा हो गया. उसका मन रोमिका और तमाम पर्वती सुन्दरता में खोकर ही रह गया.

रोमिका ने नितिन के उठते ही तुरंत हरी चाय की पत्तियों की चाय बनाई और फिर गर्म-गर्म लेकर नितिन के सामने आकर खड़ी होकर मुस्कराने लगी. इशारों में ही उसने शुभ सुबह कहा, नितिन से चाय पीने का अनुरोध किया तथा और भी बहुत सी बातें वह उससे इशारों में करने लगी. नितिन चुपचाप मुस्कराते हुए चाय पीने लगा. तब चाय आदि समाप्त करने के बाद, वह अपने डाक बंगले जाने के लिए तैयार हुआ. वह उठकर खड़ा हुआ. शरीर में अभी भी दर्द था, जो रात भर की भरी हुई ठंडक के कारण पहले से और भी अधिक

दुखने लगा था. रात भर वह डाक बंगले और अपने साथियों के मध्य से गायब रहा था, इस कारण उसे जाने की भी जल्दी थी. सो जब वह चलने को हुआ तो रोमिका ने उससे हाथ के इशारे से पूछा,

'कहाँ?'

'जा रहा हूँ.' नितिन ने छोटा सा उत्तर दिया तो रोमिका ने फिर से अपने हाथ की अंगुली को आश्चर्य से घुमाया और जानना चाहां कि,

'लेकिन, कहाँ?'

'डाक बंगले. मेरे मित्र परेशान हो रहे होंगे.' नितिन बोला.

'?'- सुनकर रोमिका चुप हो गई. साथ ही तनिक उदास भी. तुरंत ही उसकी आँखों के सामने किसी घोर निराशा के ढेर सारे बादल छा गये. इस पर नितिन ने उसके लटके हुए चेहरे और मुख पर छाई हुई उदासी को देखा तो कहा,

'रोमी?'

'?'- तब रोमिका ने अपनी पलकें उठाई और नितिन को निराश मन से देखा तो वह बोला कि,

'तुमने मुझ जैसे एक अजनबी की इस मुसीबत में देखभाल की. मेरा हर तरह से ख्याल रखा. मेरी सहायता की; मैं तुम्हें हमेशा याद रखूंगा.'

'?'- तब रोमिका ने अपने होठों पर एक खड़ी अंगुली रखते हुए उसे मौन रहने को कहा. उसका आशय था कि, 'ऐसे नहीं कहते हैं.'

नितिन रोमिका के कहने का मतलब समझ गया था. वह कह रही थी कि,' ऐसी बातें कभी नहीं कही जाती हैं. इंसान को इंसान की मदद करनी ही चाहिए. ये तो एक प्रकार से मेरा फर्ज़ और कर्तव्य था.'

नितिन घर के बाहर निकल कर आया तो रोमिका भी उसके साथ बाहर आ गई. पहाड़ी ढलान की समाप्ति पर नितिन यकायक रुक गया. उसे देखकर रोमिका के भी पग ठिठक गये. दोनों चुपचाप मौन नज़रों से एक दूसरे को देखने लगे. दोनों समझ रहे थे, जानते भी थे. दिलों में उमंगें थीं, लेकिन उन्हें बिखेरने के लिये दोनों के पास जैसे कोई भी जरिया नहीं था. बहुत कुछ कहना चाहते थे, पर शब्द नहीं थे. नितिन ने रोमिका का साथ छोड़ने से पहले उससे कहा कि,

'रोमी.'

'?'- रोमिका ने अपनी उदास भरी नज़रों से नितिन को देखा,

'तुम शाम को मुझसे मिलने आओगी न? उसी स्थान पर जहां पर मेरी तुमसे पहली भेंट हुई थी?' आओगी न? जरुर आना. मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगा?'

'?'- रोमिका ने अपने मुख से तो कुछ नहीं कहा. उसके होठ अपने ही स्थान पर थर-थराकर रह गये. वह कह भी क्या सकती थी. केवल आँखों की भाषा से स्पष्ट कर दिया. आने का वचन दे दिया. मौन स्वीकृति. अपनी गर्दन झुकाकर. नारी की मौनता ही उसकी स्वीकृति होती है. वह केवल नितिन को अपनी नीली आँखों की अस्पष्ट पुतलियों से बराबर निहारती रही. उसकी आँखों में झांकती रही. तब नितिन वहां से चला आया. संध्या की मनोरम बेला में फिर से मिलने का वचन देकर. रोमिका बहुत देर तक एक ही मुद्रा में अपने स्थान पर खड़ी रही. अकेली- मौन- बहुत खामोश- शांत-सी- खड़ी-खड़ी नितिन को जाते हुए ताकती रही. तब तक, जब तक कि, वह उसकी प्यासी आँखों से ओझल नहीं हो गया.

दूर पहाड़ों पर बादल भटक रहे थे.

इन्हीं आवारा बादलों के समान- उसके पल भर के साथ ने उसे अपना समझ लिया हो? रोमिका का भी दिल कहीं भटक चुका था. वह नहीं जानती थी कि, क्यों उसके साथ ऐसा हो रहा था? जाने क्यों उसका मन उदास हो रहा था? शायद नितिन की अनुपस्थिति के कारण ही उसके दिल की उमड़ती हुई खुशियाँ ठंडी पड़ गई थीं. दिल के ये कौन से अंदाज़ थे? कौन से रास्ते थे? जिनकी अनदेखी हुई मंजिल भी नितिन की हरेक मौजूदगी से जुड़ चुकी थी. क्यों उसके जाने के पश्चात वह उदास हो गई थी? क्यों निराश हो गई थी? क्यों उसकी धड़कनें शांत हो रही थीं? मात्र एक-दो दिन की औपचारिक जान-पहचान और अतिथि-सत्कार से कोई जीवन भर का साथी तो नहीं बन जाता हैं? फिर क्यों थी उसके मन में आई हुई ये बात? ऐसा क्यों होता था बार-बार उसके मन में? वह जानती थी कि, यूँ भी उसका इस भरे संसार में कोई अपना तो था नहीं. केवल उसके एक बूढ़े बाबा को छोड़कर. हो सकता हो यही कारण हो कि, वह ज़रा से सामीप्य और अपनत्व को पाते ही नितिन को वह अपना समझ बैठी हो? उसे अपना समझने का एहसास कर लिया हो? रोमिका खड़ी-खड़ी इसी प्रकार से सोचती रही. नितिन के मोहक ख्यालों में डूबी रही. आकाश में वायु के प्रवाह से बादल उड़े-भागे चले जाते थे. आज मौसम साफ़ था. ठंडी-ठंडी वायु चिनार और चीड़ के वृक्षों से लिपट रही थी. घाटियों से बादलों के रेले निकलकर बाहर आ रहे थे. और रोमिका थी जो अभी तक अपने एक ही स्थान पर खड़ी थी. अपनी पूर्व मुद्रा में- बहुत खामोश- इंतज़ार की अवस्था में- गुमसुम-उदास-सी.

उधर नितिन डाक बंगले पहुंचा तो उसके सभी मित्रगण आश्चर्य और हैरानी से उसका मुखड़ा ताकने लगे. इस प्रकार कि जैसे वह रातभर हवालात में बंद था और अब छूटकर वापस आया हो. सबके मुख पर एक ही सवाल था कि,'रात भर कहाँ गायब थे?' उसे देखते ही सबने उससे एक साथ पूछना आरम्भ कर दिया;
'कहाँ चले गये थे यूँ हमको बताये बगैर?'
'रात भर कहाँ गायब रहे?'
'अगर जाना ही था तो कम-से-कम हमें बताकर ही चले जाते. कौन रोकनेवाला था तुम्हें?'

तब नितिन ने सारी बात बताई. उनसे कह दिया कि, किस प्रकार वह बांसुरी के मधुर संगीत की लय पर चांदनी रात में उस घाटी तक पहुंचा. वहां जाकर वह फिसल गया. गिरने के कारण उसको कितनी सारी चोटें लगीं और क्यों उसे मजबूरी में रात भर किसके यहाँ टिकना पड़ा था. उसके मित्रों ने सुना तो सुनकर घोर आश्चर्य किये बगैर नहीं रह सके. सब ही ने मन ही मन उस अनजान लड़की के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रगट की. सचमुच यदि वह न होती तो उनका मित्र नितिन सारी रात वहीं घाटी में अकेला पड़ा रहता. इतना सब कुछ कहने-सुनने के बाद, फिर भी नितिन के मित्रों ने उसे समझाया. नई जगह और नये देश में रहते हुए हर तरह की ऊंच-नीच जैसी बातों के प्रति सतर्क रहने को कहा. पर नितिन ने उनसे कुछ भी नहीं कहा और ना ही कोई हस्तक्षेप ही किया. फिर करता भी कैसे? उसके मन-मस्तिष्क में रोमिका की छवि इस प्रकार से अपना स्थान सुरक्षित कर बैठी थी कि, उसके जरा से स्पंदनों की झंकार मात्र से ही उसके सारे बदन में एक हलचल सी मच जाती थी. जब बातों का सिलसिला समाप्त हुआ तो सब ही मित्रगण किसी दूसरे स्थान पर घूमने जाने के लिए अपना कार्यक्रम बनाने लगे.

सांझ हुई. दिन ढलते ही जैसे ही सूर्य की किरणें सुहागिन बनकर क्षितिज में अपना सोना भरने लगीं तो नितिन समय से पहले ही, रोमिका से मिलने के लिए निर्धारित स्थान पर आ गया. यह वह जगह थी कि जहां पर उसकी रोमिका से पहली मुलाक़ात एक अनोखे ढंग से हुई थी. नितिन वहां आकर काफी देर तक प्रतीक्षा करता रहा. संध्या ढले ही सारे वातावरण में हल्की धुंध की चादर फैल गई और फिर इसके साथ-साथ वातावरण में रात्रि का साया भी धीरे-धीरे कौसानी के पर्वतों के पीछे से सरकने लगा. रोमिका के आने में देर थी अथवा वह नहीं आ रही थी? लेकिन उसकी अनुपस्थिति देख कर नितिन को चिंता हो गई. रोमिका अभी तक नहीं आई थी. शाम ढलते हुए अब बिलकुल ही

रात के अँधेरे में बदली जाती थी. वह अभी भी उसके आने की बाट जोह रहा था. मगर अभी भी वह निराश नहीं हुआ था. उसके मन में एक विश्वास था कि, रोमिका अवश्य ही आयेगी. वह आयेगी जरुर, चाहे देर में ही क्यों न सही, मगर वह आयेगी अवश्य ही.

तब सचमुच रोमिका आ गई. अपने निश्चित समय से काफी देर में. इतनी अधिक देर में कि अब एक पहाड़ी के पीछे से चन्द्रमा भी झाँकने लगा था. इस चन्द्रमा की मद्धिम रोशनी में अभी भी बदलियाँ सरक रही थीं. परन्तु नितिन को इन सारी बातों की ज़रा भी परवा नहीं हुई. उसे तो रोमिका की प्रतीक्षा थी, जैसे ही वह उसके सामने आई, वह नये पेड़ पर किसी पहले फूल के समान खिल उठा. उसे देख कर उसे लगा कि वह रोमिका को अभी-अभी अपनी धड़कनों से लगा ले. इसी भावावेश में वह रोमिका के पास दौड़ता हुआ आया. परन्तु पास आते ही वह अचानक ही ठिठक गया. रोमिका उसकी इस दीवानगी पर खिल-खिलाकर हंस पड़ी. नितिन ने देखा कि, रोमिका के प्यारे-प्यारे सफेद बर्फ से दांत इस चांदनी रात में संगमरमर के मोतियों समान दमक उठे थे. नितिन रोमिका को कुछेक पल यूँ ही खड़ा हुआ गौर से देखता रहा. वह आज अपनी एक विशेष साज-सज्जा के साथ आई थी. उसने काले रंग के पहाड़ी वस्त्र पहने हुए थे. साथ ही अपने बालों को लापरवाही बांधकर नीचे तक खोल लिया था. उसके कूल्हे से भी नीचे लटकते हुए लम्बे बाल उसकी सुन्दरता में और भी चार चाँद लगा रहे थे. काले वस्त्रों में उसका सुंदर गोरा बदन और चेहरा और भी खिल उठा था.

'आओ, उस पत्थर पर बैठ कर बातें करेंगे.' कहते हुए नितिन ने अनजाने में ही रोमिका का हाथ थाम लिया. नितिन के हाथ के स्पर्श मात्र से ही रोमिका के शरीर में सिहरन-सी हो गई. इस प्रकार कि वह अपने-आप में ही सिमटकर रह गई. मगर फिर भी वह नितिन की इस बात का कोई भी विरोध नहीं कर सकी. एक प्रकार से नितिन के द्वारा उसका हाथ थामना अच्छा ही लगा. वह चुपचाप उसका पकड़े हुए उसके साथ ही बगल में पत्थर पर बैठ गई. उन दोनों के बैठते ही चन्द्रमा ने भी अचानक से एक बदली के पीछे अपना मुख छिपा लिया. तब नितिन और रोमिका बड़ी देर तक मौन बैठे रहे- बहुत खामोश-से. इस आशा में कि, पहले कौन बातों की शुरुआत करे.

'रोमी?' तब नितिन ने ही अपने साथ बैठी हुई खामोशी को तोड़ा.

'?'- रोमिका ने अपनी बड़ी-बड़ी, नीले रंग से भरी पुतलियों से नितिन को निहारा. वह बहुत खामोशी से नितिन की आँखों में झाँकने लगी.

'तुम्हारा, ये पहाड़ी देश, चिनारों से हरा-भरा, बहुत अधिक प्यारा है.'

'?'- रोमिका खुशी से केवल मुस्करा भर दी. तब नितिन ने आगे कहा कि,

'यहाँ की हरेक वस्तु सुंदर. ये ऊंचे-ऊंचे पहाड़, इन पहाड़ों की खामोशी, इनकी खामोशी में भी एक छिपी हुई मन की बात, यहाँ पास ही में कल-कल करते हुए झरनों के गिरते पानी का शोर, पहाड़ों के भटके हुए रास्ते, घाटियों में भूले-भटके आवारा बादलों की टोलियां, हर तरफ सुन्दरता- देखते ही लगता है कि, जैसे सारे भारत की प्राकृतिक सुन्दरता यहीं इसी एक जगह पर आकर एकत्रित हो चुकी है. मगर इसमें भी सबसे बढ़कर तुम्हारी सुन्दरता है. ये तुम्हारी नीली आँखें, इस नीले रंग में तैरती हुई तुम्हारी यह पुतलियाँ; इनको जो भी देखे वह अपना मार्ग ही भूल जाए.'

'?'- रोमिका ने अपनी ऐसी तारीफ़ सुनी तो मारे लाज के उसने अपना चेहरा दोनों हथेलियों से छुपा लिया.

'मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि, विधाता ने तुम्हें सब कुछ हाथ खोलकर दिया है, परन्तु तुम्हारी आवाज़ उसने क्योंकर छीन ली है?'

'?'- रोमिका ने सुना तो तुरंत ही गम्भीर हो गई. साथ ही बे-हद मायूस भी. उदास होकर वह बहुत चुप-सी आकाश में बदलियों के पीछे छिपते-निकलते चाँद को निहारने लगी. नितिन ने उसके बदले हुए स्वभाव और उदास चेहरे को देखा तो आगे बोला,

'परन्तु, इसमें यूँ मलाल करने की कोई बात नहीं होनी चाहिए. ऊपर वाले ने मनुष्य को जिस स्थिति और रूप के साथ इस धरती पर भेजा है, उसे उसको स्वीकार करना चाहिए. कभी-कभी, इंसान की कोई कमी भी उसकी सुन्दरता की विशेषता बन जाती है. मेरी इस बात की गूढ़ता को यूँ, समझ लो कि, जैसे चन्द्रमा में दाग, गुलाब के फूलों में काँटों का साथ, प्यार में खामोशी. इसी प्रकार तुम्हारे सौंदर्य के साथ, तुम्हारी बे-आवाज़ मुस्कराहट, खामोश बातें, बातें करने का एक अनोखा अंदाज़, प्यारे-प्यारे तुम्हारे इशारे मुझे तो बहुत अच्छे लगते हैं.'

'?'- इस पर रोमिका ने नितिन को फिर एक बार देखा. खुशी और रंज के समन्वय में. बेचारी, अपने होठों से तो कह ही क्या सकती थी. केवल अपने दिल के ज़ज़बातों को चेहरे की भावनाओं से ही स्पष्ट कर सकती थी. नितिन ने एक पल को उसे गम्भीरता से देखा. बहुत देर तक वह उसे खामोशी से निहारता रहा. फिर आगे बोला,

'ऐसा प्रतीत होने लगा है कि, रोमी, मेरा-तुम्हारा साथ जैसे बहुत पुराना है. मेरा मतलब, जन्म-जन्म का. कहने के बाद नितिन ने उसका नाम लिया,

'रोमी.'

'?'- खामोशी. रोमिका ने उसको निहारा तो नितिन ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया. कोमल, गोरा, प्यारी-प्यारी, पतली, लम्बी अंगुलियाँ- किसी कलाकार जैसी. वह उसकी हथेली को अपने हाथ में थामते हुए बोला. बहुत गम्भीरता के साथ,

'रोमी, मैं तुमको अपने साथ, अपने देश ले जाना चाहता हूँ. जीवन भर मैं तुम्हें हर सुख देने की भरसक प्रयत्न करता रहूंगा. मैं जानता हूँ कि, मेरे देश में, वहां पर ये पर्वत, ये गगन को चूमते हुए चिनार तो नहीं होंगे, परन्तु इन सबके स्थान पर हरे-भरे, लहलहाते हुए खेत होंगे. वहां की हवाएं जब भी तुम जैसी रूप-सुन्दरी को देखेंगी तो वे तुम्हें तुरंत ही अपने बदन में समेटने का प्रयास करेंगी. मेरे यहाँ के खेतों में अपार सौंदर्य होगा, छोटे-बड़े गाँवों का प्यारा माहोल होगा, मुस्कराता हुआ हर ऋतु का मौसम तुम्हारा स्वागत करने को तैयार रहेगा. बारिश की रिमझिम में सावन की बहारें होंगी. फिर उन बहारों में तुम्हारी अपूर्व उपस्थिति.? तुम अगर वहां आ जाओगी तो वहां की हरेक वस्तु मुस्करा उठेगी. फूल खिल उठेंगे. फिर, तुम्हारी खोई हुई आवाज़ को मैं अपनी आवाज़ दूंगा. तुम्हारी खामोशी में मैं अपने दिल की सारी तरंगों का प्यारा-प्यारा संगीत भर दूंगा. मैं तुम्हें अपने घर की बहू और अपनी दुल्हन बनाकर अपने घर ले जाऊंगा. '

'?'- अपने जीवन की इन ढेर सारी आस्थाओं के मुस्कराते दीप देख कर रोमिका ने अपना सिर बहुत खामोशी से नितिन के कंधे पर रख दिया और फिर तुरंत ही अपने भावी जीवन के सपनों में खो गई. खो गई इस प्रकार कि, ऐसी स्थिति में उसने सचमुच एक स्वप्न देखा - 'उसका एक छोटा सा घर है. उसका अपना. उस घर के आंगन में फूलों के छोटे-छोटे पौधे लगे हुए हैं. उन फूलों पर तितलियाँ भी मंडला रही हैं. उसके इस घर में वह है और उसका अपना नितिन. नितिन एक पौधे में पानी दे रहा है. संध्या का समय है. आकाश में लालिमा छाई हुई है. रोमिका बैठी हुई बहुत बे-ख्याली से सूर्य की इस अंतिम लालिमा के रंगों को निहार रही है. कल्पनाओं के संसार में खोई हुई वह एक हीओर देखे जा रही है कि तभी किसी ने पीछे से आकर उसकी दोनों आँखें बंद कर ली हैं. इस अप्रत्याशित अजनबी स्पर्श से वह अपने में ही सिहरती हुई सिमट कर रहजाती है. अपने कोमल हाथों से वह आँखें बंद करने वाले की मजबूत और सख्त

कलाइयों को छूती है. स्पर्श के द्वारा ही वह पहचानने का प्रयत्न करती है, कि तभी उसकी अचानक से एक सिसकी-सी निकल जाती है. नितिन ने उसको चिउँटी काटी थी. रोमिका आँखें खोलकर, मुस्कराती हुई उसे देखने लगती है.
'सो गई थीं क्या?' नितिन ने पूछा.
'- रोमिका ने हां में अपना सिर हिला दिया.'
'कहाँ चली गईं थीं, सोते हुए? नितिन बोला.
'- रोमिका ने अपना हाथ उसके सीने (तुम्हारे ख्यालों में) पर रख दिया.'
- नितिन समझते हुए मुस्करा दिया.

नितिन ने अपने हाथ की कलाई पर बंधी घड़ी में समय देखा तो अचानक ही चौंक गया. रात्रि के नौ बज रहे थे. प्यार के प्रथम मिलन के सिलसिले में समय भी बहुत शीघ्र ही समाप्त हो चुका था. कौसानी के इस इलाके में वैसे भी रात के नौ बजे के बाद घूमना मना था. कारण था कि, पहाडी इलाका था. रास्ते खराब होते हैं. खाइयां, गहरी-गहरी घाटियाँ- अगर ज़रा भी पैर फिसल गया तो कोई भी अनहोनी होते देर नहीं लगती है. इसके अतिरिक्त वातावरण का भी कोई ठिकाना नहीं. कभी भी बारिश हो जाती है. मौसम के बदलते देर भी नहीं लगती है. नितिन अपने स्थान से उठते हुए बोला,
'चलो, मैं तुम्हें घर तक छोड़ आऊँ.'
'?'- सुनकर रोमिका भी अपने स्थान से उठ गई.

दोनों, आपस में हाथ थामे हुए साथ-साथ चलने लगे. सारे रास्ते भर नितिन ही बातें करता रहा. रोमिका भी बीच-बीच में रूककर उससे इशारों में बातें करती थी, क्योंकि वह बोल नहीं सकती थी, इसलिए हर बात पर उसे नितिन की आँखों में झांकना और देखना पड़ता था. नितिन को रोमिका का इस प्रकार से इशारों से और अपने हाथ की अँगुलियों को चारो तरफ घुमाते-फिराते हुए बात करना बहुत प्यारा लगता था.

रोमिका के घर के बाहर आकर नितिन रुक गया. अपने जाने की इजाजत माँगी तो रोमिका ने उसके दोनों हाथ पकड़ लिए. फिर अपनी आँखों और हाथ के इशारों से उसने कल फिर से मिलने की अनुमति माँगी. नितिन ने उसको मिलने का विश्वास दिलाया. मगर तब भी रोमिका का उससे अलग होने को मन नहीं हुआ. उसने नितिन के दोनों हाथ फिर से पकड़ लिए. मगर नितिन को तो जाना ही था. अभी प्यार, इज़हार और इकरार की बहुत सारी बातें अधूरी थीं. सपने अधूरे थे. बातों से कहां दोनों का मन भरने वाला था. मिलने के लिए अभी दूसरा दिन भी था. आगे बहुत से दिन और भी थे. यूँ तो सारा जीवन था.

इसी आस-उम्मीद पर दोनों अलग हो लिए. नितिन अपने डाक बंगले की ओर चलने को हुआ तो जाने से पहले रोमिका ने उसके दोनों हाथों को चूम लिया. पहाड़ी चुम्बन- साफ़-सुथरा- सच्चे, पवित्र प्रेम का सूचक. देख कर नितिन का दिल खुशियों से भर गया.

नितिन जब डाक बंगले पहुंचा तो उसके सभी साथियों का सामान बंधा रखा था. सभी ने दुसरे दिन कौसानी से जाने की तैयारी कर रखी थी. यहाँ से उनकों नैनीताल जाना था. नितिन ने यह सब देखा तो उसे लगा कि जैसे पैरों से कहीं आसमान सरक गया है. ऐसे में उसे रोमिका का ख्याल आया. अपने प्यार की बातें याद आईं. प्यार के तूफानी बहाव में उसने ये तो सोचा ही नहीं था कि, एक दिन उसको यहाँ से वापस भी जाना है. उसके प्यार का तो अभी प्रथम चरण भी पूरा नहीं हुआ था- दिल उसका किस प्रकार कौसानी की हसीन वादियाँ और रोमिका को छोड़ने की अनुमति दे सकता था?

- शेष अगले अंक मे

दोहे -

ख़ाक में दुनिया जायेगी, खाक को मत छान,
ख़ाक में सब स्थिर हैं, मानव, दुनिया जहान.

दूसरों को त्याग कर, सच को बोलना सीख,
सच क्या दाम है, जाकर आयने से भी सीख.

रोना अपने-अपने चर्च का, अपना-अपना खर्च,
कागज़, कलम, विचार का, कोई न जाने खर्च.

- काका शिकोहाबादी

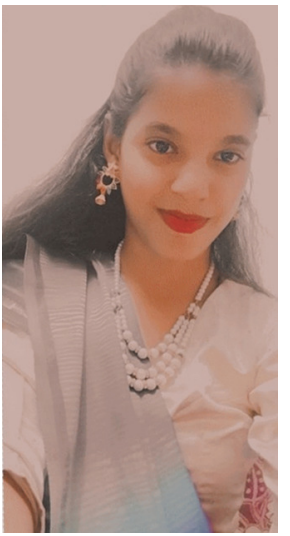

ISSN 1547-0776
2468101214
Rs. 50.00
$ 02.00